C-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangot

सम्पूर्ण शिव पुराण



CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

KRI-326

-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGang

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

ashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by e

॥ सत्यं शिवं सुन्दरम् ॥

शिव पुराण

(सरल हिन्दी भाषा में)



सम्पादक :—

मुकेश कुमार गर्ग

फोन नं० 5712767

मूल्य : २५ रु०



प्रो० मुकेश कुमार गर्ग

पूजा प्रकाशन

पुल कुतब रोड (सदर बाजार) दिल्ली-110006

सदर बाजार दिल्ली-6

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri



"श्री"

शिवपुराण महात्म्य

शौनकजी ने सूतजी से कहा—हे सूतजी ! आप सभी सिद्धान्तों के ज्ञाता महापण्डित हैं। सदाचार, भक्ति के द्वारा सज्जन पुरुष अपने विकारों को किस भांति नाश करते हैं तथा विवेक बुद्धि को कैसे बढ़ाते हैं सो मुझसे कहिये। इस घोर कलिकाल में सुरत्व समाप्त हो रहा है तथा असुरत्व वृद्धि पा रहा है इस का शोधन कैसे हो। आत्मा जिस साधन से पवित्र एवं शुद्ध हो चित्त की निर्मलता बढ़े तथा भगवान शिव की भक्ति बढ़े ऐसा साधन मुझे बतलाईये।

सूतजी बोले—हे मुनिवर ! आज मैं तुम्हारी प्रीति भक्ति कथा सुनने में जान कर

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

बुद्धि पूर्वक विचार करके सभी सिद्धान्तों से युक्त भक्ति को बढ़ाने वाला, कालरूपी महा-सर्प का विनाशक और भगवान शिव के द्वारा कहा गया शिवपुराण तुम्हें सुनाता हूं। यह पुराण परम श्रेष्ठ शास्त्र है। जिस प्राणी ने जन्म जन्मान्तर में श्रेष्ठ एवं पुण्य कर्म किये हैं वही प्राणी इस कथा को सुनने में प्रीति रख सकता है। इसके प्रेमपूर्वक श्रवण मनन से सभी कामनायें पूर्ण हो जाती हैं।

जो प्राणी अपना कल्याण चाहते हैं, उन्हें इस पुराण का श्रवण करते रहना चाहिये। इसके सुनने वालों एवं कीर्तन करने वालों की चरणरज भी तीर्थ स्वरूप है, क्योंकि इस श्रेष्ठ पुराण का श्रवण करने वाला भी साक्षात् स्वरूप ही है। इस पुराण का श्रवण करने से प्राणी सभी पापों से छूट जाता है तथा अनेक भोगों का उपभोग करके अन्त में

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

शिव लोक को चला जाता है। राजसूय यज्ञ या सौ वाजपेय यज्ञ करने से जिस पुराय की प्राप्ति होती है वह इस पुराण के श्रवण एवं मनन से मिल जाता है।

इसलिये नियम पूर्वक इस कथा का श्रवण करना चाहिये। जो सब समय इसे सुनने में समर्थ नहीं है तो नियम पूर्वक कुछ काल नित्य इसका श्रवण करना चाहिये। इतना भी न हो सके तो पवित्र महीनों में विशेष कर श्रावण में इसे अवश्य सुनना चाहिये। कलिकाल में मुक्ति प्राप्त करने का यह सर्वश्रेष्ठ साधन है। कलिकाल में जिन दुर्मेधी पुरुषों ने धर्म को छोड़ दिया है उनके लिए तो यह कथा अमृत के समान फलदायी है। जहाँ शिवपुराण की कथा होती है वह स्थान साक्षात् तीर्थ स्वरूप ही है। जो व्यक्ति इसका नित्य पाठ करता है या इसका श्रवण करता है उसके पुरायात्मा होने में क्या संदेह है।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

हे मुने ! अब मैं तुम्हें एक कथा सुनाता हूँ कि कैसे चंचुला नामक ब्राह्मणी ने अपने पति विन्दूग सहित सद्गति प्राप्त की थी। समुद्र के निकट एक देश में वाष्कल नामक एक ग्राम था वहां वेद धर्म से विमुख पापी प्राणी वास करते थे। बुरे व्यसनों में फंसे वे लोग खेती बाड़ी कर जीवन निर्वाह करते थे। ज्ञान-वैराग्य से शून्य पशु बुद्धि वाले तथा पर-स्त्री भोगी थे। सत् व्रत एवं आचार से रहित प्राणियों के उस गांव में विन्दूग नामक एक अधर्मी ब्राह्मण रहता था। वह अत्यन्त पापी और दुरात्मा था। उसने चंचुला नामक अपनी पत्नी को त्याग कर एक वेश्या को अपनी उप-पत्नी बना लिया था।

उसकी पत्नी चंचुला तरुणा थी। धर्म का भय होते भी काम पीड़ित हो पति व्रत धर्म का त्याग कर और पति की दृष्टि से छिपकर

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

कामवासना को शांत करने लगी। एक दिन

उस दुराचारिणी को उसके पति ने अपने यार के साथ सहवास करते देख लिया तथा क्रोध में भर कर उसे मारने दौड़ा। यार तो भाग गया लेकिन विन्दूग ने अपनी पत्नी को बहुत मारा तब उसकी पत्नी चंचुला बोली कि आप नित्यप्रति वैश्य गमन करते हो मेरा आपने त्याग कर दिया है फिर मैं नवयौवना काम से व्याकुल होकर पर-पुरुष गमन न करूँ तो क्या करूँ ?

सूतजी बोले—चंचुला के ऐसा कहने पर ब्राह्मणों में नीच तथा धर्म से हीन विन्दूग बोला—हे काम से व्याकुल चित्त वाली मेरी बात ध्यान से सुन, मैं तुझे यार के साथ रमण करने से नहीं रोकता लेकिन तू उसके साथ समागम कर उसे प्रसन्न कर तथा उससे बदले में धन ले ताकि उस धन से मैं वैश्या के यहाँ जा सकूँ। अपने पति की बात सुन चंचुला अत्यन्त प्रसन्न हो गई तथा वे दोनों कुकर्मी

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

निर्भय होकर कामाचार में लीन हो गये।
समय पाकर चंचुला के पति की मृत्यु हो गई
और वह वृषली पति घोर नरक में जा पड़ा।
बहुत काल तक नरक भोग कर वह मूढ़मति
भयंकर पिशाच बनकर विन्ध्याचल पर्वत पर
निवास करने लगा।

अपने दुराचारी पति की मृत्यु के पश्चात
काफी समय तक चंचुला अपनी सन्तान के
साथ उसी गृह में निवास करती रही तथा
उसका यौवन भी ढल गया। एक बार भाग्य-
वश अपने बान्धवों के साथ वह गोकर्ण क्षेत्र
में गई वहाँ तीर्थ में उसने स्नान किया तथा
वहां किसी ब्राह्मण के द्वारा कही जा रही
शिवपुराण की कथा को सुना। कथावाचक के
यह वचन सुनकर कि जो नारी यार के साथ
रमण करती है उसे यमदूत नरक में ले जाकर
उसके यौन स्थान में तप्त लोहे का मूसल
प्रविष्ट करते हैं, चंचुला भय से उद्विग्न होकर

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

कांपने लगी। जब सभी श्रोता वहां से चले गये तब उसने एकान्त जान कथावाचक से प्रश्न किया—हे ब्रह्मन् ! मुझ नरक सागर में गिरी हुई स्त्री की रक्षा कौन कर सकता है ? मैं क्या करूँ, कहाँ जाऊँ, मेरे घोर पापों का शोधन कैसे हो सकेगा। हे द्विज श्रेष्ठ ! आप ही मेरे गुरू एवं माता-पिता तथा भाई हैं कृपा करके आप मुझ अबला का उद्धार करिये।

ब्राह्मण बोला—तू बहुत भाग्यवती है जो तुझे यह ज्ञान हुआ है। भगवान शिव की तेरे ऊपर विशेष कृपा है कि तू शिवपुराण की कथा सुनकर वैराग्य को प्राप्त हो गई। हे विप्र पत्नी ! भय मत कर और भगवान् शिव की शरण ले, उनकी कृपा से तेरे सभी मनोरथ पूर्ण हो जायेंगे। विज्ञजनों ने
से सभी पापों का नाश होना
ताप से जिसके पापों का श ... कुछ
प्रायश्चित्त करना चाहिये। ... है वृषली

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

जैसी चित्त शुद्धि शिवपुराण की कथा सुनने से होती है वैसी अन्य उपायों से नहीं होती। इसलिए सभी को इस पुराण कथा का श्रवण-मनन करना चाहिये क्योंकि यह सभी वर्गों के लिए समान हितकारी है। इस कथा को सुनने से भगवान् शिव के ध्यान की सिद्धि ध्यान से ज्ञान की सिद्धि तथा ज्ञान से कैवल्य भाव की सिद्धि हो जाती है जोकि देवताओं को भी दुर्लभ है। भगवान शिव की इस कथा को सुनकर मनन करने तथा निदिध्यासन के द्वारा चित्त की शुद्धि हो जाती है और स्वच्छ चित्त से जो प्राणी उनके चरण कमलों का ध्यान करता है वह सहज में ही मोक्ष को प्राप्त हो जाता है।

ब्राह्मण के ऐसे वचन सुनकर चंचुला उस के चरणों में गिर पड़ी और शिवपुराण की कथा को सुनने का आग्रह करने लगी। शैवों

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

में श्रेष्ठ उस विप्र ने चंचुला को शिवपुराण

की पवित्र कथा सुनाई। यह कथा ज्ञान वैराग्य एवं भक्ति को बढ़ाने वाली थी इसलिए कथा श्रवण कर चंचुला कृतार्थ हो गई।

सूतजी बोले—हे मुनि श्रेष्ठ! एक बार चंचुला भगवती उमा के पास पहुंची और बोली—हे गिरजे! आप ब्रह्मा विष्णु आदि के द्वारा सेवित त्रिगुणमयी हो, आप ही स्थिति, सृष्टि और प्रलय करने वाली हो तथा ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश की सुप्रतिष्ठा करने वाली हो। इस प्रकार उन्हें स्तुतिपूर्वक प्रणाम कर प्रसन्न करने लगी। उसकी स्तुति से प्रसन्न हो स्कन्दमाता बोली—हे चंचुले! मैं तेरी स्तुति से प्रसन्न हूं तुझे जो कुछ मांगना हो, मांग ले।

सूतजी बोले—पार्वतीजी की बात सुनकर चंचुला हाथ जोड़कर बोली—हे भगवती! मेरा स्वामी अब कहां है, मैं उसके विषय में कुछ भी नहीं जानती। हे महादेवि! वह वृषली

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

पति था तथा मुझसे पहले ही मृत्यु को प्राप्त हो गया था। चंचुला की बात सुन पार्वतीजी बोलीं—हे पुत्री! तेरा पति घोर पापी एवं वैश्यागामी था मरने के पश्चात् वह नरक लोक को गया वहाँ अनेकानेक दुःखों को झेल कर विकराल पिशाच बना आज कल विन्ध्याचल पर्वत पर वास करता है। वायु भक्षण करता हुआ अनेक कष्टों को भोग रहा है।

पार्वतीजी की बात सुनकर चंचुला अपने पति के दुःख से बड़ी दुःखी हो गई तथा दुखित हृदय से पुनः मातेश्वरी से अपने पति के कष्टों के शमनार्थ प्रार्थना करने लगी। भक्तवत्सला पार्वतीजी बोलीं—हे विप्र पत्नि! यदि तेरा पति श्रेष्ठ शिव कथा को सुने तो पिशाचत्व से मुक्ति पाकर श्रेष्ठ गति को प्राप्त होगा। भगवती के वचनों को सुनकर चंचुला ने उनकी बारम्बार स्तुति की और अपने पति की मुक्ति के लिए प्रार्थना। पार्वतीजी चंचुला

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

की प्रार्थना से प्रसन्न होकर तुम्बरू नामक गन्धर्व को अपने समीप बुलाकर कहा—हे तुम्बरू ! तुम शिव भक्तों में श्रेष्ठ हो, मेरे वचन सुनो, मेरी प्रिय सखी चंचुला के साथ विन्ध्याचल पर्वत पर चले जाओ वहाँ एक अत्यन्त भयंकर पिशाच निवास करता है जो कि विन्दूग नाम का ब्राह्मण था तथा इस स्त्री का पति था। अपने कुकर्मों के कारण वह पिशाच बना है।

तुम वहाँ जाकर सम्पूर्ण पापों को नष्ट करने वाली शिवपुराण की कथा उस पिशाच को श्रवण कराओ ताकि वह पाप रहित होकर दुर्गति से मुक्ति पा ले। तब तुम मेरी आज्ञा से विमान पर बिठा कर उसको शिव के समीप ले आना। पार्वतीजी की आज्ञा पाकर तुम्बरू गन्धर्व चंचुला को साथ लेकर विन्ध्याचल पर गया, यह समाचार चारों ओर फैल गया तथा सभी दिशाओं से शिव भक्त वहाँ पवित्र कथा

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

को सुनने के निमित्त एकत्रित होने लगे। भक्तजनों के समूह के सम्मुख तुम्बरू ने पवित्र कथा को कहा, कथा श्रवण के फल के कारण वह भयंकर पिशाच पाप रहित हो अपने पिशाचत्व को त्याग सद्गति को प्राप्त हो गया तथा चन्द्रशेखर स्वरूप हो शिवलोक को चला गया।

शिवपुराण कथा श्रवण विधि

शौनकजी बोले—हे सूतजी! आप मुझे पवित्र शिवपुराण कथा श्रवण करने की विधि का उपदेश करिये। सूतजी बोले—हे मुनि श्रेष्ठ! सर्वप्रथम कथा प्रारम्भ करने के लिए ज्योतिषी को बुलाकर मुहूर्त निकलवाये, इसके पश्चात् देश-देश में समाचार भिजवाये कि अमुक स्थान पर अमुक दिन से पवित्र शिव कथा का प्रारम्भ हो रहा है। इस प्रकार नम्रता पूर्वक लोगों को आमन्त्रित करे। जहाँ कथा

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

का प्रारम्भ होने वाला हो उस स्थान को गाय के गोबर से लीपे अथवा अन्य प्रकार से स्वच्छ करे, व्यास के लिए ऊँचा आसन लगावे, फल पुष्पादि नैवेद्य अर्पण करे, भगवान शिव का भली प्रकार पूजन करे, मण्डप बनाकर ध्वजा पताका फहराये और सब प्रकार से आनन्द दायिनी पवित्र कथा को श्रवण करे।

पुराण के जानने वाले के प्रति शंका न रखे क्योंकि उसके कहे वचन देह धारियों के लिए कामधेनु के समान हैं। जन्म से मृत्यु तक अनेक गुरू होते हैं लेकिन शिवपुराण का ज्ञाता इन सभी से श्रेष्ठ गुरू कहा गया है। कथावाचक पवित्र-शाँत-साधु स्वभाव एवं दया-वान हो तथा पुराण कथा को सूर्योदय से पूर्व प्रारम्भ करके ढाई पहर तक कहे। सभी श्रोताओं को बैठने के लिये आसन दे। अनेक कर्मों से भ्राँत, कामादि छः विकारों से युक्त, चोर, पाखण्डी वक्ता या श्रोता पुण्य के भागी

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

नहीं होते। जो व्यक्ति कथावाचक को प्रणाम किये बिना कथा सुनते हैं, कथा को सुनते हुए बीच में ही उठ कर चले जाते हैं, निरोगी होकर भी लेटकर कथामृत का पान करते हैं। अहं भावना से ग्रसित होकर व्यास के बराबर बैठते हैं वे मनुष्य पुराय के भागी नहीं होते।

वक्ता को चाहिये कि सर्वप्रथम गणेशजी का पूजन करे ताकि कथा के बीच में कोई विघ्न उपस्थित न हो, नवग्रह एवं सर्वतोभद्र के देवों का विधि पूर्वक पूजन करके भगवान् शिव की पूजा करे, साक्षात् शिव स्वरूप पुराण पुस्तक की स्तुति करे—यह श्रीशिव पुराण साक्षात् शिव स्वरूप हैं सुनने के लिए सत्कार करने से मुझ पर प्रसन्न हों, मेरे मनोरथों को पूर्ण करें, यह कथा निर्विघ्न पूर्ण होने का वर दें। हे प्रलयकर ! मैं आपका सेवक हूँ, कर्म बन्धन से बंधा इस संसार सागर में पड़ा हूँ,

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

इस सागर से मुझे पार करिये। वक्ता की

व्यास रूप में पूजा करे–हे व्यास रूप ! हे ज्ञान दाता ! हे सम्पूर्ण शास्त्रों के जाननहारे ! आप इस कथा को कहकर मेरे अज्ञानान्धकार को समाप्त करिये।

शौनकजी बोले–हे सूतजी ! शिवपुराण कथा सुनने वालों के नियमों को मेरे प्रति कहिये। सूतजी ने कहा–हे शौनक ! श्रोता-गणों को चाहिये कि पुराण कथा के सम्पूर्ण होने तक सामर्थ्य के अनुसार व्रत का पालन करे और श्रद्धापूर्वक कथा सुने। दूध, घी, फलाहार अथवा एक समय हविष्यान्त का भोजन करे। जिस प्रकार वह सुख पूर्वक कथा सुन सके वैसा ही आहार ग्रहण करे।

कथा में भली प्रकार मन लग सके इसके लिये थोड़ा बहुत आहार अवश्य ले। उपवास करने के कारण कथा में भली प्रकार मन नहीं लग पाता और विघ्न पड़ता है। गरिष्ठ भोजन, बासी चीज, मसूर की दाल भी पुराण

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

कथा व्रती को सेवन नहीं करनी चाहिये। प्याज, लहसुन गाजर एवं मादक पदार्थ कथा व्रती को त्याज्य कहे गये हैं। बैंगन, मूली, पेठा आदि शाक मूल का सेवन भी नित्यप्रति कथा व्रती न करे। कामादि छः विकारों को त्याग दे, सत्पुरुषों, ब्राह्मणों एवं पतिव्रता की निन्दा न करे।

सत्य, शौच, दया, विनय, उदारता, मौनादि नियमों का नित्य ही पालन करे। निष्काम भावना से जो कथा श्रवण करता है वह मोक्ष को प्राप्त होता है तथा सकाम भाव से श्रवण करने वाला इच्छित फल पा लेता है। रोगी, दरिद्री, पापी, अभाग्यशाली, संतान-हीन व्यक्तियों सभी प्रकार की बन्ध्या स्त्रियों को अपने दुःखों के शमनार्थ कथा का श्रवण करना चाहिये। इस प्रकार विधि पूर्वक कथा सुनने से शिवपुराण फल प्रदाता बन मुक्ति एवं मुक्ति दोनों को ही प्रदान करता है।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

धर्म के महान क्षेत्र में प्रयाग नामक प्रदेश में जहाँ गंगा और कालिंदी मिली हैं, वहां सत्य-व्रती, ज्ञानी और महान भाग्यवान ऋषि [illegible] र्घ यज्ञ का अनुष्ठान करने लगे। यज्ञ की बात सुनकर व्यास जी के शिष्य ज्ञाताओं में सर्वश्रेष्ठ सूत जी वहां आए। सूत जी को वहां आया देखकर मुनिजन अति प्रसन्न हुए और प्रसन्न-चित से उनका विधिवत पूजन किया। फिर हाथ जोड़कर बोले—हे सर्वज्ञ! आपने व्यास जी से सम्पूर्ण पुराण विद्या का अर्थ सहित ज्ञान प्राप्त किया है। इसलिए आप आश्चर्य भूत कथाओं के उसी प्रकार पात्र हैं जिस प्रकार श्रे[illegible] रत्नों का स्थान समुद्र है। इस त्रैलोक्[illegible] भविष्य, वर्तमान में से कुछ भी [illegible] जो आप से छिपा हो। इस क[illegible]

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

पुण्यहीन मनुष्य ही प्रकट हुए हैं। सबकी प्रीति दुराचार, परनिन्दा करने में, पराये द्रव्य को हड़पने में हिंसा करने में तथा परनारी के संग में लगी हुई है। सब मनुष्य नास्तिक माता-पिता से वैर करने वाले और काम के किंकर हैं।

ब्राह्मण लोभी हैं, वेद के विकल्प से जीविका चलाते हैं। धन कमाने के लिए विद्या का अध्ययन करते हैं, त्रिकाल संध्या से रहित, दूसरों को ठगने वाले, ब्रह्म ज्ञान से रहित हैं। ऐसे ही क्षत्रियों ने भी अपना धर्म छोड़ दिया है। वे कुसंगति में पड़े हुए, शूद्रों से प्रीति रखने वाले, कायर, युद्ध में पीठ दिखाने वाले, गौ, ब्राह्मण का पालन न करने वाले, शरणागतों को दुत्कराने वाले तथा धन से हीन हैं। वैश्य भी संस्कार हीन, धर्म विमुख, कुमार्ग से धन कमाने में लगे हुए, लोभी एवं कंजूस हैं। ऐसे ही शूद्र भी अपने धर्म से विमुख हैं, ब्राह्मणों जैसा

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

आचार करने वाले, शालिग्राम की पूजा करके हवन करने वाले, कुटिल तथा ब्राह्मण द्वेषी, धर्म तथा उपासना का उपदेश करने वाले और धर्म को नष्ट करने वाले हैं।

स्त्रियां भी अपने स्वामी की आज्ञा पालन करने से विमुख, सास-श्वसुर से द्रोह करने वाली, कुत्सत स्वभाव वाली, काम विह्वला, रोग से ग्रसित देहवाली तथा अविद्या से घिरी हुई हैं। हे सूत जी! इन बुद्धि हीन, धर्म से विमुख मनुष्यों को इहलोक और परलोक में कौन-सी गति प्राप्त होगी। हमारा मन इसी कारण चिंताओं से सदा व्याकुल रहता है। जिन न्यून उपायों से इनका पाप शीघ्र मिट सके उन्हें परोपकार के निमित्त कहिए। ज्ञानमय आत्मा वाले उन मुनियों के ऐसे वचन सुनकर सूत जी ने मन में शिव जी का स्मरण किया और बोले–

हे महात्माओ! परोपकार की भावना से

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

आप लोगों ने उत्तम प्रश्न किया है। मैं गुरु देव का स्मरण कर वेदान्त के सार रूप शिव पुराण को कहता हूँ, यह सभी पापों का नष्ट करने वाला तथा परलोक में परमार्थ को प्रदान करने वाला है। हे विप्रो ! ब्रह्महत्या आदि के पाप, कलियुग के घोर उत्पात तभी तक टिक पाते हैं जब तक कि शिव पुराण का प्राकट्य नहीं होता। शिवजी का महान स्वरूप दुर्बोध दिखाई देता है, यमराज के क्रूर दूत निर्भय विच-रण करते हैं, सब मन्त्र विवादास्पद प्रतीत होते हैं, पृथ्वी पर सब देवता, तीर्थ, सिद्धान्त सम्पूर्ण पीठ आदि तभी तक विवाद करते हैं जब तक कि संसार में शिव पुराण का प्राकट्य नहीं होता। हे विप्रगण ! इस विश्व पुराण के श्रवण करने या कीर्तन करने से जिस फल की प्राप्ति हो सकती है उसका मैं वर्णन नहीं कर सकता। मुझे व्यास जी ने जो कुछ बतलाया था उसे मैं तुम्हारे प्रति कहता हूँ।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

हे मुनिवरो ! इस पुराण का एक भी श्लोक भक्तिपूर्वक जो श्रवण करता है। आलस्य त्याग कर प्रतिदिन भक्तिपूर्वक पाठ करता है वह जीवन मुक्त हो जाता है। जो इसका पूजन करते हैं वे अश्वमेघ के फल को पा लेते हैं। चतुर्दशी के दिन व्रत पूर्वक रात्रि में जो पुरुष इसे पढ़ते हैं वे कुरुक्षेत्र आदि अन्य स्थानों पर जाकर जो दान आदि का फल होता है उसे प्राप्त कर लेते हैं। दिन-रात जो व्यक्ति इसका निरन्तर पाठ करता है उसकी आज्ञा की प्रतीक्षा में इन्द्रादि देवता खड़े रहते हैं। इसकी रुद्र संहिता का सावधानीपूर्वक पाठ करने वाला (भैरव मूर्ति के समक्ष) अपने मनोरथों को पा लेता है। वट या बिल्व की प्रदक्षिणा करके जो कोई रुद्र संहिता का पाठ करता है वह ब्रह्महत्या के पाप से छूट जाता है इसकी कैलाश संहिता साक्षात् ब्रह्म-स्वरूपिणी है तथा ओंकार के अर्थ को प्रकाशित करने वाली है।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

हे विप्रो ! कैलाश संहिता के सम्पूर्ण महात्म्य को स्वयं शिवजी वर्णन कर सकते हैं। उससे आधे को व्यास जी और व्यास जी के आधे को मैं वर्णन कर सकता हूँ। हे मुनिवरो! जिस पाप का नाश रुद्र संहिता नहीं करती उसे कैलाश संहिता नष्ट कर डालती है। इसे शिव जी ने उपनिषद रूपी समुद्र से मथ कर निकाला है। इसके ज्ञानअमृत का पान करने पर जीव अमृत को प्राप्त होता है, ब्रह्महत्या के पाप से छूट जाता है। किसी शिवालय या विल्ब वृक्ष के समीप इसके पाठ करने वाले को अकथनीय फलों की प्राप्ति होती है। चतुर्दशी के दिन व्रत पूर्वक जो इस संहिता का पाठ करता है वह साक्षात शिव रूप होकर देवताओं द्वारा पूजा जाता है। इस पुराण को वेद सम्मत माना है। इसका निर्माण पूर्व काल में शिवजी ने स्वयं किया था। यह दिव्य शिव पुराण सात संहिताओं से युक्त, सर्वश्रेष्ठ गति देने वाला और ब्रह्मा के

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

समान है। इस पुराण की सातों संहिताओं का आदरपूर्वक पाठ करने वाला जीवन मुक्त हो जाता है। यह तीनों पापों को नष्ट करने वाला, मंगलदायक तथा मत्सरता से रहित है। इसमें छल रहीत धर्म का वर्णन किया गया है। इसे शिवजी ने कहा तथा जीवों के हितार्थ व्यास जी ने संग्रह किया।

सूत जी ने कहा—हे ऋषियो! प्राचीन काल में कल्प के बार-बार व्यतीत होने पर श्वेत वराह कल्प के होने तथा सृष्टि की उत्पत्ति होने के विषय में त्रिवेणी के समीप मुनियों में पारस्परिक विवाद चला, तब सब मुनिवर यह प्रश्न लेकर अविनाशी ब्रह्मा जी के पास गये। वहां जाकर सबने विनय युक्त वाणी में हाथ जोड़कर कहा—हे ब्रह्मा जी! तुम ही विश्व के विधाता और कारण के भी कारण हो, वह कौन है जो पुराण पुरुष तथा प्रकृति और महत्त से उत्पन्न हुए तत्वों से परे

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

हैं तथा जिसके निकट मन वाणी की पहुँच नहीं है। इस पर ब्रह्मा जी ने कहा कि जिसके प्राप्त न होने पर मन सहित वाणी भी निवृत हो जाती है, जिससे ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र भूतेन्द्रियों सहित प्रथम प्रकट होते हैं वही देव-महादेव सम्पूर्ण विश्व के अधिपति और सर्वज्ञ हैं। वे महादेव परम भक्ति से दिखलाई देते हैं, रुद्र, हरि, हर तथा अन्य देवगण भी जिनके दर्शन की इच्छा करते हैं उन शिवजी की भक्ति करने वाला जीव मोक्ष को प्राप्त हो जाता है। भक्ति से प्रासाद और प्रासाद से भक्ति की प्राप्ति उसी प्रकार होती है जैसे बीज से अंकुर और अंकुर से बीज की।

हे ब्राह्मणो! इसीलिए शिवजी को प्रसन्न करने के लिए हजार वर्ष वाले दीर्घ सत्र यज्ञ का अनुष्ठान करो, इससे वेदोक्त विद्या का सार एवं साधक के साध्य का ज्ञान प्राप्त हो जायेगा। इस पर मुनिवरों ने पूछा कि परम

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

साध्य क्या है ? साधक के क्या-क्या लक्षण हैं ? ब्रह्मा जी बोले—शिव पद की प्राप्ति साध्य और उनकी सेवा साधन है। अनेक प्रकार के साधन स्वयं शंकर भगवान ने कहे हैं। मन द्वारा मनन करे, शिवजी के गुणों का श्रवण कीर्तन करे यही महान साधक के लक्षण कहे गये हैं। इसमें श्रुति ही प्रमाण है। वेद में आत्मा को प्रथम देखकर सुनने को कहा है। प्रश्न उठता है कि देखे बिना कैसे सुने, इसका समाधान है कि देखकर ही पदार्थ में प्रवृत्ति होती है, परन्तु उसके सर्वत्र अप्रत्यक्ष होने से श्रवण करना ही उचित है। बुद्धिमान मनुष्य पहले गुरु मुख से उसे सुने फिर कीर्तन और मनन रूप साधन करे। क्रम पूर्वक जब मनन का साधन हो जाएगा तब शिवजी की सालोक्य आदि मुक्ति की प्राप्ति होगी।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

शिवरात्रि व्रत का फल

एक समय ब्रह्मा, विष्णु ने शिवजी के दाएं एवं बांये भाग में स्थित हो सकुटुम्ब देव को श्रेष्ठ आसन पर प्रतिष्ठित कराकर पुरुषों के योग्य पवित्र पदार्थों से उनकी पूजा की। भक्त वत्सल शंकर जी ने विनम्र ब्रह्मा और विष्णु से प्रसन्न होकर कहा—हे वत्स ! आज इस महा-दिवस में तुम्हारे पूजन और उत्सव से प्रसन्न हुआ हूँ। यह दिवस महा पवित्र होगा तथा यह तिथि हमारी परम प्रिय शिवरात्रि होगी। इस समय जो हमारे लिंग का पूजन करेगा वह पुरुष जगत् में स्थित सर्वादि कर्मों को करने में समर्थ होगा। निरन्तर एक वर्ष तक मेरा पूजन करने से जिस फल की प्राप्ति होती है वह फल केवल शिवरात्रि को निराहार रहकर पूजन करने से मिल जायेगा।

जैसे चन्द्रमा को देखकर समुद्र बढ़ता है

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

वैसे ही मेरी वृद्धि का यही समय है। स्तम्भ-रूप में मेरा आविर्भाव मार्गशीर्ष में आर्द्रा नक्षत्र को हुआ है अतः मार्गशीर्ष आर्द्रा नक्षत्र में जो पुरुष पार्वती सहित मेरे लिंग का दर्शन करता है वह मुझे कार्तिकेय से भी अधिक प्रिय है। उस दिन लिंग पूजन के फल का वर्णन वाणी नहीं कर सकती। मैं इस भूमि में लिंग देह सहित प्रकट हुआ हूं इस-लिए यह लिंग स्थान कहा जायेगा। यहां किया गया जप, तप, हवन साधारण से कोटि गुणा अधिक होगा। यह स्थान सबसे श्रेष्ठ तथा यहां मेरा स्मरण करने मात्र से प्राणी मुक्त हो जायेगा। यहां जो व्यक्ति लिंग में मुझ लिंगेश्वर की भावना रखकर पूजन करेगा वह सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य, सृष्टि तथा सायुज्य आदि मुक्ति का फल पायेगा।

ब्रह्मा और विष्णु ने कहा—हे प्रभो! सर्वादि पंच कृत्यों का लक्षण हमसे कहें।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri.

हमारा कृत्य और ज्ञान दुर्लभ है शिवजी ने कहा तो भी कृपा करके उसे मैं तुम्हारे प्रति कहता हूँ। सृष्टि, स्थिति, तिरोभाव संहार और अनुग्रह यह पांच जगत के कृत्य हैं, इन्हें नित्य सिद्ध समझो। सृष्टि के आरम्भ को सर्ग, उसकी वृद्धि को स्थिति, नष्ट होने को संहार तथा उद्धार को अनुग्रह कहते हैं। यही मेरे पंच कृत्य हैं। यह सर्गादि चार कृत्य सृष्टि कर्म में प्रविष्ट होते हैं तथा पांचवां कृत्य जो मुक्ति का कारण है मुझमें ही स्थित रहता है। पृथ्वी से सृष्टि जल में स्थिति, अग्नि में संहार, वायु में विरोभाव तथा आकाश में अनुग्रह है। इन्हीं पांच कृत्यों के कारण मेरे पांच मुख हैं, चारों दिशाओं में चार मुख तथा पांचवां मध्य में है। हे पुत्रो! आपने यह कृत्य तप के द्वारा प्राप्त किया है। इसी प्रकार दो कृत्य मैंने रुद्र और महेश को दिये हैं, किन्तु अनुग्रह कृत्य को प्राप्त करने

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

की सामर्थ्य किसी में भी नहीं है। पूर्व के कर्मों को तुमने समय पाकर भुला दिया लेकिन रुद्र और महेश उन कर्मों का विस्मरण नहीं कर सके। स्वरूप, वेश, कृत्य, आयुध आदि में हम सबको साम्यता थी। हे सौम्य ! मेरे ज्ञान से तुम विमुख हो गये इसलिये अज्ञान छा गया। अब तुम उस ज्ञान की प्राप्ति के लिये ओंकार नामक यन्त्र को जपो क्योंकि यह मन्त्र अभिमान को नष्ट करने में समर्थ तथा मेरे मुख से निकलने के कारण मेरे स्वरूप का बोधक है। यह मंत्र मेरी आत्मा है।

उत्तर दिशा वाले मुख से 'अकार' पश्चिम मुख से 'उकार' दक्षिण मुख से 'मकार' पूर्व मुख से बिन्दु तथा मध्य के मुख से नाद की उत्पत्ति हुई। इस प्रकार पांच मुखों से निकलकर यह एक होकर ओंकार हो गया। इस ओंकार से ही पूर्ण विश्व के बोधक प्रणव (ॐ) की उत्पत्ति हुई। अकारादि क्रम से अकार

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

से 'नकार' उकार से 'मकार' मकार से 'शि' बिन्दु से 'वा' तथा नाद से 'य' की उत्पत्ति हुई। इसी पंचाक्षर मत्र 'ॐ नमः शिवाय' से पांच भेद द्वारा मातृ का अकार से लृकार तक हुई, उससे शिवोम एवं चार मुखों से त्रिपदा गायत्री प्रकट हुई।

ऋषियों ने पूछा—लिंग की प्रतिष्ठा कैसे करें। किस देश काल में उनका कैसे पूजन करना चाहिये? सूत जी बोले—हे विप्रो! सुन्दर समय हो, पुण्य तीर्थ अथवा तट हो, जहाँ नित्य पूजन हो सके ऐसे स्थान में पूजन करना चाहिये। लिंग को किसी धातु या पार्थिव द्रव्य (मिट्टी) से निर्मित करें। चलमूर्ति छोटी तथा अचल मूर्ति विशाल बनावें। जिस धातु का लिंग हो उसी की पीठ बनायें। लिंग को द्वादश अंगुल का रखे, कम रहने से फल कम मिलेगा, अधिक से हानि नहीं है। फिर

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

सद्योजातादि मंत्रों द्वारा लिंग पूजन करें। पूर्वादि दिशाओं में पूजन कर अग्नि में अनेक प्रकार की आहुति दें। शिवजी का पूजन परिवार सहित करके गुरु और आचार्य का पूजन करे अर्थ तथा काम से बन्धुओं का सत्कार करे तथा गौ, बगीचा, गृह आदि का दान करें। यत्न पूर्वक मंत्रों का उच्चारण कर परम को ध्यान कर ओंकार नाद से शोधन कर महामंत्रों को बोलें।

विभिन्न सुख के अनुसार पंडितों ने शिव पूजा विधि कही है। नित्यप्रति लिंग का पंचोपचार अथवा षोडषोपचार पूजन करें तो क्रमपूर्वक शिव पद की प्राप्ति होती है। ऋषियों द्वारा स्थापित अथवा स्वयं प्रादुर्भूत हुए लिंग की उपचार तथा पूजन सामग्री निवेदन करने से जो फल मिलता है वह मात्र काशी में नमस्कार और प्रदक्षिणा करने से मिल जाता है।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

नियमपूर्वक शिवलिंग का दर्शन करने से शिव लोक मिलता है। गाय के गोबर और मिट्टी मिलाकर लिंग को यत्नपूर्वक बनाकर चाहे जहां भी पूजन कर सकता है। ओंकार का दोनों संध्याओं में हजार बार जप करने से भी शिव पद मिलता है। समाधि में आंशु और सर्वकाल मानसिक जप का विधान है। ओंकार की बजाए पंचाक्षर मंत्र का जप करे।

ब्राह्मण ॐ को पंचाक्षरी मंत्र में लगाना चाहिये। गुरु से दीक्षा लेकर मंत्र ग्रहण करे। ब्राह्मण नमः को पहले लगायें तथा अन्य वर्ण नमः को बाद में लगायें। इस मंत्र का पांच लाख जप करने पर शिव पद की प्राप्ति कही गई हैं।

ऋषियों ने कहा–हे सूत जी ! इस संसार में सर्वप्रथम यह व्रत किसने किया था तथा अज्ञानवश भी यह व्रत किया जाए तो इसके करने से क्या फल प्राप्त होगा। सूतजी बोले–

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

हे ऋषि गण ! इस सम्बन्ध में मैं आपको गुरुद्रुह नामक विषाद की कथा सुनाता हूँ। बहुत समय पहले गुरुद्रुह नामक विषाद अपने कुटुम्ब के साथ वन में रहा करता था। उसका यह नित्य का नियम था कि वन में शिकार करे और आते-जाते लोगों के धन को लूट ले। उसने अपने जीवन में कोई भी शुभ कार्य, नित्य नियम आदि नहीं किया था। ऐसे ही कर्म करते हुए उस दुरात्मा के दिन व्यतीत हो रहे थे। एक दफा महाशिव रात्रि का पावन दिन था लेकिन उसे इसका ज्ञान नहीं था। उस समय उसके माता-पिता, पत्नी तथा बच्चों ने उससे कहा कि हम बहुत भूखे हैं भोजन का प्रबन्ध करो। अपने परिवारजनों की यह बात सुनकर वह धनुष-बाण लेकर वन की ओर चला गया। वह वन में चारों ओर शिकार की खोज में घूमा फिरा लेकिन दैवयोग से उसे

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

उस दिन कोई आखेट के लिये मृगादि नहीं मिला। जब सूर्य अस्ताचलगामी हो गये तो उसे बहुत चिन्ता हुई, उसने मन में विचार किया कि अब क्या करूँ कहाँ जाऊँ। मेरे कुटुम्बी भूखे हैं, पत्नी तो गर्भ में भी है उसके लिए भोजन ले जाना तो अत्यन्त आवश्यक है। ऐसा विचार करके वह भील (निषाद) एक सरोवर के तट पर जा पहुँचा कि यहां तो अवश्य ही कोई न कोई जीव जल पीने आएगा तब मैं उसे मारकर घर लौट जाऊंगा।

उस सरोवर के तट पर एक बेल वृक्ष था, उसके नीचे लिंग स्थापित था। भील पानी लेकर उसी वृक्ष पर जा बैठा। जब रात्रि का प्रथम पहर बीता तो एक हिरणी उस सरोवर पर पानी पीने आई। भील ने हिरणी को देखकर अपना धनुष-बाण संभाला. जिससे कुछ जल और बेलपत्र टूटकर नीचे शिवलिंग

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

क ऊपर जा गिरे और अनजाने में ही उसके द्वारा प्रथम प्रहर का शिव पूजन हो गया। धनुष की आवाज से चौंक हिरणी ने निगाह उठाकर देखा कि व्याध शर संधान करके उसे मार देना चाहता है। वह मृगी भील से बोली हे व्याध! तुम्हारा क्या करने का विचार है? व्याध बोला—आज मेरा समस्त कुटुम्ब भूख से व्याकुल है मैं तुम्हें मारकर उनको भोजन दूंगा। मृगी ने सोचा कि प्राणों को बचाने के लिए कोई बात विचारनी चाहिए, वह बोली—यदि मेरे इस अनर्थ करने वाले शरीर से आपको सुख पहुँचे तो मेरे लिए यह पुण्य की बात होगी, इस लोक में पुण्य करने वाले प्राणियों की गाथा वाणी के वर्णन के वश की बात नहीं है। किन्तु मेरी एक प्रार्थना है कि मेरे बच्चे वहां अकेले हैं, मैं उन्हें अपनी भगिनी स्वामी को सौंपकर वापिस लौट आऊँगी तब जो आपकी इच्छा हो सो करना। मृगी

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

की ऐसी प्रार्थना सुनकर भी व्याध नहीं मा
तब हिरणी अत्यन्त भयभीत होकर दीन
में बोली कि हे वनचर ! मैं सपथपूर्वक क
हूँ कि मैं अपने वचन का पालन करूंगी ।
मैं अपने वचन का पालन नहीं करूंगी तो
पाप सन्ध्या न करने वाले ब्राह्मण, स्वामी
आज्ञा न मानने पर स्त्री को और शिव
सम्मुख छल करने वाले को लगता है उस
भगिनी बनूंगी । हिरणी की ऐसी बातें सुन
व्याध बोला कि मुझे विश्वास है तू चली ज
तब हिरणी प्रसन्न चित्त जल पीकर च
गई ।

रात्रि के दूसरे पहर में हिरणी की दू
बहन उसे ढूंढने उस सरोवर पर आई
उसे देखकर व्याध शर सन्धान करने लग
अब फिर हिलने से कुछ जल और बेल
शिवलिंग पर जा पड़े और अनजाने ही
पहर की पूजा की गई । आहट सुनकर हि

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

ाध से बोली कि यह आप क्या करने वाले
ं व्याध बोला कि मैं तुम्हें मारकर अपने परि-
ार की उदर पूर्ति करूंगा। व्याध की बात
ुनकर मृगी बोली कि आज मेरा शरीर धारण
रना सफल हो गया क्योंकि इस नाशवान
ारीर से आपका उपकार होगा, किन्तु एक
ोटी-सी प्रार्थना है कि मेरे बच्चे अकेले हैं।
ं तेरे वचन को नहीं मानता मैं तेरा अवश्य
ध करूंगा। इस पर मृगी विनम्र वचन बोली–
े व्याघ्र। यदि मैं वचन का पालन करके
ापिस न लौटूं तो जो पाप माता-पिता की
ेवा न करने, विवाहित होकर पराई स्त्री के
ाथ सम्भोग करने से तथा शिव की निन्दा
करने से लगता है मैं उसकी भागिनी बनूं।
ेरा समस्त पुण्य क्षय हो जाये। मृगी की
ऐसी शपथपूर्वक वाणी सुनकर व्याघ्र बोला कि
तू जल्दी चली जा। मृगी प्रसन्न होकर तथा
जलपान करके अपने घर को चली गई।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

मृगियों के वापिस आने में विलम्ब हो
देख, व्याघ्र चकित होता हुआ उनकी खो
करने का विचार करने लगा, उसी समय उ
एक मृग आता दिखाई पड़ा। उस पुष्ट शरी
वाले मृग को देखकर भील ने धनुष-बाण उ
लिया, अब फिर कुछ बेल-पत्र और पान
शिवलिंग पर आ पड़ा और तीसरे प्रहर क
पूजा भी भील द्वारा अनजाने में हो गई
धनुष की आहट को सुनकर मृग ने कहा-
भील ! यह तुम क्या कर रहे हो। व्याघ्र बोल
कि मैं अपने कुटुम्ब के पोषण के लिये ते
वध करना चाहता हूँ। व्याघ्र की बात सुनक
प्रसन्नचित्त हो मृग ने कहा-हे व्याघ्र ! मैं अ
भाग्यवान हूँ क्योंकि मेरी देह से आपका परि
वार तृप्त होगा, क्योंकि जिसकी देह से किस
का उपकार नहीं होता उसका जीवन व्यर्थ है
मेरी एक छोटी-सी प्रार्थना है कि मैं अप
बच्चों को उनकी माता के सुपुर्द कर आ

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

फिर निश्चय ही मैं आपके पास उपस्थित होऊंगा। मृग की ऐसी बात सुनकर भील बोला–हे मृग ! जो-जो भी जीव यहां से गये हैं वे सब तेरी भाँति वापिस लौटने का वचन देकर गये हैं किन्तु उनमें से एक भी नहीं लौटा। तू भी प्राण संकट में देखकर असत्य का आश्रय लेकर चला जाना चाहता है, तू ही बता, इस प्रकार मेरा जीवन कैसे चलेगा। हे व्याघ्र ! मैं कभी असत्य नहीं बोलता क्योंकि जिसकी वाणी असत्य का आश्रय लेती है उसके समस्त पुण्य नष्ट हो जाते हैं। सत्य के प्रबल प्रभाव से ही यह ब्रह्माण्ड स्थित है।

सन्ध्या के समय मैथुन करने से शिवरात्रि के दिन भोजन करने से तथा शिवार्चन न करने से जो महापातक होते हैं वे मुझे लगें यदि मैं अपने वचन का पालन न करूँ। मृग के वचन सुनकर भील ने कहा, चले जाओ, किन्तु शीघ्र लौटना। मृग ने जलपान किया

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

और सकुशल अपने घर पहुँच गया। वहां मृगी और मृग तीनों ने व्याध की बात एक दूसरे को कही और विचारपूर्वक बोले कि हम तीनों को उसके पास अवश्य चलना चाहिए। इस प्रकार सत्य के पालन हेतु उन्होंने अपने बच्चों को धीरज बांधकर चलने का निश्चय किया। बच्चों को पड़ोसियों को सौंपकर तीनों चल दिये। पीछे से बच्चे भी यह विचार कर चले कि हमारे माता-पिता की जो दशा होगी वही हम भी भोग लेंगे।

सरोवर की ओर सब मृगों को आते देखकर व्याध ने शरसन्धान के लिये धनुष उठाया तो फिर कुछ जल और पत्र नीचे लिंग पर गिर पड़े। इस प्रकार चतुर्थ प्रहार का पूजन भी सम्पन्न हो गया तथा शिवार्चन के प्रभाव से व्याध्र के समस्त पापों का क्षय हो गया। इसी समय सब मृग वहां पहुँचकर बोले कि हे व्याध श्रेष्ठ! हम आ गये हैं, अब आप

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

हमारे शरीरों को सार्थक करें। मृगों को आया देखकर उनके वचन सुनकर भील को बड़ा आश्चर्य हुआ, शिव पूजन के प्रभाव से उसे दुर्लभ ज्ञान मिल चुका था। उसने मन में विचार किया कि पशु योनि में उत्पन्न ये मृग धन्य हैं जो अपने नश्वर शरीर को दूसरों के उपकार के लिए समर्पित कर रहे हैं। और एक मैं हूँ जो कि मनुष्य होकर सदा दूसरों को पीड़ा पहुँचा-कर अपना तथा परिवार की नश्वर देहों को पालता रहा। मैंने सदा ही पाप कर्म किए हैं न जाने मेरी कैसी दुर्गति होगी।

इस तरह ज्ञान के उदय से सद्विचार वाले व्याध ने धनुष से बाण निकाल लिया और बोला-हे मृगवरो! तुम सत्यनिष्ठ और परमधन्य हो सब अपने स्थान को लौट जाओ। जब भील ने ऐसे वचन कहे तो भगवान शंकर बहुत प्रसन्न हुए और उसके सामने प्रकट होकर बोले—'हे भील! मैं तेरे

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

व्रत और अर्चन से प्रसन्न हूँ तू मनचाहा वर मांग ले। शिवजी के दर्शन करने से निषाद मुक्त हो गया तथा बोला--हे सर्वेश्वर ! मैंने सब कुछ पा लिया। शिवजी ने प्रसन्न होकर उसे दिव्य वर दिए तथा 'गुह' नाम देकर बोले--व्याघ्रर्षे ! तू श्रृंगवेरपुर में अपनी राजधानी बनाकर राज्य कर। त्रेता में भगवान राम तेरे घर पधारेंगे। मृग और मृगियों ने भी शिव के दर्शन किए और शिव लोक को चले गए तथा त्रेता में भगवान राम के दर्शन करके व्याध भी मुक्त हो गया। उस समय से अर्बुदाचल को मुक्त करने वाले शिव व्याधेश्वर नाम से स्थित हुए। भील ने तो अज्ञान में शिव का व्रत-पूजन किया था, जब उसे भुक्ति-मुक्ति मिली तो जो लोग भक्त हैं उन्हें शुभ गति प्राप्त हो जाए तो क्या आश्चर्य है।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

शिवरात्रि व्रत का उद्यापन

सूतजी बोले--हे ऋषिगण ! अब मैं शिवरात्रि व्रत के उद्यापन की विधि कहता हूँ। इस व्रत में त्रयोदशी को दिन में एक बार भोजन करके चतुर्दशी के दिन उपवास रखना चाहिए। शिव मन्दिर में जाकर उनका सविध अर्चन करना चाहिए फिर भगवान शम्भु के निकट दिव्य मण्डल (गौरी तिलक) की रचना करके मध्य में सुन्दर लिंग तो भद्र मण्डल को बनाना चाहिए या सर्वतोभद्र चक्र को यहां ही प्रजापत्य के नाम से वस्त्र, फल और दक्षिणा सहित शुभ घरों की स्थापना करे। यदि सामर्थ्य हो तो शिव पार्वती की स्वर्ण प्रतिमा अन्यथा दूसरी स्थापित करे। मण्डल के योग्य आचार्य का वरण करे। प्रत्येक पहर में जागरण के साथ शिवार्चन करे, फिर प्रातःकाल में शिवार्चन करके हवन करे। ब्राह्मण भोजन यथाशक्ति

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

कराए। वरण किये आचार्य को सपत्नीक वस्त्राभूषण तथा गौ का दान करे। इसके पश्चात् शिव प्रतिमा और पूजन सामग्री को आचार्य को दे दें। फिर हाथ जोड़ कर विनम्र वाणी में शिव से प्रार्थना करे—हे देवेश ! हे शरणागतवत्सल ! आप मेरे इस व्रत से प्रसन्न होइये। भक्ति-भावना का आश्रय लेकर मैंने यह व्रत किया है। हे शंकर ! यदि अज्ञानवश कुछ न्यूनता रह गई है तो वह पूर्णता को प्राप्त हो इस प्रकार विनम्र प्रार्थना करके शिव को पुष्प अर्पण करे। इस प्रकार किया गया यह व्रत भुक्ति-मुक्ति प्रदान करता है। इसमें कुछ भी असत्य नहीं है।

सदाचार, अग्नि यज्ञादि वर्णन

ऋषियों ने कहा—हे सूतजी ! आप हमारे प्रति सदाचार, यज्ञादि करें जिससे प्राणी लोक को जीतता है तथा कौन से कर्म स्वर्ग को देने

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

वाले या नरक दिलाने वाले हैं। सूतजी बोले—हे मुनीवरो ! सदाचार से युक्त विज्ञ वेदाचार वाला ब्राह्मण श्रेष्ठ है, राज्य सेवक ब्राह्मण क्षत्रिय ब्राह्मण, कृषि वाणिज्य करने वाला वैश्य ब्राह्मण कहलाता है। परद्रोही और परनिन्दक ब्राह्मण को चाण्डाल समझो। पृथ्वी का पालन करने वाला राजा तथा अन्य क्षत्रिय हैं। यह राजा और क्षत्रिय के भेद हैं। धान्यादि विक्रेता वैश्य तथा रत्नादि विक्रेता वणिक है। ब्राह्मण क्षत्रिय तथा वैश्य की सेवा करने वाला शूद्र है। ब्रह्म मुहूर्त में उठकर चारों वर्गों को पूर्वाभिमुख होकर ध्यान करना चाहिए।

रात्रि का अन्त उषाकाल है, उसमें आधे पहर की सन्धि कही गई है, उसी समय ब्राह्मण को उठकर शौचादि कर्म करने चाहियें। मल शुद्धि के लिए मिट्टी और जल का प्रयोग करे। दातुन के लिए किसी वृक्ष के काष्ट का प्रयोग करे। जल देवताओं के नमस्कार मन्त्रोच्चारण

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

पूर्वक स्नान करे, तर्पण करे, सर्व कर्म में उत्तरीय धारण करे, शरीर रोगग्रस्त हो, राजा या राष्ट्र का भय हो या मार्ग गमन अथवा अपवित्र वस्तु का स्पर्श हो जाए तो मात्र मन्त्र स्नान करे। त्रिकाल सन्ध्या करे। मुहूर्त से पहले की गई सन्ध्या व्यर्थ जाती है। असमर्थ अवस्था में सन्ध्या न करें। सन्ध्या न करने का प्रायश्चित यह है कि नित्य के जप से अधिक गायत्री जप करे। दस दिन तक सन्ध्या न करने पर एक लक्ष जप का विधान है। यदि मास तक सन्ध्या छूट जाय तो पुनः उपनयन संस्कार करे। सब देवताओं को एक ही जानकर अर्थ सिद्धि हेतु तृप्ति करे। ब्रह्म और जीव की एकता देखकर ओंकार को जपे, त्रिलोकी के रचयिता ब्रह्मा स्थितिकर्ता नारायण और संहार कर्ता रुद्र की हम उपासना करते हैं ऐसी भावना रखे। ज्ञानेन्द्रिय, कर्मेन्द्रिय, मन की वृत्ति को वह परमात्मा शुचित-

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

मुक्तिदायक धर्म में प्रवृति करें। इस प्रकार अर्थ विधि से ध्यान करने पर ब्रह्म की प्राप्ति होती है।

यज्ञ, प्रतिगृह, स्वच्छता, अदीनता तथा क्लेश रहित वृत्ति से ही ब्राह्मण धन संग्रह करे। क्षत्रिय भुजबल से, वैश्य कृषि और वाणिज्य से धन का संग्रह करे। ज्ञान की सिद्धि से मोक्ष, मोक्ष होने पर स्वरूप सिद्धि और उससे परमानन्द की प्राप्ति होती है। हे विप्रो! यह सभी सत्संग द्वारा प्राप्त हो सकता है। गृहस्थ को धन-धान्य अनेक पदार्थ दान करना कर्तव्य है। दान गृहण करने वाला तप से या दान से उसके पाप का मार्जन करे अन्यथा घोर नरक की प्राप्ति होती है। अपने धन के तीन भाग करे। एक धर्म के लिए, दूसरा वृद्धि के लिए तीसरा भोग के लिए। निषिद्ध व्यापार से धन की वृद्धि न करे। कृषि कर्म के द्वारा उपार्जित धन का दशांश पाप शुद्धि के लिए दान कर दे।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

बुद्धिमान को छटा अंश वाणिज्य बुद्धि में लगाना चाहिए। याचक को यथाशक्ति दान दे, कहकर न देने पर जन्मान्तर में ऋणी होना पड़ता है। प्राणियों को क्रुद्ध करने वाली बात न कहे। दोनों संध्याओं में अग्नि होत्र करे। यदि हव्य न हो तो मात्र हवन ही करे। केवल जप करे या सूर्य की वन्दना करे। इस प्रकार आत्म प्राप्ति के इच्छुक, सर्वदा ब्रह्म यज्ञ करने वाले गुरु ब्राह्मण की पूजा करने वाले को स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

हे विप्रो! अग्नि में द्रव्य का हवन होना द्रव्य यज्ञ है। जब तक विवाह न हो तो विशेष अग्नि होत्र करे। विवाह होने पर दो समय करे। अग्नि को वेदी या बरतन में रखना चाहिए। सायं-काल दी जाने वाली आहूति सम्पत्तिदायक तथा प्रातःकालीन आयु की वृद्धि कराने वाली कही गई है। दिन में इन्द्रादि देवताओं के लिए अग्नि में हवन किया जाता

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

है। ब्राह्मणों को देवताओं की प्रीति के लिए सदा ब्रह्म यज्ञ करते रहना चाहिए। रविवार के स्वामी शिव, चन्द्रवार की दुर्गा, मंगल के स्कन्द, बुद्ध के विष्णु, बृहस्पति के यम, शुक्र के ब्रह्मा और शनिवार के इन्द्र हैं। नक्षत्र में और चक्रमें प्रतिष्ठित इन वारों को स्वामियों की कल्पना कर उन-उन वारों में पूजन करे तो उसके अनुसार ही फल प्राप्त होता है। जिन-जिन देवताओं के वार हैं वे उनकी प्रीति देने वाले हैं। नेत्र रोग, सिर राग तथा कुष्ठ रोग निवारणार्थ सूर्य की पूजा कर ब्राह्मण भोजन करावे। रविवार के दिन पाप शक्ति के निमित देवताओं का पूजन तथा उनका प्रिय द्रव्य निवेद करना चाहिए। स्त्रियों की तृप्ति तथा अपमृत्यु के शमन के लिए शनिवार को रुद्रादि का भजन करे। मंगल कार्य के आदि अन्त में एवं जन्म नक्षत्र में गृहस्थों को आरोग्यादि की प्राप्ति के लिए ग्रहों की शान्ति करनी चाहिए। दरिद्र

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

व्यक्तियों को तप से देवताओं का भजन करना चाहिए। धनिकों को पूजन करना श्रेयस्कर रहता है।

सूत जी बोले—हे विप्रो ! अब पूजा के लिए देश काल पात्रादि का वर्णन सुनिए। देवज्ञादि कर्म में शुद्ध गृह फलदायक है। गो स्थान में दस गुना पीपल, विल्व, तुलसी आदि वृक्षों के नीचे, उससे दस गुना सप्त गंगा के किनारे, उससे दस गुणा पर्वताग्र में और इससे दस गुणा फल चन्द्र सूर्य ग्रहण में प्राप्त होता है। ग्रहण काल का समय रोग प्रदायक माना गया है, इसलिए इसका विष शान्त करने के लिए दानादि करे। तपोनिष्ठ एवं ज्ञान में निष्ठा वाले योगी और यति पूजनीय हैं, इनकी सेवा से पापों का क्षय होता है। जिस ब्राह्मणों ने गायत्री का चौबीस लाख जप किया है वह सत्कार करने योग्य है। गायत्री के जप से शुद्ध हुआ ब्राह्मण ही पवित्र है, इसलिए दान, जप,

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

हवन, पूजन आदि सभी कार्यों का वह पात्र है। जो स्वयं पवित्र है वही अपवित्रता से दूसरों की रक्षा कर सकता है। भूखा चाहे वह स्त्री हो या पुरुष अन्नदान देने का अधिकारी है।

शिव नाम महात्म्य

ऋषियों ने कहा—हे व्यास शिष्य, सूतजी! आप हमें शिव नाम महात्म्य, रुद्राक्ष महात्म्य तथा भस्म धारण महात्म्य बतलाइये। सूत जी बोले—मुनिवरो! आप धन्य हैं, पवित्र कुल के भूषण हैं। जिनके लिये विश्व में शिवजी ही परम देव हैं उन्हें शिव कथा अत्यन्त प्रिय लगती है। वे भक्त धन्य तथा कृतार्थ हैं, उनका देह धारण करना फलयुक्त है तथा अपने कुल का उद्धार कर लिया है। जिन्होंने शिवो-पासना की है। जिनके मुख में सदैव शिवनाम रहता है उसे पाप उसी प्रकार स्पर्श नहीं कर सकते जिस प्रकार खर अंगार को स्पर्श नहीं

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

कर सकता। भगवान ! शंकर को नमस्का
है। जो मनुष्य इस प्रकार कहता है। उसक
मुख सब पापों को नष्ट करने वाला है। विप्रो
यह मंगलमय प्राणी जहां-जहां स्थित होता है उ
स्थान के दर्शन मात्र से ही वेणी के स्नान क
फल प्राप्त होता है। जिस मनुष्य के मुख
शिवनाम मस्तक पर विभूति तिलक नहीं तथ
गले में रुद्राक्ष नहीं उसे अधम के समान त्या
देना चाहिए। शिवजी का नाम, गंगा, यमुन
'विभूति और रुद्राक्ष', यह सब पाप की नाश
सरस्वती कही गई है।

हे विप्रो ! 'शिव' नाम ही पाप स्वरू
महापर्वतों को भस्म करने वाला दावाग्नि है
पाप से उत्पन्न होने वाले अनेक दुःख हैं
सब केवल एक शिव नामोच्चारण से नष्ट ह
जाते हैं। जो मनुष्य इस पृथ्वी पर शिव ना
का जप करता है वह पुण्यात्मा एवं पण्डि

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

है। शिव नाम से मनुष्य पवित्र हो

है। तथा शीघ्र फल देने वाले अनेक कर्म प्रकट हो जाते हैं। शिव नाम का उच्चारण करते ही ब्रह्म इत्यादि पापों के बड़े ढेर समूल नष्ट हो जाते हैं। पाप स्वरूप दावाग्नि से दग्ध पुरुष को शिव नाम का अमृत पीना चाहिए। जिन महात्माओं को शिव नाम की महाशक्ति प्राप्त हो चुकी है, उनकी मुक्ति तत्काल हो जाती है। हे महामुने! संसार के मूलरूप समस्त पापों का शिव नाम रूपी कुठार से समूल नाश हो जाता है। जैसे वन में प्रकट दावानल से सब वृक्ष भस्म हो जाते हैं? वैसे ही शिव नाम से सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं? शिव नाम ही परम जप तथा संसार सागर से तरने का उपाय है। पापों का हरण करने में शिवजी की शक्ति महापाप नाशनी कही है जितना इसका प्रभाव है उतने पाप तो मनुष्य कर भी नहीं सकता।

सूतजी बोले—सम्पूर्ण मंगलों को प्रदान

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

करने वाली भस्म के दो प्रकार कहे गए हैं। एक प्रकार की महाभस्म तथा दूसरे प्रकार की स्वल्प बताई गई है। महाभस्म के तीन भेद हैं; श्रोत, स्मार्त और लौकिक। स्वल्प भस्म अनेक प्रकार की होती है। ब्राह्मण के लिये श्रोत और स्मार्त भस्म का विधान है। अन्य व्यक्तियों के लिये लौकिक भस्म का विधान कहा गया है। ब्राह्मणों को मन्त्रों द्वारा भस्म धारण तथा अन्यों को बिना मन्त्र भस्म धारण करना चाहिये। गोबर से निर्मित भस्म आग्नेय होती है तथा त्रिपुण्ड के लिये यह प्रशस्त है। विद्वानों के लिए अग्निहोत्र की भस्म धारण करनी चाहिए। जाबाल उपनिषद् में कहे गये अग्निरित्यादि मंत्रों से भस्म को जल में मिलाकर सात बार शरीर पर धारण करे। जाबाल ने आश्रमों तथा वर्णों को आदरपूर्वक मन्त्रों के त्रिपुण्ड धारण करने को कहा है। श्रुति के अनुसार शरीर में भस्म लगाना और

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

त्रिपुण्ड धारण करना अति आवश्यक कर्म है। ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य, शूद्र तथा उपभ्रंशों को भी भस्म त्रिपुण्ड धारण करना चाहिए। जो लोक में रहकर भस्म त्रिपुण्ड रहित होता है वह जन्मों में संसार से मुक्त नहीं हो पाता।

शास्त्र का निर्णय है कि शरीर पर भस्म न लगाने वाले तथा त्रिपुण्ड न धारण करने वाले मनुष्य अत्यन्त पापी हैं। हे मुने! जो ज्ञानी पुरुष 'शिवाग्नि' से 'त्र्यायुषति' मन्त्र से भस्म धारण करता है वह भस्म का स्पर्श होते ही सम्पूर्ण पापों से मुक्त हो जाता है। जो मनुष्य तीनों सन्ध्याओं में श्वेत भस्म से त्रिपुण्ड धारण करता है वह सम्पूर्ण पापों से छूटकर शिवसंग प्राप्त कर लेता। भस्म धारण किये बिना षडाक्षर मन्त्र का जप करना वर्जित है। त्रिपुण्ड धारण करने वाला देवताओं और दैत्यों से भी पूजित होता है। यदि वह पापी भी है तो शुद्ध आत्मा वाला बन जाता है।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

अधिक कथन से क्या ? विद्वजनों को सदैव ही भस्म धारण, लिंग पूजन और षडाक्षर मन्त्र का जप करना श्रेयस्कर है। ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, मुनि तथा देवता भीभस्म धारण के महात्म्य को नहीं बखान सकते ! मस्तक, हृदय, भुजाएं तथा नाभि–इन पांच स्थानों से भस्म धारण 'नमः शिवाय' मन्त्र से करे। यह त्रिपुण्ड तीन क्षेत्र, तीनों गुणों का आधार और तीनों वेदों को प्रकट करने वाला होता है।

सूतजी ने कहा–हे शौनक ! अब साक्षात् शिवस्वरूप रुद्राक्ष का महात्म्य कहता हूँ। रुद्राक्ष अत्यन्त पवित्र शिवजी को प्रिय है; दर्शन, स्पर्श तथा जप से सम्पूर्ण पापों का नाशक है। प्रथम भगवान शिव ने लोकोपकार के निमित्त भगवती को रुद्राक्ष की महिमा बतलाई थी। रुद्राक्ष के चार भेद–श्वेत, रक्त, पीत तथा कृष्ण कहे गये हैं। अपनी वर्णावस्था के अनुसार वर्ण का रुद्राक्ष धारण करना चाहिए हे माहेश्वरी ! आवले के

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

फल के समान रुद्राक्ष श्रेष्ठ, बदरी फल के समान मध्यम तथा चणक के प्रमाण वाला अधम होता है। बेर प्रमाण का रुद्राक्ष भी सुख सौभाग्यदाता होता है। धात्री फल के समान रुद्राक्ष समस्त अरिष्टों का शमन कर देता है। चौंटली के प्रमाण का रुद्राक्ष सर्वार्थ साधक होता है। रुद्राक्ष जितना छोटा होगा उतना श्रेष्ठ है। सम्पूर्ण अर्थों की सिद्धि के लिये इसे धारण करना चाहिए। संसार में रुद्राक्ष की माला जितनी फलदायक है इतनी अन्य कोई नहीं। सम, स्निग्ध, दृढ़, स्थूल, कांटों वाले शुभ रुद्राक्ष, कामनाप्रद तथा मुक्ति प्रदायक हैं।

कृमियों से खाये हुए, छिन्न, भिन्न, कांटे तथा गोलाई रहित तथा व्रणयुक्त रुद्राक्ष त्याज्य हैं। जिस रुद्राक्ष में स्वयं छेद हो वह उत्तम तथा जिसमें छेद किया गया हो वह मध्यम है। सौ रुद्राक्ष धारण करने वाला रुद्रस्वरूप हो जाता है। साढ़े पांच सौ रुद्राक्ष धारण करने

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

वाला पुरुष होता है। तीन सौ साठ रुद्राक्षों की तीन लड़ी बनाकर धारण करना चाहिए शिखा में तीन, कानों में छः-छः, कण्ठ में एक सौ एक, बांहों में ग्यारह-ग्यारह तथा कूर्पर और मणिबन्ध में भी इतने ही, यज्ञोपवीत में तीन, कटि में पांच रुद्राक्ष धारण करने वाले का स्वरूप शिवजी के समान होता है। इस प्रकार ध्यान में स्थित आसन पर बैठे मनुष्य जो शिव नाम का उच्चारण करता हो, 'के दर्शन से प्राणी मुक्त हो जाता है। यह ग्यारह सौ रुद्राक्ष धारण विधि है। दूसरी विधि यह है कि शिखा में एक, शिर में तीस, कण्ठ में पचास, दोनों भुजाओं में सोलह-सोलह, मणि-बन्ध में बारह, स्कन्ध में पांच सौ तथा एक सौ तथा एक सौ आठ का यज्ञोपवीत धारण करे। इस प्रकार हजार रुद्राक्ष धारण करने वाला रुद्र के समान हो जाता है। उसे देवत भी नमस्कार करते हैं।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

शिखा में एक, मस्तक में चालीस, कण्ठ में बत्तीस, गले में एक सौ आठ, दोनों कानों में छः-छः, भुजाओं में सोलह-सोलह तथा हाथ में बारह रुद्राक्ष धारण करने वाले भी पूजनीय हैं। ईशान मन्त्र से शिर में, तत्पुरुष मन्त्र से कानों में, अघोर मन्त्र से कण्ठ में और हृदय पर, हाथों में अघोर बीजमन्त्र से, उदर पर वामदेव मन्त्र से अथवा मूलमन्त्र से सभी रुद्राक्षों को धारण करे। अभक्ष्य पदार्थों को त्याग दे। ब्राह्मण को श्वेत, क्षत्रिय को रक्त, वैश्यों को पीत तथा शूद्रों को कृष्णवर्णी रुद्राक्ष धारण करना श्रेयकर रहता है। सभी को रुद्राक्ष धारण करना पुण्यप्रद है। यतियों को प्रणव मन्त्र से रुद्राक्ष धारण करना चाहिये। त्रिपुण्डधारी, जटाधारी तथा रुद्राक्षधारी पुरुष यमलोक को नहीं जाते।

जो महात्मा रुद्राक्ष धारण करता है त्रिपुण्डधारी है तथा पंचाक्षर मन्त्र को जपता

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

है वह पूजनीय है। यम का आदेश है जिन्होंने विपुराड रुद्राक्ष धारण नहीं कर रखा तथा पंचाक्षर मन्त्र का जप नहीं करता उसे यमलोक अवश्य लाओ। रुद्राक्ष शिवजी के समान पापों का नाशक है। रुद्राक्ष की माला से मन्त्र जपने से कोटि गुणा पुराय मिलता है। अकाल मृत्यु नहीं होती स्वस्थ बना रहता है। जिसके शरीर पर त्रिपुराड सहित रुद्राक्ष है तथा मृत्युञ्जय का जप करता है उसके दर्शन से रुद्र के दर्शन का फल मिलता है। रुद्राक्ष की माला धारण करने वाले को देखकर भूत, प्रेत, पिशाच, डाकिनी, शाकिनी एवं कृत्रिम अभि-चारादि भी दूर से ही भाग जाते हैं। हे मुनियो ! यह विद्येश्वर संहिता शिवजी की आज्ञा से सिद्धि और मुक्ति देने वाली है।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

३

सूतजी ने कहा—हे ब्राह्मणो ! एक समय की बात है ब्रह्माजी के पुत्र नारद ने तप करने की इच्छा वयक्त की। हिमालय पर्वत पर एक गुफा में जिसके पास पाप नाशनी गंगा तीव्र गति से बहती है पर नारदजी ने तप करने का निश्चय किया। यहां काफी दिनों तक मुनि शार्दूल ने तप करके 'अहं ब्रह्मसि' रूप ज्ञान का साक्षातकार किया था। नारदजी के तप को देखकर देवराज इन्द्र मन में कम्पित होता हुआ विचारने लगा कि यह मेरे राज्य की कामना के लिए जप, तप हो रहा है। देवराज ने कामदेव का आह्वान किया तथा उसके उपस्थित होने पर कुटिल बुद्धि इन्द्र ने उसे कहा—हे मित्र ! हिमालय की गुफा में नारद जी तप में लीन हैं, मुझे शंका है कि

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

ब्रह्मा जी से मेरा राज्य न मांग ले, अतः मित्र अब तुम ही मेरे राज्य को बचा सकते हो। वहां जाकर उनकी तपस्या में विघ्न डालो। इन्द्र की बात सुनकर कामदेव नारदजी के निकट पहुँचा तथा अपनी अनेक कलाओं को प्रकट करके भी असफल रहा।

मुनीवरो! नारदजी के मन में कोई विकार नहीं आया तथा शिवजी के अनुग्रह से इन्द्र का अभिमान चूर हो गया। इसका कारण था कभी इसी स्थान पर शिवजी ने घोर तप किया था तथा तप में विघ्न पैदा करने के प्रयत्न में रत कामदेव को भस्म कर दिया था। देवताओं की प्रार्थना पर कामदेव तो कालान्तर में शिव जी द्वारा पुनर्जीवित हो गया किन्तु उसको शाप दे दिया था कि यहां तप करने वाले पर तेरा कोई प्रभाव नहीं होगा। इन्द्र कामदेव की असफलता से विस्मित हुए तथा नारदजी की प्रशंसा करने लगे। इधर शिव माया के वशी-

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

भूत हो मुनि नारद को यह अहं हो गया कि शिव की भांति मैं भी कामजीत हूँ।

हे मुनिवरो! शंकर जी की माया विचित्र है, उसकी गति को ब्रह्मा, विष्णु तक नहीं जान सके, तब नारदजी क्या जान सकते थे? उस माया से मोहित होकर वे कैलाश पर्वत पर पहुंचे तथा वहां शिवजी को अहंकारपूर्वक सब वृत्तांन सुनाना। उनकी बात सुनकर भक्तवत्सल शिवजी बोले—हे नारदजी तुम धन्य हो, किन्तु जो बात मुझसे कही है वह विष्णु जी से मत कहना शिवजी ने उन्हें अनेक प्रकार से समझाया किन्तु नारदजी ने इन बातों को अपने हित में नहीं जाना। कर्म की गति का ज्ञान चतुर पुरुषों को ही होता है। नारदजी ब्रह्मलोक को गए तथा ब्रह्मा जी को अपने तपोबल से कामदेव को पराजित करने का वृत्तांत सुनाया। ब्रह्मा जी ने भी उन्हें समझाया तथा किसी के कहने का निषेध किया। शिवजी की जैसी

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

इच्छा होती है संसार में वैसी ही होता है। नारदजी की बुद्धि नष्ट होने से उनमें काम विजय का अहंकार भर गया था वे विष्णु लोक जा पहुँचे। भगवान विष्णु नारदजी को आता देख सिंहासन छोड़ उठ खड़े हुए, वे नारदजी के आगमन का कारण जानते थे। विष्णु बोले—हे नारदजी ! आप यहां किस कारण और कहां से पधारे हैं, आप धन्य हैं, मैं आपके आगमन से पवित्र हो गया हूँ। भगवान के ऐसे वचन सुनकर नारद जी ने और भी अहं से भर कर अपना काम को जीतने का वृत्तांत कह सुनाया।

नारदजी के अभिमान युक्त वचन सुनकर शिवात्मा विष्णु जी ने देवाधिदेव महादेव के चरणकमलों का ध्यान कर स्तुतिपूर्वक कहा कि हे देव ! आप धन्य हैं। सबको मोह लेने वाली आपकी माया धन्य है। शिवजी की जो इच्छा है उसे जानते हुए विश्वपालक विष्णु नारदजी

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

से बोले—हे तपोनिष्ठ जिनके हृदय में त्रिदेवों की भक्ति नहीं उन्हें ही कामादि विकार सताया करते हैं। आप तो ज्ञान से सम्पन्न नेष्ठिक ब्रह्मचारी हैं, आप तो जन्म से विकार रहित हैं। भगवान विष्णु के ऐसे वचन सुनकर नारदजी उन्हें प्रणाम करके बोले कि आपकी जब तक मुझ पर कृपा है तक तक कामादि विकार मुझे कैसे सता सकते हैं और यह कह-कर स्व-स्थान को चले गये।

नारदजी के जाने के पश्चात् भगवान ने अपनी माया को प्रेरित करके मुनि के मार्ग में एक अत्यन्त मनोहर नगर बसाया। अपने लोक से भी मनोहर, अनेक वस्तुओं से सुशो-भित तथा नर-नारियों के विहार से युक्त। वहाँ के राजा का नाम शीलनिधि था तथा अपनी सुन्दर कन्या का स्वयंवर करना चाहता था। स्वयंवर में अनेक राजे कन्या का वरण करने के लिए आये हुए थे। उस नगर को देखकर

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

नारजी का मन मोहित हो गया तथा काममद से युक्त वे नगर प्रवेश कर गए। नारद जी को आया देख राजा शीलनिधि ने रत्न जड़ित सिंहासन पा उन्हें बिठाकर पूजन किया। राजा शीलनिधि ने अपनी कन्या श्रीमती को मुनि श्रेष्ठ को दिखाकर पूछा—मुनिवर! यह मेरी कन्या है, मैं इसका स्वयंवर रचा रहा हूँ। आप इसके भाग्य को बतलाइये यह कैसा वर प्राप्त करेगी।

राजा के वचन सुनकर तथा श्रीमती के रूप को देखकर नारद जी काम से व्याकुल होकर बोले—हे राजन! तुम्हारी यह कन्या अति भाग्यशाली है, इसका पति सर्वेश्वर, अजय, शिवजी के समान कामदेव का विजेता तथा देवताओं में श्रेष्ठ होगा। यह कहकर नारद जी चल दिए तथा शिव की माया में पड़कर काम के वशी भूत हो उस कन्या की

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

प्राप्ति का उपाय विचारने लगे। कितने राजे

यहां आये हैं, स्त्रियां प्रायः सुन्दरता का वरन करती हैं, मेरे रूप को देखकर तो वह मेरा वरण करेगी नहीं। ऐसे विचारों में पड़े नारदजी को एक उपाय सूझा। क्यों न विष्णु जी से उनका रूप मांग लिया जाये, फिर कार्य आसान हो जाएगा।

विष्णु लोक पहुँचकर नारदजी ने भगवान से कहा कि एकान्त में कुछ कहना चाहता हूँ। भगवान सब जानते थे, इसलिए एकान्त में पूछा कि क्या बात है कहिए। नारद जी ने कहा—राजा शीलनिधि की कन्या श्रीमती वर ग्रहण करने की कामना कर रही है। वह विश्वमोहिनी और त्रैलोक्य सर्वाधिक सुन्दरी है। हे विष्णो! मैं उसे वरण करना चाहता हूँ। स्वयंवर में हजारों राजा आए हुए हैं। यदि आप मुझे अपना रूप दे दें तो वह कन्या मुझे मिल सकती है। मैं आपका परम प्रिय भक्त हूँ, आप वही करिये जिससे वह राज-

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

कन्या मुझे मिल सके। नारदजी के वचन सुन कर विष्णुजी ने कहा—हे मुनिवर ! आप अपने इच्छित स्थान को पधारिये। आप मुझे अत्यंत प्रिय हैं। जिस प्रकार एक सद्वैद्य रोगी को उचित औषधि देता है वैसे ही मैं नारदजी का कार्य करूँगा। ऐसा विचार करके उन्होंने नारदजी को वानर वेश (स्वरूप) दे दिया मुनि ने समझा कि हरि स्वरूप मिल गया, बड़े प्रसन्न हुए तथा शीघ्र स्वयंवर सभा में जा पहुँचे जो कि इन्द्र सभा के समान शोभायमान थी।

वहां बैठे-बैठे नारद जी विचारने लगे कि मुझ विष्णु रूपधारी को यह अवश्य ही वरेगी वे अपने कुरूपत्व के रहस्य से अनभिज्ञ थे वहां बैठे सब जनों को नारदजी का असली स्वरूप ही दृष्टिगोचर हो रहा था, उनके कुरूप होने की बात का किसी को भी ज्ञान नहीं था उस स्वयंवर में स्थल पर दो रुद्रगण जो कि ब्राह्मण वेश में उपस्थित थे। इस रहस्य को

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

जानते थे। वे नारदजी के समीप जा उनकी हंसी उड़ाने लगे कि नारदजी का स्वरूप तो विष्णु जैसा है किन्तु मुख भयंकर वानर का है। काम भ्रमित नारदजी उनकी बातों पर ध्यान न दे सके तथा राजकन्या की रूप माधुरी में खो गए। इसी बीच राजकन्या अनेक स्त्रियों के साथ अन्तःपुर से सभा (स्वयंवर स्थल) में साक्षात लक्ष्मी के समान आ खड़ी हुई।

राजकन्या श्रीमती अपने अनुरूप वर की खोज करती हुई जब नारदजी के समीप पहुँची तो उनकी देह को विष्णु समान तथा मुख को वानर जैसा देखकर क्रोधित होकर आगे बढ़ गई। पूरी सभा में उसे कोई अनुकूल वर नहीं मिला, वह सभा के मध्य में व्यकुलता-पूर्वक आ खड़ी हुई। तभी वहाँ भगवान स्वयं आये, उन्हें वहाँ किसी ने नहीं देखा मात्र कन्या ने देखा, और उनके गले में माला डाल दी। भगवान अपनी माया को लेकर अन्तर्ध्यान

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

हो गये। उस कन्या के माला न डालने से कामातुर नारद जी अत्यन्त व्याकुल हो गये। ऐसी अवस्था देखकर वे रुद्रगण नारद जी से बोले--हे मुनिवर ! आप व्यर्थ ही परेशान हैं प्रथम अपना मुख निहारिये जो कि वानर के समान भयंकर है। दोनों गणों की बात सुनकर नारद जी आश्चर्यचकित होकर दर्पण में अपना मुख देखने लगे।

अपना मुख देखकर नारदजी को बहुत क्रोध आया, उन्होंने माया से मोहित होकर रुद्र गणों को शाप दिया कि तुमने जिस मुख से ब्राह्मण का उपहास किया है, आगे तुम ब्राह्मण होकर भी राक्षस बनोगे। शिव गण नारदजी के वचनों को शिव इच्छा समझ कर स्व-स्थान को चले गये।

महाप्रलय का स्वरूप और विष्णु की उत्पत्ति

महाप्रलय में जब स्थावर जंगम प्राणी

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

विश्व नष्ट हो गया था, उस समय ग्रह-नक्षत्र, सूर्यादि के न होने से सर्वत्र अन्धकार था। शब्द, स्पर्श गन्ध, रूप, रसादि सभी दृष्ट पदार्थ अदृष्ट थे। इस प्रकार के सूचीभेद्य सन्नाटे और अंधकार में केवल सद्ब्रह्म ही था। जो मन, वाणी द्वारा अगोचर, इन्द्रियों से परे, नाम, रूप, वर्ण से परे है, जो ह्रस्व है न दीर्घ है, प्रभा, आभा और विकार से रहित सर्व-व्यापक है। विकल्प से ही जिसके संज्ञा और संज्ञोक्ति होते हैं उसने कितने काल में दूसरे की इच्छा की।

उस निराकार ने इच्छा ही से अपनी मूर्ति की कल्पना की। इस ऐश्वर्यात्मक शुद्ध स्वरूपा मूर्ति की कल्पना करके वह सर्वगामी, अविनाशी परब्रह्म अन्तर्हित हो गये। उस अपूर्व ब्रह्म की मूर्ति ही सदा शिव है। इसी अर्वाचीन मूर्ति को ज्ञानीजनों ने ईश्वर कहा है। अपने ही देह से स्वच्छन्द देह वाली

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

शक्ति को प्रकट किया, वही शक्ति, प्रधान प्रकृति एवं गुणमयी परा माया है। उसी को शक्ति, अम्बिका, त्रिवेदी जननी नित्या एवं मूल कारण कहते हैं। उसीकी आठ भुजाएं, विचित्र मुख तथा पूर्णमासी के हजार चन्द्रमाओं के तुल्य कान्ति है। इसके नेत्र प्रफुल्लित कमल के समान हैं तथा यह अनेक प्रकार के आयुधों को धारण करने वाली है। इस प्रकृति से महान और महान से तीन गुणों की उत्पत्ति हुई, उससे अहंकार, उससे तन्मात्रा और तन्मात्रा से पंचभूत हुए, पंचभूत से ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों की उत्पत्ति हुई। प्रकृति का सब कार्य जड़ात्मक है, उसे पुरुष से परे समझना चाहिए। यह चौबीस तत्व शिवेच्छा से ग्रहण होने पर ब्रह्म स्वरूप जल में सो गये।

तब वहां शब्द गुणवाला नाद उत्पन्न हुआ, यह ओंकार युक्त प्रकट हुआ जो कि प्लुत लक्षण वाला था। यह क्या है? इस

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

अकार घोर शब्द हुआ, सब देवताओं द्वारा पूछे जाने वाले विष्णु वैर रहित हो गये, फिर उन्होंने लिंग के दक्षिण सनातन आद्य-अकार तथा उत्तर की ओर उकार, मध्य में मकार और अन्त में आद को देखा, इस प्रकार सम्पूर्ण प्रणव के दर्शन हुए। इसे ही आदि, अन्त और मध्य से शून्य आनन्द की उत्पत्तिकर्ता, सत्य आनन्द, अविनाशी परब्रह्म ज्ञानियों द्वारा कहा गया है।

यह रुद्र चिन्तनगम्य नहीं है, इसका विचार करने में मन और वाणी की निवृत्ति हो जाती है। उनका ज्ञान एकाक्षर 'ॐ' से ही सम्भव है। यह एकाक्षर ऋत और कारण का भी कारण है। एकाक्षर अकार में बीज स्वरूप तथा अण्डज ब्रह्मा जी, उकार से परम कारण विष्णु तथा मकार से नील लोहित शंकर। अकार सृष्टि की उत्पत्ति करने वाला, उकार मोहित करने वाला तथा मकार अनुग्रहशील है। इस

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

लिंग बीज से आकार की उत्पत्ति हुई यह उकार रूप में जाकर वृद्धि को प्राप्त हुआ तथा स्वर्ण अण्ड बना, यह अराड अनेक वर्षों तक जल में स्थित रहा। ब्रह्मा जी ने इसके दो भाग किये, इन भागों से द्यूलोक तथा पृथ्वी का प्राकट्य हुआ। भव और ककार नामक चार मुख प्रकट हुए यही सब लोकों के रचने वाले हैं, इसलिए इसे वेद में ओम-ओम कहा है।

ऐसे ही समय विश्व के पालनकर्ता विष्णु नेतथा सृष्टिकर्ता ब्रह्मा ने कर्पूर गौर, पंचमुख, दश भुजाधारी अनेक कान्ति युक्त भगवान शिव के दर्शन किये। उस समय प्रसन्न होकर महेश्वर दिव्य शब्द युक्त स्वरूप में स्थित हो गये। उनका शिर आकार, मस्तक आकार, दक्षिण नेत्र इकार वाम ईकार, दक्षिण कपोल उकार वाम कपोल ऋकार नासापुट लृकार, एकार ऊर्ध्व होंठ तथा ऐकार निम्न होंठ

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

था। ओ औ क्रमशः दन्त पंक्ति तथा अंतालु था। क वर्ग दक्षिण हाथ, च वर्ग वाम हाथ, ट वर्ग दक्षिण चरण, त वर्ग से वाम चरण प कार उदर तथा फ कार पार्श्व भाग था, बकार वाम पार्श्व, भकार स्कंध, मकार हृदय, यकार से सकार तक सप्तधातुएँ हकार नाभि क्षकार घ्राण था। उन ईश्वर के शब्दमय स्वरूप के दर्शन करके वे कृतार्थ हुए।

परमेश्वर शिवजी ने कहा–हे विष्णु! तुम मेरी आज्ञा श्रवण करो, सदैव सभी लोकों में मान्य और पूज्य होंगे। ब्रह्मा के द्वारा रचे संसार में व्याप्त दुःखों को उबारने में तत्पर रहोगे। हे ब्रह्मा! तुम्हारे ध्यान के योग्य विष्णु हैं। तुम दोनों में और रुद्र में कोई भेद नहीं है। यथार्थ में यह लीला मात्र ही है। हे पुरुषोत्तम! जो कोई रुद्र भक्त तुम्हारी निन्दा करेगा या तुमसे द्वेष रखेगा वह नरकगामी होगा इसमें संशय नहीं है। जो तुम्हारा आश्रय

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

लेता है वही मेरा आश्रित है, हम तुम में अन्तर समझने वाला अवश्य ही नरकगामी होगा। जो इस प्रकार जानेगा उसके लिए मोक्ष दुर्लभ नहीं है।

शिव पूजन बिधि एवं फल

शिवजी का स्वरूप सुखदायक एवं सनातन है। सम्पूर्ण कामनाओं की प्राप्ति के लिए उन कार परम भक्तिपूर्वक पूजन करना चाहिए। प्रातःकाल ब्रह्ममुहूर्त में उठे, गुरु तथा शिवजी का स्मरण करे, नित्य क्रिया से निवृत्त हो। मल त्याग के पश्चात शुद्धि के लिए ब्राह्मण को मृतिका से पांच बार, क्षत्रिय को चार बार, वैश्य को तीन बार, शूद्र को दो बार हाथ साफ करने चाहिएँ। लिंग में भी मिट्टी लगाकर साफ करे—बांये से दस बार, फिर दोनों से सात बार मृतिका लगाकर साफ करे, पांव के तले में तीन बार लगावे। स्त्रियों को शूद्र की भांति शुद्धि करनी चाहिए। फिर अपने वर्णक्रम के

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

अनुसार दातुन करे। ब्राह्मण को बारह अंगुल, क्षत्रिय को ग्यारह, वैश्य को दस तथा शूद्र को नौ अंगुल प्रमाण की दातुन लेकर दन्त धावन करना चाहिए। छः अमावश, नवमी, व्रत का दिन तथा रविवार और सूर्यास्त के समय दान्तुन करने का निषेध है।

देशकाल के अनुसार मन्त्रपूर्वक स्नान करे, पश्चात धुले वस्त्र धारण करके स्वच्छ और एकान्त स्थान में संध्या करे। विधि सहित आसन ग्रहण कर न्यासादि करे, प्रथम गणेश पूजन करे, फिर द्वारपाल और दिक्पालों को पूजे। सिंहासन की कल्पना करे या पूजन द्रव्य के निकट अष्ट दल बनाकर बैठे। अब तीन आचमन करके (3) तीन प्राणायाम करे, मध्य में त्र्यमबक देव का ध्यान करे। अब शिवजी का द्रव्य या मानसोपचार से पूजन करे। पाद्य में उशोर और चंदन का तथा आचमन में जाय-फल, कंकोल नटमूल तमाल तथा चन्दन

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

का प्रयोग करे। फिर लिंग की शुद्धि कर ओंकार सहित नमस्कार करे। पूर्व की ओर साक्षात् अणिमायुक्त अक्षर की लघिमा दक्षिण की ओर, महिमा पश्चिम की ओर, प्राप्ति उत्तर की ओर प्राकाम्त अग्नि कोण में, नैऋत्य में ईशित्व, वायुकोण में वशित्व, सर्वज्ञ को इशान में कल्पित करे तथा सद्योजात मन्त्र से ईश्वर का आह्वन करे। वाम मन्त्र से आसन, रुद्र गायत्री से सान्निध्यम् अघोर मन्त्र से निरोध ईशान मन्त्र से पूजा करे और पाद्य आचमन के पश्चात अर्घ्य दें।

गन्ध, चन्दन के जल से रुद्र की स्थापना करे, फिर पंचगव्य से ओंकार पूर्वक (पंचगव्य, गाय का दूध, दही, घी, मूत्र तथा गोबर) स्नान करावे, फिर दही, मधु तथा ईख का रस तथा घृत से, फिर शुद्धोदक स्नान करावे। कुशा, चिरचिटा, कपूर, जातिफल, चम्पक, पाटक, कनेर, पुष्प मल्लिका और कमल से मिश्रित

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

जल की धारा शिवजी पर छोड़ें, रुद्र सूक्त, नील सूक्त, पुरुष सूक्त, मृत्युंजय मन्त्र से शिव का अभिषेक करे, चन्दन पुष्पादि अर्पित करे, मुखवासादि के लिये प्रणव से सामग्री अर्पण करे। धूप, दीप, नैवेद्य प्रणवपूर्वक अर्पण करे, फिर यथा विधि नीराजन, नमस्कार और स्तुति करते हुये शिवजी के चरणों में पुष्पांजलि अर्पण कर प्रणाम करे। फिर हाथ में पुष्प लेकर ईशान देवता की आराधना करे, हे शंकर ! मैंने जो ज्ञान या अज्ञान में आपका जो पूजन किया है वह सब आपकी कृपा से फल का देने वाला हो।

यह कहकर शिवजी पर पुष्प चढ़ा दे, फिर स्वास्ति वाचन करके आशीर्वाद ले। मार्जन करे लिंग पर और नमस्कार करके अपराधों की क्षमा मांगकर आचमन कराये। अघोर मन्त्र का उच्चारण कर नमस्कार की कल्पना करे और भाव सहित शिवजी की

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

स्तुति प्रार्थना करे, हे शिव ! तुम ही मुझे शरण देने वाले हो, कोई दूसरा नहीं । जो व्यक्ति शिव भक्ति परायण होकर नित्य इस प्रकार पूजन करते हैं, उनकी सभी इच्छायें पूर्ण होती हैं, रोग, दुःख, शोक, उद्वेग कुटिलता तथा विष प्रयोग से उत्पन्न दुःख को कल्याण-कारी शिव नष्ट करते हैं ।

ऋषियों ने कहा–हे व्यास शिष्य ! अब आप यह बतलावें कि किस-किस पुष्प के द्वारा पूजन करने से शिवजी क्या-क्या फल प्रदान करते हैं ? सूत जी बोले–हे ऋषियो ! मैं क्रम-पूर्वक पुष्पों के अर्पण करने का फल कहता हूं । यह विधि नारद जी ने ब्रह्मा जी से पूछी थी और प्रसन्न होकर ब्रह्मा जी ने कहा था कि कमल, बेलपत्र, शंशपत्र, शंखपुष्पी से शिव-जी की पूजा करने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है । जो राज्य चाहता है वह दस करोड़ पार्थिव पूजा से शिव को प्रसन्न करे । जो व्यक्ति पुष्प

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

तथा चावल चढ़ाकर चन्दन युक्त जलधारा से स्नान कराता है, या शंख पुष्पी से विशेष पूजन करता है वह इस लोक और परलोक में सब इच्छाओं की पूर्ति कर लेता है।

धूप, दीप, नेवैद्य, अर्घ्य आरती, प्रदक्षिणा नमस्कार, क्षमापन और विसर्जन यह सभी विधिवत करके जिसने शिवजी को भोग लगाया उसे राज्य प्राप्ति होती है। जो व्यक्ति अपनी प्रधानता चाहे वह इससे आधा पूजन करे। कारागृह की मुक्ति के लिये एक लाख कमल पुष्पों से पूजन करे। रोगी पचास हजार कमल पुष्पों से, कन्या की कामना (विवाह) वाला पुरुष पच्चीस हजार कमल पुष्पों से, विद्या की प्राप्ति वाले को इससे आधे कमल पुष्पों से पूजन करना चाहिये। वाणी की कामना वाले को घृत से, शत्रुओं के उच्चाटनार्थ तथा मारण में एक लाख पुष्पों से, मोहन के लिये पचास हजार पुष्पों से, यश की

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

कामना वाले को तो राज्याधिकारी को वश में करने के लिये दस लाख पुष्पों से, वाहनादि की प्राप्ति के लिये एक हजार तथा मोक्षगामी को पांच करोड़ पुषों से पूजन करना चाहिये। ज्ञान के इच्छुक को एक करोड़ तथा शिवजी के दर्शनों के लिये इससे आधा पूजन करे।

कुशा से पूजन करने पर मोक्ष, आयु की वृद्धि करने वाले को दुर्गा से, पुत्र की कामना वाले को एक लाख धतुर पुष्पों से, यश की प्राप्ति के लिये अगस्त्य के पुष्पों से, तुलसी के पूजन से भुक्ति-मुक्ति दोनों की प्राप्ति होती है। आक के पुष्पों से पूजने पर प्रताप की वृद्धि, शत्रुनाश के लिये जपा के पुष्पों से, रोगनाश के लिये कनेर के फूलों से, उच्चाटन कर्म भी कनेर पुष्पों से करे। आभूषणादि के लिये बन्धूक पुष्पों से, चमेली के पुष्पों से वाहन प्राप्ति, मल्लिका के पुष्पों से स्त्री के

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

प्राप्ति, हरसिंगार से सुख-सम्पत्ति। निगुराडी से मन की स्वच्छता। शिवजी को चम्पा, केतकी के पुष्प भूलकर भी अर्पण न करे बाकी सब पुष्प चढ़ावें।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

ब्रह्मा जी ने कहा—एक समय वर्षा ऋतु में शिवजी कैलाश के शिखर पर विराजमान थे, उस समय सती ने उनसे कहा—हे देवाधिदेव ! नाथ आप मेरी प्रार्थना सुनिये, यह अत्यन्त दुःसह वर्षाकाल आ गया है, अनेक वर्णों के मेघ दशों दिशाओं में आ घिरे हैं, हृदय का हरण करने वाली वायु प्रवाहित हो रही है, कदम्ब के मकरन्द से युक्त जल के छींटे आ रहे हैं। जलधाराओं की वर्षा करते तथा बिजली चमकाते हुये मेघों को देखकर किसका मन क्षुब्ध नहीं हो जायेगा, यह ऋतु विरहीजनों को दुःखदायक है। इसमें दिन में सूर्य तथा रात्रि में चन्द्रमा प्रकाशित नहीं होते। मेघों की इस दुर्नीति को देखिये जो अपने अनुगामी मोरों और चातकों को ओलों से

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

आच्छादित कर देता है। इस विषम समय सभी पक्षी भी अपना घोंसला बनाते हैं तब फिर आप ही बिना घर के कैसे शान्ति प्राप्त करेंगे। हे पिनाकी ! मुझे मेघों से भय लग रहा है। आप घर का प्रबन्ध कीजिये, चाहे कैलाश पर, हिमालय पर, पृथ्वी पर जहाँ आप उचित समझें।

दाक्षायणी की प्रार्थना सुनकर शिवजी को हँसी आई और उनके मस्तक का अर्ध चन्द्र प्रकाशित हो गया, फिर सब तत्वों के ज्ञाता शिवजी सती को प्रसन्न करने के लिये बोले— हे प्रिये ! तुम्हारी प्रसन्नता के लिये जो स्थान मैं निश्चित करूँगा वहाँ मेघ नहीं पहुँच सकेंगे। वर्षाकाल में भी हिमालय के नीचे मेघ घूमते रहेंगे। हिमालय पर्वत पर सोने के पंख वाले अनिल वृन्द नामक पक्षी अपने मधुर शब्दों के द्वारा तुम्हारे इच्छित विहार की लीलाओं को गायेंगे। वहाँ तुम्हें सिद्धों

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

की नारियाँ मणिजड़ित वेद रूप आसन की
भूमि को कौतुक सहित भेंट करेंगी तथा
विभिन्न प्रकार के फल आदि लाकर अर्पण
करेंगी। नाग कन्या, पर्वत कन्या, तुरंगमुखी
किन्नरी लीला विहार के समय श्रेष्ठ वचन
कहकर तुम्हें प्रसन्न करेंगी।

पर्वतराज की पत्नी मेनका भी तुम्हें
प्रसन्न करने हेतु तुम्हारे अनुकूल रहेगी। यह
यतियों और मुनियों से युक्त देवालय है, यहाँ
के सभी हिंसक जीव शांत स्वभाव के हैं। यहाँ
अखरोट के वृक्षों की शाखाएं ऐसे हिल रही
हैं जैसे नृत्य कर रही हों। भौरे मधुर ध्वनि में
गुंजार रहे हैं। शिवजी के ऐसे वचन सुनकर
सती ने कहा—हे प्राणेश्वर! मैं आपके साथ
हिमालय में ही वास करना चाहती हूँ। सती
की बात सुनकर मोहित हुए शिवजी सती
सहित हिमालय के उच्च शिखर पर पहुँचे।

सब प्राणियों से सुशोभित शैलराज के उ

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

श्रेष्ठ शिखर पर सती के सहित शिवजी बहुत समय तक रमण करते रहे, उस स्वर्ग जैसे स्थान में सती शंकर अत्यन्त प्रसन्नतापूर्वक दस हजार वर्ष तक विहार रत रहे। न वे कभी उस स्थान से अन्य स्थान पर जाते न देवी-देवताओं के साथ मेरू शिखर पर भ्रमण करते। न कभी पृथ्वी के किन्हीं द्वीप या दिव्य स्थान पर विचरण करते। सबको त्यागकर शिवजी ने सती में ही मन को रमा लिया। इस प्रकार शिवजी सती का मुख देखते और सती शिवजी का।

एक समय दक्ष सुता अपने स्वामी को प्रसन्न देख प्रणाम कर नम्र होकर बोली—हे देवेश! मैं अब सुखदायक उस परम तत्व को जानना चाहती हूँ, जिससे यह जीव भव-बन्धन मुक्त हो जाता है। यह सुनकर शिवजी बोले—हे महेशानि! तुम विज्ञान को ही परम तत्त्व समझो उससे बुद्धिपूर्वक ब्रह्म का ही स्मरण

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

किया जाता है किसी अन्य का नहीं। हे प्रिय! इस तत्त्व का ज्ञाता कोई बिरला ही होता है। उस विज्ञान की माता मुक्ति और मुक्ति की दात्री मेरी भक्ति है; किन्तु मेरी भक्ति भी मेरी कृपा से प्राप्त होती है। भक्ति और ज्ञान में कोई भेद नहीं है। भक्ति करने वाला सदा सुखी रहता है तथा जो भक्ति का विरोध करता है वह ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता। भक्ति सगुण और निर्गुण भेद से दो प्रकार की है।

मुनियों ने उन दोनों के अंग नौ कहे हैं। श्रवण, कीर्तन, स्मरण, सेवन, दास्य, अर्चन, वन्दन, सख्य तथा आत्म-समर्पण यह नौ अंग विज्ञजनों ने कहे हैं। कथा आदि में देह आदि से सम्मानपूर्वक स्थिर आसन पर स्थित होकर उसका पान करना श्रवण कहलाता है। हृदयाकाश में मेरे जन्म कर्म को देखता हुआ प्रीतिपूर्वक उनका उच्चारण करना कीर्तन कहा गया है। मुझको नित्य, सर्वत्र व्यापक मानकर भय-

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

रहित मुझे स्मरण करना ही नाम स्मरण है। सेवा परायण होकर इन्द्रियों को सेवा में लगाकर उसका पालन करना सेवन होता है। सभी इन्द्रियों सहित मेरी सेवा में तत्पर रहना दास्य कहा गया है। षोडश प्रकार से मेरी पूजा करे, पाद्य, अर्घ्य आदि दे यह अर्चन है। मन, वचन, कर्म से मन्त्रोच्चारण करके ध्यान करना और आठ अंगों से पृथ्वी का स्पर्श करना वन्दना है। मंगल या अमंगल जो कुछ इश्वरेच्छा से होता है वही मेरे लिए कल्याण-प्रद है ऐसा विश्वास करना सख्य है। देहादि को अर्पण करके स्वयं शून्यत्व का भाव मानना आत्म-समर्पण है।

इस प्रकार की सांगोपांग भक्ति ज्ञान वैराग्य की वृद्धि करने वाली एवं परम श्रेष्ठ है। मुक्ति सदा इसकी दासी है। इसी के द्वारा सम्पूर्ण कर्म और फल उत्पन्न होते हैं। मेरे लिये ऐसा करने वाला पुरुष तुम्हारे समान ही

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

प्रिय है। त्रैलोक्य में भक्ति समान सुख देने वाला अन्य कोई मार्ग नहीं है। सभी युगों में विशेष कर कलिकाल में भक्ति विशेष फल देने वाली है। लोक में जो पुरुष भक्ति युक्त होता है मैं सदैव उसके वश में रहकर उनके लिए विघ्न उपस्थित करने वाले का शत्रु हो जाता हूँ। मैं सदा भक्तों के अधीन हूँ।

दक्ष और शिव विरोध का कारण

ब्रह्मा जी ने कहा—प्राचीन काल में प्रयागराज में एकत्र हुये मुनियों द्वारा एक महान यज्ञ हुआ, उसमें सिद्ध परमर्षि, देवर्षि, सन्कादि, प्रजापति आदि देवगण एकत्र हुये। मैं भी सपरिवार वहां गया। उसी अवसर पर पार्वती पति भी अपने गणों सहित त्रैलोक्य के हित साधनार्थ वहां आये। शिवजी को वहां आया देख सबने उन्हें आदर सहित प्रणाम किया और उन्हें अपना प्रभु मानते हुये उनकी स्तुति

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

करने लगे। शिवजी का आशीर्वाद पा उनकी आज्ञा से सब यथास्थान बैठ गये। इस समय प्रजापतियों के प्रति अत्यन्त तेजस्वी दक्ष वहां प्रसन्नतापूर्वक वहां आये। ब्रह्माण्ड के अधिपति होने के कारण अभिमान से भरे दक्ष ने केवल मुझे प्रणाम किया और वहां बैठ गया। सभी देवताओं और ऋषियों ने प्रजापति दक्ष का स्तुति प्रणाम से आदर सत्कार किया। परन्तु परम स्वतन्त्र शंकर अपने आसन पर बैठे रहे। शिवजी को प्रणाम न करता देख मेरा पुत्र दक्ष अत्यन्त क्रोध करता हुआ तथा उनको सुनाते हुये कहने लगा—यह सुर, असुर, सिद्ध, ऋषि सबने मुझे प्रणाम किया किन्तु यह प्रेत पिशाचों से घिरा अभिमानी, दुर्जन के समान बैठा रहा।

इस श्मशान सेवी, क्रियाहीन निर्लज्ज ने मुझे प्रणाम क्यों नहीं किया। इतना कहकर वह शिवजी को शाप देने को उद्यत हुआ।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

क्रोधपूर्वक रुद्र के पति ने कहा–हे विप्रो! देवताओ! सब सुनो, यह वध के योग्य है, मैं इसे यज्ञ से बाहर करता हूँ। वर्णों से भी बाहर यह विवर्ण रूप यह आज से देवताओं में यज्ञ भाग प्राप्त नहीं करेगा। क्योंकि यह श्मशान में रहने वाला और कुल जन्म से हीन है। भृगु आदि अनेक ऋषि दक्ष की यह बात सुनकर उसकी निन्दा करने लगे, किन्तु नन्दी के नेत्र लाल हो गये और उसने दक्ष को शाप देते हुए कहा–अरे महामूढ़ दक्ष! तूने मेरे स्वामी महेश्वर को यज्ञ से किस कारण निकाल दिया है। जिनके स्मरण करने से यज्ञ सफल होते हैं तथा तीर्थ पवित्र हो जाते हैं, उन भगवान शंकर को तूने शाप कैसे दिया? जो इस संसार का पालन करते हैं अन्त में विनाश कर देते हैं, उन सरल महाप्रभु की तूने व्यर्थ ही हंसी उड़ाई है। नन्दी के ऐसे वचन सुनकर दक्ष क्रोध में भर गया और बोला–तुम सभी

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

रुद्रगण वेद से बाहर होंगे तथा मुनियों द्वारा भी तुम्हारा त्याग किया जायेगा, तुम अशिष्ट, पाखण्डी, मदिरासेवी तथा जटा, भस्म और अस्थियों को धारण करने वाले हो।

शिवगणों के प्रति दक्ष के ऐसे वचन सुनकर नन्दी को अति क्रोध आया तथा शिलाद सुत नन्दी ने कहा—अरे दुर्बुद्धि वाले दक्ष ! तू शिव तत्त्व से अज्ञात है। तूने अहंकार में भर कर महाप्रभु शंकर का निरादर किया है। मैं तेरे समान रुद्र विमुख ब्राह्मणों को शाप देता हूँ कि वे वेद-वाद परायण होकर भी वेद तत्त्व का ज्ञान न पा सकेंगे। तुम कामना से ही अनुष्ठान करोगे, लोभ, मद, क्रोध से युक्त निर्लज्ज तथा भिक्षा मांगने वाले होगे। तुम सत्य रहित प्रतिग्रह ग्रहण करके नरकगामी होगे। जिन शंकर भगवान को तुम सामान्य देवता समझते हो, उनसे द्रोह करने वाले के आनन्द का नाश होगा, अपने गति का ज्ञान

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

न रहने से पशु रूप होंगे। जिस समय क्रोध-पूर्वक नन्दीश्वर ने ब्राह्मणों को और दक्ष को शाप दिया उस समय सर्वत्र हा-हाकार छा गया।

नन्दी के ऐसे वचन सुनकर भगवान शंकर हंसे और उसे समझाते हुए कहने लगे--हे महाप्राण! तुमको क्रोध करना उचित नहीं है। तुमने भ्रम में पड़े दक्ष को मुझे शाप देता देखकर ब्रह्मकुल को व्यर्थ ही शाप दे डाला। तुम तत्त्व ज्ञान से यह समझ सकते हो कि मैं कभी शापित नहीं हो सकता। हे बुद्धिवन्त! तुमने सनकादि को ज्ञान दिया था तुम शान्त होओ। यज्ञ, यज्ञ के कर्म, यज्ञ के अंग, यज्ञ की आत्मा में रत यज्ञ से बाहर सभी में मैं व्याप्त हूँ। तुम सब कौन हो? तत्त्व से विचार कर देखो तो मैं ही हूँ और ऐसा विचार करने से ज्ञात होगा कि ब्राह्मणों को व्यर्थ ही शाप दिया। क्रोध को त्यागकर शान्त होओ और

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

सब रहस्य को समझो। जब भगवान ने नन्दीश्वर को समझाया तो उन्हें परम बोध हुआ और शान्त हो गये।

इस प्रकार अपने प्रियगण को समझाकर शिवजी गणों सहित अपने स्थान को चले गये, तथा दक्ष भी शिव के प्रति द्रोह धारण करके ब्राह्मणों सहित अपने स्थान को चला गया। अत्यन्त मूर्खतावश शिवजी को शाप देकर दक्ष ने शिव पूजकों की निन्दा करनी प्रारम्भ कर दी। ब्रह्मा जी आगे बोले कि उस समय दक्ष ने एक महायज्ञ का आयोजन कर सब ऋषियों को आमन्त्रित किया। शिवमाया में मोहित देवगण और ऋषिगण वहां पहुँचे। सत्यलोक से मुझे भी प्रार्थना करके बुलाया गया। अत्यन्त आदर सहित वैकुण्ठ से भगवान विष्णु को बुलाया वे भी अपने पार्षदों सहित पधारे। शिव द्रोही दक्ष ने सबका स्वागत सत्कार किया। विश्वकर्मा द्वारा निर्मित सुन्दर

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

भवन रहने के लिए सब को दिये। उस महा-यज्ञ में भृगु आदि तपस्वी ऋत्विज मरुद्गणों सहित विष्णु जी अधिष्ठाता तथा त्रयी की विधि का ज्ञाता मैं ब्रह्मा हुआ। इस प्रकार सब दिक्पाल आयुध सहित यज्ञ के रक्षक हुए।

उस स्थान पर यज्ञ भी अपने स्वरूप में स्थिर हो गया, अग्नि ने अपने सहस्रों रूप धार कर आहुतियाँ ग्रहण करनी शुरू कीं। अट्ठासी हजार ऋषि आहुति दे रहे थे और चौंसठ हजार ऋषि उद्गाता थे। इतने ही अध्वर्यु तथा होता थे तथा नारद आदि महर्षि पृथक-पृथक गाथा गान कर रहे थे। गन्धर्व विद्याधर, सिद्धों के समूह आदित्यगण, यक्षगण, समस्त संख्या वाले नाग आदि समस्त दक्ष द्वारा यज्ञ में वरण किये गये। ब्रह्मर्षि, देवर्षि, राजर्षि सभी राजा, वसु तथा गण देवताओं को दक्ष ने वरण किया तथा इस कौतुक मंगल के उप-

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

रांत दक्ष ने दीक्षा ब्रह्मा की तथा स्वस्ति वाचन के पश्चात भार्या सहित सुशोभित हुआ।

दक्ष ने शिवजी को कपाली और अयोग्य कहकर यज्ञ में आमंत्रित नहीं किया। यद्यपि उसको अपनी कन्या सतीं बहुत प्रिय थी, किन्तु वह कपाली की पत्नी है, ऐसा विचार कर उसे भी नहीं बुलाया। तब वहां शिव को न देख-कर परम शैव्य दधीचि ने उद्विग्न मन से कहा-सभी ऋषिगण और देवगण इस सभा में मेरा प्रश्न सुनें कि इस यज्ञ में भगवान शंकर क्यों नहीं पधारे। सभी मुनिश्वर, सुरेश्वर लोकपाल आदि यहां उपस्थित हैं किन्तु महात्मा शिवजी के बिना यह यज्ञ शोभा नहीं पा रहा। जिन द्वारा महात्मा जन मंगल होना कहते हैं वे वृषध्वज, नीलकंठ, पुराण पुरुष के दर्शन नहीं हो रहे हैं।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

इसलिए भगवान विष्णु या ब्रह्मा जी को

भेजकर उन्हें शीघ्र ही बुलवा लेना चाहिए। अथवा हम सभी को वहां चलकर दक्ष सुता सहित उन्हें यहां लिवा लाना उचित है। भगवान शंकर के आने से ही यह यज्ञ पूर्ण होगा अन्यथा नहीं, यह मैं सत्य कहता हूँ।

दधीचि के इस प्रकार के वचन सुनकर दक्ष क्रोधित हुआ और अहंकार से हंसकर बोला-विष्णु भगवान देवताओं के मूल हैं और सनातन धर्म इन्हीं के कारण प्रतिष्ठा पा रहा है, मैंने उन्हें यज्ञ में बुला ही लिया है फिर कमी क्या रह गई। सत्यलोक से पितामह ब्रह्मा भी आ गये हैं, सब देवताओं सहित देवराज यहां हैं फिर रुद्र से हमें क्या प्रयोजन ? ब्रह्मा जी की आज्ञा से मैंने अपनी पुत्री उन्हें दी थी, परन्तु हे ब्राह्मण ! वे तो अकुलीन, भूत, पिशाचों के अधिपि, कर्म से अयोग्य तथा अहंकारी होने के कारण मैंने उन्हें नहीं बुलाया है। दधीचि बोले-शिव

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

के बिना यह यज्ञ अयज्ञ ही है तुम नष्ट हो जाओगे। इतना कहकर वे अपने आश्रम को चले गये। अन्य शिव भक्त भी उनके साथ ही यज्ञशाला से चले गये।

शिव भक्तों के चले जाने के पश्चात शिवद्रोही दक्ष कहने लगा, शंकर का भक्त दधीचि तथा अन्य यहां से चले गये हैं यह बहुत शुभ हुआ है। जिनकी बुद्धि नष्ट हो गई हो, आत्मस्वच्छ न हो तथा मिथ्यावाद में रत हो ऐसों को यज्ञ में न बुलाना ही मेरा विचार था यह मैं सत्य कहता हूँ। हे विप्रो ! हे देवताओ, आप ही मेरे यज्ञ को सफल कीजिए। शिव माया में विमोहित सब उस यज्ञ में देव यजन करने लगे।

जब सब देवगण और ऋषिगण दक्ष के यज्ञ में सम्मिलित होने जा रहे थे तब सती अपनी सखियों के साथ गन्ध मादन पर क्रीड़ा-रत थी। सती ने यह सब देखकर अपनी प्रिय

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

सखी विजया से पूछा–हे विजया ! तू मे
अत्यन्त प्रिय सखी है । यह चन्द्रमा कहां
रहा है ? तू रोहिणी से जाकर पूछ । सती
बात सुनकर विजया ने चन्द्रमा के पास जा
पूछा कि तुम कहां जा रहे हो ? विजया
बात सुनकर चन्द्रमा ने दक्ष के यहां यज्ञमहोत्
का वृत्तान्त कह सुनाया । यह बात सुन
विजया को विस्मय हुआ तथा सती को
सारा वृत्तान्त कह सुनाया जो चन्द्रमा ने
लाया था ।

यह सुनकर सती को बहुत आश्चर्य हु
कि मेरे माता-पिता ने यज्ञोत्सव में क्यों न
बुलाया, मुझे वे क्यों भूल गए । मैं शिवजी
इसका कारण पूछूं । सती अपनी प्रिय स
को वहीं छोड़कर शिवजी के पास पहुंची
वहां सभा जुड़ी देखी । उस समय महाकौ
सत्पुरुषों के लिए कल्याणप्रद शिवजी सती
बोले--तुम आश्चर्य चकित सी इतनी द्रुत

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

से सभा के मध्य क्यों आई हो ? शिवजी के इस प्रकार पूछने पर सती ने हाथ जोड़कर अपने स्वामी से कहा—हे प्रभो ! मेरे पिता के यहां यज्ञोत्सव हो रहा है, ऐसा मैंने सुना है कि वहां सब देवगण और ऋषिगण एकत्र हुए हैं। आप वहां क्यों नहीं गए ? कृपा करके मुझे बतलाइए ।

हे प्रभो ! आप मेरे साथ वहां चलिए। सती के वचन सुनकर तथा दक्ष के कटु वचनों को याद करके शिवजी बोले हे देवी ! तुम्हारे पिता दक्ष मुझसे द्वेष रखते हैं, जो ऋषिगण और देवगण उनके मान्य हैं वही मूर्ख दुर्बुद्धि वाले तुम्हारे पिता के यज्ञ में पहुँचे हैं। हे प्रिय ! जो किसी के यहाँ बिना बुलाए जा पहुँचते हैं वे तिरस्कृत होते हैं। बिना बुलाए जाना निरर्थक है। यह तुम मेरी बात सत्य समझो। स्वजनों के दुर्वाक्यों से अन्तःकरण जितना व्यथित होता है उतना तो शत्रुओं के बाणों

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

से भी नहीं होता। शंकरजी के ऐसे वचन सु
कर सती ने कहा हे--शंकर ! आप सबके ईश्व
हैं, आपके वहां जाने से यज्ञ सफल हो जात
किन्तु मेरे दुरात्मा पिता ने आपको निमन्त्रि
नहीं किया, इसलिए मैं उस दुरात्मा के भ
को जानना चाहती हूँ। वहां दुरात्मा हो
सभी ऋषि और देवता पहुँचे हैं इसलिये मैं
वहां जाऊंगी। आप मुझे जाने की अ
मति दें।

सती की बात सुनकर सर्वज्ञाता भगव
शंकर बोले हे देवी ! तुम वहां जाना ही चाह
हो तो अवश्य जाओ। शीघ्र तैयार हो
नन्दी पर सवार होकर जाओ। पति आ
पाकर साज-सज्जा युक्त सती पितृगह
चली। शिवजी ने महाराजों जैसी साज-सज
प्रदान की तथा आठ हजार गण उनके स
भेजे। शिव तथा शिवा का गुणगान क
हुये शिवगण चले। इस प्रकार सती वहां प

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

गई जहां यज्ञोत्सव हो रहा था। उस समय सती ने अपने पिता के स्थान को अनेक आश्चर्यों तथा देवता और मुनियों से युक्त देखा। सती वाहन से द्वार पर उतर गई तथा नन्दी को साथ लेकर यज्ञभूमि में पहुँची। सती को आई देखकर उसकी माता और बहनों ने उसका स्वागत किया। किन्तु दक्ष ने तथा अन्त उपस्थित विज्ञजनों ने शिव माया से मोहित होकर उनका आदर नहीं किया।

तब सती ने आश्चर्ययुक्त अपने माता-पिता को प्रणाम किया। उस यज्ञ में विष्णु आदि सब देवों का पृथक-पृथक भाग देखा किन्तु शिव का भाग न देख सती अत्यन्त क्रोधित हुई तथा अपमान का अनुभव करते हुई बोली—जिनकी कृपा से यह सम्पूर्ण चराचर पवित्र हो जाता है उन शिव को तुमने क्यों नहीं बुलाया। यज्ञस्वरूप यज्ञदाताओं में श्रेष्ठ यज्ञ के अंग तथा यज्ञकर्ता शंकर के बिना यज्ञ

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

का सम्पादन कैसा ? क्या तुमने शिवजी को सामान्य देवता समझकर निरादर किया है ? हे पिता ! तुम अधम और बुद्धिभ्रष्ट हो । ब्रह्मा, विष्णु आदि भी जिनकी सेवा करके अपनी पदवी को प्राप्त हुए हैं तुम उन महेश्वर को नहीं जानते ।

यह ब्रह्मा, विष्णु आदि देवता अपने स्वामी शंकर के बिना यहां कैसे आ गये ? सती ने कहा–हे विष्णु ! क्या आप तत्त्व से शिवजी को नहीं जानते ? हे मतिहीन ! फिर भी तुमको ज्ञान नहीं हुआ और स्वामी का भाग न देखकर भी अपना भाग स्वीकार कर लिया । हे ब्रह्मा ! पहले अहंकार वश तुम शिवजी से द्रोह रखा करते थे तुम्हारे पांच मुख थे, किन्तु एक मुख शिव ने खत्म कर दिया क्या तुम यह बात भूल गये ? क्या तुम्हें रुद्र की शक्ति का ज्ञान नहीं ? उन्होंने तुम्हारे वज्र को भस्म कर डाला था । हे देवगण ! क्या

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

तुम शंकर के कर्म से अनभिज्ञ हो? हे अत्रि! हे वशिष्ठ! तुमने यह क्या किया? दारूवन में भिक्षुक बने शिव को जब तुमने शाप दिया था तब शापित शिव ने जो किया उसे तुम भूल गये क्या?

सती के क्रोधपूर्ण वचन सुनकर सब देव-गण आदि भयभीत मन मौन बैठे रहे किन्तु दक्ष ने अपनी पुत्री को क्रूर दृष्टि से देखते हुए क्रोधपूर्वक कहा—हे भद्रे! तू अधिक यह सब क्या कह रही है, तू रह या चली जा। तेरा यहां क्या प्रयोजन है? तू यहां किस लिए आई है? सब विज्ञजन जानते हैं कि तुम्हारे पति अकुलीन, वेद से वहिर्मुख तथा भूत-पिशाचों के अधिपति हैं, इसलिए उस कुवेश वाले शिव को यहां नहीं बुलाया गया, मैंने बुद्धि पूर्वक समझ लिया था कि देवताओं और ऋषियों की सभा में उसका क्या काम। मैंने लोक पितामह की आज्ञा से तुम्हारी शादी उससे

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

की थी। मैं नहीं जानता था कि रुद्र क्रोधी तथा दुरात्मा है। इसलिए हे पुत्री ! तू क्रोध त्याग कर स्वस्थ हो तथा यज्ञ में आ गई है तो अपना भाग ग्रहण कर।

पिता को निन्दा युक्त दृष्टि से देखते हुए सती मन में विचार करने लगी कि मैं शिवजी के पास किस प्रकार पहुँचूं ? किन्तु जब वह मुझ से यहां का हाल पूछेंगे तो क्या उत्तर दूंगी ? क्रोधपूर्वक श्वांस खींचती सती अपने दुष्ट पिता से कहने लगी—जो शिवजी की निन्दा सुनते हैं वे निश्चय ही नरक में पड़ते हैं। इसलिए मैं अग्नि में प्रविष्ठ होकर देह छोड़ती हूँ। मैं अपने पति की निन्दा सुनकर जीवित नहीं रह सकती। यदि सामर्थ्य हो तो निन्दा करने वाले की जिह्वा काट ले अन्यथा सामर्थ्य हीन होने पर कानों पर हाथ रखकर वहां से चला जाये ऐसा, ज्ञानियों का वचन है।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

इस प्रकार नीति युक्त वचन कहकर फिर निःशंक भाव से विष्णु आदि देवताओं और मुनियों से क्रोधपूर्वक बोली—तुम सब शिव निन्दक शीघ्र ही अत्यन्त पश्चाताप को प्राप्त होंगे। यहां दुःख भोग कर यमलोक के कष्ट सहोगे। असत् व्यक्ति महान् पुरुषों की निन्दा करते हैं, किन्तु महापुरुषों की चरण रज से अज्ञान नष्ट कर लेने में ही शोभा है। जिसने अपनी वाणी से 'शिव' इन दो अक्षर को उच्चारित किया, उसके समस्त पाप नष्ट हो गये। जो शिव शीघ्र कृपालु हैं उन लोक बन्धु शिव की तुम निन्दा करते हो। उन शिव को तुम्हारे शिवा कोई अशिव नहीं कहता।

वे श्मशान में भूतगणों के साथ जटा खोलकर कपाल धारण करते हैं, वे उदार बुद्धि प्रेम से मृतक की अस्थियों की माला धारण करते हैं। जिनके निर्माल्य की कामना समस्त

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

देवता और मुनि करते हैं, वे परमेश्वर शिव ही हैं। हे पिता! वह व्यक्त लिंग अवधूतों के द्वारा सदा सेवित है, तुम कुबुद्धि से उनके प्रति अभिमान न करो। कुबुद्धि वश तुम महादुष्ट हो गये हो, तुम्हारे द्वारा उत्पन्न इस देह को रखना ठीक नहीं तुम्हारे द्वारा उत्पन्न होने के कारण शिव मुझे 'दत्तायणी' कहते हैं, मुझे इस उच्चारण से अब दुःख होगा। इसलिए तुम्हारे देह से उत्पन्न हुए गर्हित शरीर को अभी छोड़ कर सुखी होऊँगी। हे देवगण! हे मुनिगण तुम सब मेरे वचनों को सुनो, तुम सब दुष्ट चित्त वाले हो और तुम्हारा यह कर्म निन्दा के योग्य है। तुम सभी मूर्ख हो गये हो, तुमने शिव की निन्दा की है, तुम्हें शीघ्र ही शिव द्वारा दण्ड प्राप्त होगा।

सती का देह त्याग

इतनी बात कहकर सती चुप हो गई तथा

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

अपने स्वामी शिव का ध्यान और चिन्तन करने लगीं। नाम स्मरण करती हुई उत्तर की ओर भूमि पर मौन एवं शान्त चित्त होकर बैठ गईं। उन्होंने विधि से आचमन किया तथा योग मार्ग में लीन हो गई। उसने प्राण-अपान वायु को समान कर, यत्नपूर्वक उदान को नाभिचक्र से उठाकर उसे हृदय में स्थापित किया, फिर कण्ठ में लाकर भौं के बीच प्राण वायु को स्थापित किया। दक्ष के कारण क्रोधपूर्वक अपने शरीर को छोड़ने के लिए सती ने इस प्रकार योग धारण किया और वायु से ही शरीर को भस्म करना शुरू कर दिया उस समय उसने केवल अपने पति के चरण कमलों का स्मरण किया तथा शिवजी का ध्यान करते हुए योग मार्ग में प्रवृत्त हुईं। उनका शरीर विकार रहित हो गया तथा उसमें अग्नि प्रज्ज्वलित हो उठी तथा उसकी इच्छा से तत्काल ही सम्पूर्ण शरीर भस्म हो गया।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

यह होते ही पृथ्वी और आकाश में बड़ा कोलाहल मचा, देवताओं के हा-हाकार गूंज उठे परमदेव शिवजी की प्रिया ने देह त्याग दिया, उन्हें किस दुष्ट ने रुष्ट किया था। इस दक्ष की घोर मूर्खता देखो, चराचर प्रजा जिस प्रजापति की पुत्र रूप है इसके अज्ञान को तो देखो। निश्चय ही शिव प्रिया अपमान योग्य नहीं थी, परन्तु यह प्रजापति घोर अहंकारी और ब्रह्मद्रोही हो गया है। जिसने अपनी पुत्री का शिवद्रोह के कारण तिरस्कार किया है यह इसका घोर अपराध है, अन्त में महानरक भोगना पड़ेगा। सती के देह त्याग के समय सभी इस प्रकार कह रहे थे। इस काण्ड को देखकर शिवगणों ने अपने आयुधों को संभाल लिया।

यज्ञ द्वार पर साठ हजार महाबली शिवगण उपस्थित थे। वे हा-हाकार करके अपने को धिक्कारने लगे। ऊनके प्रचण्ड शब्द से

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

उपस्थित देवगण और मुनिगण अत्यन्त भय-भीत हो गये। गणों ने परस्पर सलाह करके अपने अस्त्रों को धारण किया, उनके वाद्य और अस्त्रों के प्रचण्ड शब्द से वहां प्रलय का सा दृश्य उपस्थित हो गया। किसी-किसी ने अपने अंग काट डाले तथा किसी-किसी ने अपने तीक्ष्ण अस्त्रों से सिर और मुख काट डाले। इस प्रकार बीस हजार शिवगण नष्ट हो गए। जो शिव गण बचे थे उन्होंने क्रोधपूर्वक दक्ष का वध करने का निर्णय कर लिया। महर्षि भृगु ने उनका यह विचार जान कर यज्ञ के विघ्न को दूर करने वाले यजुर्मन्त्रों से दक्षिणाग्नि में आहुति देना आरम्भ कर दिया। इन आहूतियों के प्रभाव से ऋभव नामक सहस्रों वीर उस कुण्ड से उत्पन्न हुए। उनके चक्रायुधों से शंकर के गणों का युद्ध चलने लगा। शिव की इच्छा रूप महाशक्ति से शिव गण मरने लगे। यह विचित्र बात

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

देख इन्द्रादि देवता, मरुद् गण, लोकपाल एवं अश्विनी कुमार मौन बैठे रहे। किसी ने भगवान विष्णु से प्रार्थना की, किसी ने विघ्नों को नष्ट करने की प्रार्थना की। सबको आगामी परिणाम की चिन्ता थी। इस प्रकार शिव द्रोही दुरात्मा दक्ष के यज्ञ में विघ्न उत्पन्न हुआ।

उसी समय सभी के सम्मुख वहां आकाश-वाणी हुई–हे दुराचारी दक्ष ! तूने दम्भ में भरकर यह कैसा अनर्थ कर डाला। हे मूर्ख तूने शैव्य राज दधीचि के सर्वानन्द दायक वचनों पर ध्यान नहीं दिया। वह ब्राह्मण तुझे घोर शाप देकर चला गया। फिर तूने घर पर पुत्री का भी तिरस्कार किया। हे मूर्खराज ! तूने शिव और शिवा का अनादर किया। तुझमें ब्रह्मा का पुत्र होने का घोर अहंकार है, तुझे सर्व पुण्य दायनी सती की आराधना करनी चाहिए थी, वह त्रैलोक्य माता शिवजी के अर्द्धांग में सदा निवास करती हैं। सती

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

ही विश्व की माता, विष्णु ब्रह्मा, इन्द्र, अग्नि, चन्द्रमा तथा सूर्यादि सभी की जननी हैं। वही तप, दान, धर्म की फलदात्री शिवजी की शक्ति, दुष्टों का संहार करने वाली महादेवी तथा परे से भी परे हैं। इस प्रकार उन सती का तूने आदर नहीं किया, न ही उन्हें यज्ञ भाग दिया।

अनन्त धन, धान्य, यज्ञादि का जो फल है वह मात्र शिवजी के दर्शन करने से प्राप्त हो जाता है, वही विश्व के धाता तथा सभी विद्याओं के अधीश्वर हैं तथा मंगलों के मंगल कर्त्ता हैं, तूने मूर्खता वश उनकी शक्ति का आदर न करके तिरस्कार किया है इस कारण तेरा यज्ञ नष्ट हो जायेगा। जहां पूजन के योग्य पुरुषों का आदर नहीं होता वहां अमंगल होना स्वाभाविक है। जिसकी चरणरज को शेष जी अपने हजार सिर से प्रीति सहित धारण करते हैं, जिनके चरणों का निरन्तर ध्यान

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

करने से विष्णु को विष्णुत्व की प्राप्ति हुई जिनके पूजन के कारण ब्रह्मा को ब्रह्मत्व प्राप्त हुआ तथा जिनके चरणों के ध्यान और पूजन से इन्द्रादि देवता और लोकपालों को उनके पद की प्राप्ति हुई यह वही शिवा हैं। यह शिवा ही जगन्माता और शिव जगत पिता हैं तूने मूर्खतावश उनका निरादर किया है तो तेरा कल्याण किस प्रकार सम्भव है। शिव के पूजन बिना ही मैं अपना मंगल कर लूंगा तेरा यह मिथ्या गर्व आज खण्डित हो जायेगा सर्वेश्वर शिव से विरोध करके कौन से देवगण तेरी सहायता करेंगे, मैं ऐसा कोई भी नहीं देखता।

इस समय जो देवता तेरी सहायता करेंगे वे भी इसी प्रकार नष्ट हो जायेंगे जैसे अग्नि में शलभ नष्ट हो जाता है। तेरा मुख भस्म हो जाए, तेरे सभी सहायक भस्म हो जायें और यज्ञ भी विध्वंस हो जाए। सभी देवताओं

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

शपथ है यदि कोई इस दुरात्मा की सहायता करे। सभी देवता इस यज्ञ मण्डल से शीघ्र ही बाहर हो जायें अन्यथा उनका सर्वनाश हो जायेगा। मुनिगण और नागादि भी शीघ्र ही यहां से चले जायें। हे विष्णु ! हे ब्रह्मा ! तुम दोनों भी शीघ्र यहाँ से चले जाओ अन्यथा नाश को प्राप्त होओगे। विष्णु आदि सभी देवता और मुनिगण आकाशवाणी को सुनकर आश्चर्य चकित रह गए।

उधर भृगु के मन्त्र बल से परास्त होकर समस्त शिव गण शिवजी की शरण में पहुंचे तथा उनको आदर सहित प्रणाम करके सभी वृतान्त कह सुनाया। गणों ने कहा—हे देव ! हम शरणागतों की रक्षा कीजिए। हे प्रभो ! उस दुरात्मा दक्ष ने अत्यन्त अहंकारपूर्वक सती का तिरस्कार किया। आपको यज्ञ भाग न देकर अन्य सभी देवताओं को दिया और आप के प्रति बहुत से दुर्वचन कहे। आपका भाग

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

यज्ञ में न देख तथा आपका निरादर जान अत्य
क्रोध से सती ने अपने पिता की अनेक प्रक
से भर्त्सना करके देह का त्याग कर दिया
लज्जा के कारण हजारों शिव गणों ने अप
अंग काटकर प्राण त्याग दिए, किन्तु जब ह
उसे मारने और यज्ञ को विध्वंश करने लगे
भृगु ने मन्त्र बल से हमें रोक दिया। हे नाथ
उस यज्ञ में हमारा घोर अपमान हुआ है, ह
आपकी शरण में भयभीत होकर आए हैं, आ
हमें भय रहित करिये।

अपने गणों की बात सुनकर उस अरि
को शीघ्र जान लेने की इच्छा से भगवान शंक
ने नारद जी को याद किया। तब दिव्य दर्श
नारद जी ने शिवाज्ञा से दक्ष यज्ञ में पहुँचे तथ
वहां का सारा वृतान्त कह सुनाया। नारद ज
की बात सुनकर शिव अत्यन्त क्रोधित हुए औ
महारोद्र रूप धारण कर लिया। लोक संहार
रुद्र ने अपनी एक जटा उखाड़ कर क्रोध में भ

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

कर पर्वत पर दे मारी। जटा के मारते ही उसके दो खराड हो गये और उससे महाप्रलय के समान भयंकर शब्द हुआ। तब वहां महाबली वीरभद्र प्रकट हुआ। वह प्रलय की अग्नि के समान तेजस्वी था तथा उसकी दो हजार भुजाएं थीं। महारोद्र के क्रोध से उस समय सौ ज्वर और तेरह प्रकार के सन्निपात उत्पन्न हुए। जटा के दूसरे भाग से महाकाली उत्पन्न हुई जो महा भयंकर और करोड़ों भूतों से घिरी हुई थी। उस समय वह वीरभद्र शिव को प्रणाम करके कहने लगा—हे रुद्र! मुझे क्या कार्य करना है शीघ्र आज्ञा दीजिए। आज्ञा हो तो क्षण मात्र में समुद्र का शोषण कर डालूं, पर्वतों को चूर्ण कर दूं, ब्रह्माण्ड को भस्म कर दूं अथवा सब प्राणियों को नष्ट कर दूं। मैं आपके प्रसाद से सब कुछ करने में समर्थ हूँ। हे शंकर! आपके प्रताप से तिनका भी महान कार्य करने में समर्थ होता है।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

भगवान शंकर उसके वचनों को सुन
सन्तुष्ट हो गये तथा हे वीरभद्र ! तेरी जय हो
ऐसा आशीर्वाद दिया। हे वीरभद्र ! ध्यानपूर्व
मेरी बात सुनो तथा मेरे आदेश का पाल
करो। दुष्ट ब्रह्मा पुत्र दक्ष यज्ञ कर रहा है व
मेरा द्रोही तथा बड़ा अहंकारी है। सपरिवा
उसका यज्ञ नष्ट करके मेरे पास शीघ्र लौ
आओ। ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्रादि देवता, गन्ध
यक्ष जो कोई भी वहाँ हो उसे दग्ध कर डालो
दधीचि की शपथ का उल्लंघन करके जो को
वहाँ स्थित रहे उन सभी को भस्म कर दो
तुम्हारे वहां पहुँचने पर यदि कोई तुम्हा
स्तुति करे तो भी उन्हें न छोड़ना, भस्म क
देना। जो देवता हमारे द्रोही हैं उनको शी
ही अग्नि की लपटों में भस्म कर देना, उन
मन्त्र पालक होने का भी ध्यान न करना।

देवाधिदेव महादेव को प्रणाम कर वी
भद्र सेना सहित यज्ञ स्थान को चल पड़ा

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

वीरभद्र के साथ शिव ने भी अन्य गणों को उसके साथ कर दिया। वे गण जो वीरभद्र के साथ चले, काल के भी काल थे। वीरभद्र भी शिवजी जैसा रूप धारण किये हुए था, वह रथारूढ़ होकर चला। शिव चेष्टा वाले उस वीरभद्र की स्तुति करने लगे। काली, कत्यानी, ईशानी, चामुण्डा, भद्रकाली, भद्रा, मुण्डमर्दिनी, त्वरिता तथा वैष्णावी, इन नौ दुर्गाओं के साथ महाकाली दक्ष संहार के लिए वीरभद्र के साथ चली। डाकिनी, शाकिनी, भूत, पिशाच, भैरव क्षेत्रपाल ये सब शिव आज्ञा से दक्ष संहार को चले। उस समय भेरी का तीक्ष्णनाद हुआ, जटाहार और मुखी के अनेक प्रकार के शब्द तथा शृंगों के शब्द होने लगे। बलवान वीर-भद्र की यात्रा में सुख सूचक अनेक शकुन होने लगे।

जब गणों को लेकर वीरभद्र ने गमन किया तो देवताओं सहित दक्ष ने यज्ञ विध्वंस

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

होने के तीन लक्षण देखे। दक्ष का वाम नेत्र गाह, अरू आदि अंग फड़कने लगे तथा अन्य अनेक कष्टदायक उत्पात दिखाई पड़े। यज्ञ भूमि कम्पायन हो उठी, मध्यान्ह में ही नक्षत्र दिखाई देने लगे। सूर्य में काले धब्बे पड़ने लगे, बिजली और अग्नि के समान तारे गिरने लगे, दक्ष के सिर को स्पर्श करते हुए गीध उड़ने लगे। गीदड़ और नेत्रक पक्षी शब्द करने लगे, तीखी वायु चल पड़ी, सब ओर से सलभ प्रकट हो गये। दक्ष का यज्ञ मण्डप क्षीण वायु से ही उड़ने लगा, यह बात देवबश अद्भुत और नवीन हुई। आकाश से लोहित वर्षा होने लगी, दिशायें अंधकार से भर गईं। इस प्रकार देवताओं ने बहुत से उत्पात देखे, उनको बहुत भय प्रतीत हुआ। 'हाय हम मरे' कहते हुए वे सब ऐसे ही गिर पड़े जैसे नदी के वेग से तट के वृक्ष गिर जाते हैं। विष्णु सहित सभी को

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

शक्ति क्षीण हो गई। तभी वहां आकाशवाणी हुई।

आकाशवाणी ने कहा, हे दक्ष! तुम अत्यन्त पापी और मूढ़ को धिक्कार है। शिवजी द्वारा तुम्हें दुःख प्राप्ति अवश्य होगी। यहां जितने जन उपस्थित हैं वे सब भी महादुःख प्राप्त करेंगे। ऐसी आकाशवाणी सुनकर देवताओं तथा दक्ष को बड़ा दुःख हुआ और दक्ष अपने स्वामी नारायण की शरण में गया प्रणाम कर स्तुति की तथा भय युक्त वाणी में बोला-हे दीन बन्धो! आप कृपा के सिन्धु हो, जैसे भी हो मेरी इस यज्ञ में रक्षा करें। आप कर्म वाले याज्ञात्मा तथा यज्ञरक्षक हैं, मेरा यज्ञ भंग न हो ऐसी कृपा करिये। दक्ष की इस प्रकार स्तुति-विनय सुनकर विष्णुजी ने व्याकुल हुए उस दक्ष को अपने चरणों से उठाया और अपने प्रभु शंकर का ध्यान कर शिव तत्व के ज्ञाता विष्णु बोले-हे दक्ष! तुम

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

मेरी बात सुनो, तुमने सर्वेश्वर शंकर का तत्व न जानकर उनका निरादर किया है। ईश्वर की अविज्ञा करने वाले को केवल कार्य में ही असफलता नहीं मिलती बल्कि पग-पग पर विपत्ति सहन करनी पड़ती है।

जहां अपूजनीयों का पूजन और पूजनीयों का निरादर हो वहां दरिद्रय, मृत्यु और भय तीनों की प्राप्ति होती है। भगवान शिवजी सब प्रकार मान्य हैं, उनका तिरस्कार करके ही तुमने इस घोर भय को प्राप्त किया है। तुम्हारी दुर्नीति के कारण ही अब हम सबका प्रभाव नहीं रहेगा। भगवान विष्णु के वचन सुनकर अत्यन्त चिन्तित हुआ और व्याकुल मन दक्ष मौन खड़ा रह गया। इसी समय वीरभद्र शिव-गणों की सेना के साथ वहां आ पहुँचा। उस लोक नाशक सेना को देखकर देवता आदि सभी क्षुब्ध हो उठे। सेना का उद्यम देखकर दक्ष का शीश झुक गया और वह विष्णु के

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

समक्ष दण्ड के समान गिरता हुआ बोला—हे प्रभो! मैंने आपके भरोसे ही इस यज्ञ का आयोजन किया है, हे विष्णु! आप कर्मों के साथी तथा यज्ञों के पालन कर्त्ता हैं, आप ही वेद धर्म के अधिष्ठान स्वरूप ब्रह्म हैं। इसलिए आपको इस यज्ञ की रक्षा करनी चाहिए। आपके अतिरिक्त अन्य कोई इस कार्य में समर्थ नहीं हो सकता।

दक्ष की स्तुति पूर्वक बात सुनकर भगवान विष्णु सन्तुष्ट हो गये तथा दक्ष से बोले—हे दक्ष! धर्म का पालन करना मेरा कर्त्तव्य है, किन्तु तुम अब अपनी क्रूर बुद्धि को त्याग दो तुमने जो कुछ कहा है सत्य कहा है, मैं तुम्हारे यज्ञ की रक्षा करूंगा। नैमि षारण्य में जो घटना घटी थी क्या वह तुम्हें याद नहीं है। क्रूर बुद्धि से तुम भुला बैठे हो। तुम्हारी रक्षा करना भी सुमति नहीं है, रुद्र के कोप से तुम्हारी रक्षा करने में कौन समर्थ होगा। हे दक्ष! तुम

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

कर्म अकर्म को नहीं समझते हो, सब बातों में कर्म को ही सफलता मिले यह आवश्यक नहीं। कर्म का फल देने में शिव के अतिरिक्त कोई समर्थ नहीं है। शान्त चित्त से ईश्वर में ही मन लगाने वाले को शिवजी फल प्रदान करते हैं जो मनुष्य ईश्वर को न मानकर मात्र ज्ञान के आश्रय मुक्त होना चाहते हैं, वे नरकगामी होते हैं।

यह वीरभद्र रुद्र गणों का अधीश्वर है, रुद्र की क्रोधाग्नि से उत्पन्न होकर यह हमारे विनाशार्थ ही यहां आया है, इसको शान्त करना यथार्थ में तो क्या कल्पना में भी सम्भव नहीं। यह हम सबको इस यज्ञ में भस्म करके ही शान्त होगा। इसमें सन्देह नहीं है। भ्रमवश शिवजी की शपथ को न मानकर मैं यहां ठहरा रहा हूँ, उसका परिणाम तुम्हारे सहित प्रत्यक्ष ही प्राप्त है। हे दक्ष! इसको शान्त करना तेरे सामर्थ्य से बाहर है। शपथ न मान कर

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

मैं भी शिवद्रोही हो गया और शिवद्रोही की त्रैलोक्य में कोई रक्षा नहीं कर सकता। वीरभद्र पर सुदर्शन चक्र भी प्रहार करने में समर्थ नहीं है, क्योंकि यह शैव्यचक्र अशैव्यों पर ही प्रहार करता है। यदि इस चक्र को छोड़ा गया तो यह प्रहार किये बिना शिवजी के पास लौट जाएगा। शपथ का उल्लंघन करने पर भी यह चक्र मेरे पास स्थित है इसे शिवजी की परम कृपा ही समझनी चाहिए।

यदि हम वीरभद्र का आदरपूर्वक पूजन करें तो भी भगवान शंकर की क्रोधाग्नि से यह हमें नहीं बचा सकता। इस समय तीनों लोकों में हमारा तुम्हारा कोई रक्षक नहीं है। देह को नष्ट होना और यम यातना को सहना हमसे कैसे सम्भव होगा। क्योंकि शिवद्रोही को देखते ही यमराज दांत पीसते हैं। मैं शपथ से सर्वदा मुक्त हो सकता था किन्तु दुष्ट संग के कारण मैं उससे न निकल सका। यदि हम

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

यहां से भागें भी तो शिव हमें आकर्षण अस्त्रों से खींच लेंगे। स्वर्ग, पृथ्वी, पाताल कहीं भी चले जाएं वीरभद्र के शस्त्र सभी जगह पहुँच सकते हैं। त्रिशूल धारी भगवान शिव के गुणों की ऐसी ही शक्ति है। शिवजी आज्ञा से श्री काल भैरव ने अपने नखों से ब्रह्माजी का पांचवां सिर काट डाला था। यह कह कर नारायण अत्यन्त व्याकुल मुख हो गये।

किन्तु इन्द्र ने नारायण का उपहास करते हुए वज्र ग्रहण किया और देवताओं सहित वीरभद्र से युद्ध करने को तत्पर हो गया। उस अवसर पर इन्द्र ऐरावत पर, अग्नि मेंढ़े पर, यम महिषि पर निऋति प्रेत पर, वरुण मकर पर, वायु मृग पर, कुबेर पुष्कर पर चढ़े तथा अन्य देवताओं सहित युद्ध करने को उद्धत हुए। ऐसा देखकर नीचे मुख किये दक्ष ने इन्द्र के पास आकर कहा—मैंने यह यज्ञ आपके भरोसे आरंभ किया है, क्योंकि आप अत्यन्त प्रभाव वाले हैं।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

इस यज्ञ की सिद्धि आप पर ही निर्भर है। इन्द्रादि सब देवता शिवमाया से विमोहित होकर युद्ध करने लगे। उस समय शंख और भेरियाँ बजने लगीं, तीक्ष्ण तोमर और नाराचों में युद्ध हुआ। लोकपालों सहित देवता शिवगणों को मारने लगे। देवयजन और दक्ष के सन्तोष के लिए यज्ञ कर्त्ता भृगुजी ने सबका उच्चाटन कर दिया। उन भूत प्रेतों, पिशाचों को हारता देखकर वीरभद्र ने क्रोधपूर्वक उन्हें पीछे कर दिया।

उस महाबली ने त्रिशूल से देवताओं को मारना प्रारम्भ किया। किसी के खड्ग से दो टुकड़े कर दिये, किसी पर मुग्दर प्रहार किया तथा अन्य शिवगणों ने शस्त्र प्रहार करके देवताओं को विदीर्ण कर दिया। इस प्रकार पराजित होकर इन्द्रादि देवताओं ने युद्ध भूमि त्याग दी तथा बृहस्पति जी से कहा—हे गुरो ! आप हमें शीघ्र वह उपाय बतलाओ जिससे हमारी विजय

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

हो सके। उन सबकी बात सुनकर भगवान शिव का ध्यान करके ज्ञान दुर्बल इन्द्र से बृहस्पति जी बोले—हे इन्द्र ! पहले नारायण ने जो कुछ कहा था वही हो गया। अब मेरी बात ध्यानपूर्वक सुनो, सभी कर्मों का फलदाता ईश्वर भी कर्त्ता की अपेक्षा करता है, क्योंकि स्वयं करने में वह भी समर्थ नहीं है। मन्त्र, औषधि अभिचार तथा लौकिक कर्म और वेद मीमांसा तथा वेद सम्मत अन्य सभी शास्त्र उसके बिना कुछ नहीं हैं और न ईश्वर को जानने में समर्थ हैं, ऐसा विज्ञजनों का कथन है। भगवान शंकर को सम्पूर्ण वेदों का ज्ञाता भी जानने में समर्थ नहीं हैं, उन्हें केवल उन्हीं की शरण प्राप्त करके जाना जा सकता है। फिर भी, हे इन्द्र ! कार्य-अकार्य के निर्णय में सिद्ध हुए अंश को मैं तुमको कहता हूं।

हे इन्द्र ! तुम लोकपालों सहित मूर्खता

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

वश इस यज्ञ में आये हो। तुम पराक्रम करने

में समर्थ हो क्या ? रूद्र के ये अत्यन्त क्रोध
वाले गण जब इस यज्ञ को विध्वंस करने आए
हैं तो अवश्य ही अपने कार्य को पूर्ण करेंगे।
इस यज्ञ को विध्वंश होने से रोकने का कोई
उपाय नहीं है यह मैं सत्य कहता हूँ। देवगुरू
की बात सुनकर सब चिन्ता मग्न हो गये।
वीरभद्र ने अत्यन्त क्रोधित होकर इन्द्रादि को
कहा—तुम सब मूर्खतावश इस यज्ञ में आये हो,
सका उत्तम फल तुमको चखाऊंगा। हे इन्द्र !
अग्ने ! सूर्य ! चन्द्र ! कुबेर ! वरूण ! वायु !
और शेष मेरे दिये फल को भोगो। यह कहकर
रभद्र ने तीक्ष्ण बाणों की वर्षा करनी प्रारम्भ
र दी। उसके बाण प्रहार से इन्द्रादि देवता
हुत व्यथित हुए और भाग खड़े हुए। सुरों को
गा देखकर वीरभद्र यज्ञ भूमि में आ गया, तब
भी ऋषि नारायण के पास पहुँचे और भय के
रण शीघ्रतम से बोले—हे नारायण ! आप
ाात यज्ञ स्वरूप हैं, आप इस यज्ञ की रक्षा

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

करिए। आपके अतिरिक्त और कौन र
करने में समर्थ है।

ऋषियों के वचन सुनकर लक्ष्मीपति वी
भद्र से युद्ध करने का विचार करने लगे
चार भुजाधारी, बलवान देवताओं को स
लेकर यज्ञशाला से बाहर निकले। इधर ग
के सहित त्रिशूलधारी वीरभद्र ने नारायण
युद्ध की इच्छा से आते देखा और क्रोधपू
बोला—हे विष्णु ! किस अभिमान के वशी
होकर तुमने शंकर की शपथ का उल्लंघन कि
है। क्या शिवजी की शपथ को ताड़ने में
समर्थ हो ? तुम कौन हो ? मैं नहीं जानत
तीनों लोकों में कौन तुम्हारी रक्षा करेगा।
दक्ष के इस यज्ञ की रक्षा कैसे कर सकोगे।
दधीचि ने जो कहा उसे तुमने नहीं सुना,
ने जो कुछ किया क्या उसे तुमने नहीं दे
क्या तुम भी दक्ष के यज्ञ में कुत्सित दान
करने आए हो। हे विष्णो ! मैं इसका

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

तुम्हें चखाता हूँ, अपने रक्षक (हिमायती) को भी बुला लो, मैं त्रिशूल से तुम्हारा हृदय विदीर्ण कर दूंगा। हे शिव विमुख अधम! क्या तुम शिव महात्म्य से अनभिज्ञ हो?

वीरभद्र की बात सुनकर लक्ष्मी पति हंस कर बोले—हे वीरभद्र! मैं तुम्हारे प्रति तत्व कहता हूं। तुम मुझ शिव सेवक को शिव के विरुद्ध मत समझो। इस दक्ष ने यज्ञ के लिए बहुत बार प्रार्थना की थी, यह कर्मनिष्ठ है इस में संदेह नहीं किन्तु मूर्खतावश शिव से द्रोह कर बैठा। मैं भक्तों के अधीन हूँ, शिव भी भक्तों के अधीन हैं। दक्ष मेरा भक्त है इसलिए मैं इसके यज्ञ में आया हूं। तुम रुद्र कोप से उत्पन्न और शिव प्रताप के निवाए हो, मेरी प्रतिज्ञा को सुनो, मैं तुमको निवारण करूं तुम मुझे करो फिर जो होना है वह तो होगा ही। वीरभद्र ने कहा—हे लक्ष्मीपते! आपको अपने प्रभु का प्रिय जान मैं बहुत प्रसन्न हुआ हूँ। हे

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

प्रभो ! आपकी भाव परीक्षा के लिए ही मैंने यह बात कही थी। जैसे शिव हैं वैसे ही आप हैं यह वेदों का कथन है। वीरभद्र की बात सुनकर विष्णु बोले—शंका रहित होकर, हे वीरभद्र तुम मेरे साथ युद्ध करो।

देवताओं की पराजय तथा दक्ष के सिर का काटा जाना

वीरभद्र ने शिवजी का स्मरण करते हुए नारायण से संग्राम करने लगा। शत्रुओं के संहारक वीरभद्र ने दिव्य रथ पर आरूढ़ होकर सिंहनाद किया। इधर महाबली नारायण ने अपने पक्ष के देवताओं को साथ लेकर पांचजन्य शंख का महानाद किया जो देवता संग्राम भूमि से भाग गये थे वे पुनः लौट आये। गरजते हुए गणों और लोक पालों का अत्यन्त भयंकर संग्राम हुआ। इन्द्र ने अपने वज्र से नन्दी पर आघात किया, नन्दी ने भी अपने

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

त्रिशूल से इन्द्र की छाती पर प्रहार किया। दोनों ही वीर एक दूसरे को हराने के विचार से अपना-अपना युद्ध कौशल दिखाने लगे। अग्नि ने अश्मा को शक्ति प्रहार किया तथा अश्मा ने अग्नि पर त्रिशूल का वार किया, यम के साथ महालोक नामक शिव गण महेश का स्मरण करते हुए युद्ध कर रहा था।

वीरचण्ड ने नैॠत के साथ, वरुण से वीर मुण्डी भिड़ गया, भृंगी पर वायु ने प्रहार किया, कूष्माण्डपति ने शिव का ध्यान कर कुबेर के साथ परमास्त्रों से युद्ध किया, योगिनी सहित भैरवी ने देवताओं को द्रवित करके रक्त-पान करना प्रारम्भ किया। इसी प्रकार क्षेत्रपाल ने देवताओं का भक्षण करना प्रारम्भ किया तथा काली ने उनका हृदय विदीर्ण कर रक्त-पान शुरू कर दिया। इधर नारायण भी चक्र से प्रहार करते हुए दशों दिशाओं को भस्म करने लगे। क्षेत्रपाल ने चक्र को ग्रस लिया

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

तब उसे उगलवा कर नारायण अत्यन्त क्रोध में भरकर शस्त्रास्त्र चलाने लगे। भैरव आदि भी अत्यन्त क्रोधपूर्वक उनसे युद्ध करने लगे। नारायण ने अपने योग बल से असंख्य शंख चक्र और गदाधारी वीर पैदा कर दिए तथा सुदर्शन चक्र उठाकर वीरभद्र के साथ संग्राम करने लगे। वीरभद्र ने रुद्र का स्मरण करके त्रिशूल से उन असंख्य वीरों को भस्म कर दिया तथा अपने त्रिशूल से नारायण पर प्रहार किया। इस आघात से सहसा नारायण मूर्छित होकर गिर पड़े। उस समय प्रलयाग्नि के समान तीनों लोकों को भस्म कर देने वाला तेज प्रकट हुआ। क्रोध के कारण रक्त वर्ण हुए नेत्र वाले विष्णु भगवान उठ खड़े हुए तथा चक्र से वीरभद्र पर प्रहार किया।

वीरभद्र ने कालरूपी सूर्य के समान कान्तिमान होकर नारायण के चक्र को स्तम्भित कर दिया। माया के स्वामी शिवजी की कृपा

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

से चक्र स्तम्भित हो गया। वीरभद्र द्वारा स्तम्भित हुए भगवान विष्णु यज्ञ मन्त्रों से उस स्तम्भन से मुक्त हुए। मुक्त होकर नारायण ने शारंग धनुष ग्रहण करके उससे तीन बाणों से वीरभद्र पर प्रहार किया जिसे वीरभद्र ने तीन ही प्रकार से काट डाला। उस समय ब्रह्मा जी और सरस्वती जी ने वीरभद्र को असह्य तेज वाला बतला कर नारायण को अन्तर्ध्यान होने का संकेत किया। तब सती मरण के दुःसह पाप को जान कर भगवान विष्णु अपने किंकरों सहित निज लोक को चले गये। ब्रह्मा जी भी पुत्र शोक से सन्तप्त हुए सत्य लोक को चले गए। तब महा बलशाली वीरभद्र ने समस्त देवताओं और मुनियों को परास्त कर दिया। ऐसी हालत देखकर यज्ञ बहुत घबराया तथा मृग का रूप धर वहां से भाग खड़ा हुआ।

जब दक्ष मृग रूप धर कर आकाश मार्ग से दौड़ा तब वीरभद्र ने पकड़कर उसका शीश

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

काट डाला। सभी देवताओं और मुनियों को विदीर्ण कर डाला। शिव द्रोही दक्ष के सिर को अग्नि में फेंक दिया। इस प्रकार वीरभद्र ने उन सबको जलती हुई अग्नि में शलभ के समान भस्म कर डाला। इतना कार्य करके वीरभद्र ने अट्टहास किया तब वीरभद्र पर पुष्प वृष्टि होने लगी, दुंदुभियां बजने लगीं, कुल कार्य अन्धार उसने नष्ट कर दिया। वीरभद्र को कार्य में सफल देखकर परमेश्वर शिव सन्तुष्ट हो गये तो वीरभद्र को गणेश्वर बना दिया।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

५

भगवान महेश्वर ने गौरी से कहा–मैं अपनी उग्र तपस्या के द्वारा ही प्रकृति को नष्ट कर देता हूँ, मैं शंकर नामधारी नित्य ही प्रकृति से रहित होकर स्थित रहता हूं तथा मेरी स्थिति तत्व से रहती है। इसी कारण से सद्वृति वाले लोग प्रकृति का संग्रह किए बिना विकार रहित होकर तथा लोक के आधार से रहित होकर स्थित रहते हैं। शिवजी के लोक व्यवहार के विषय में इस प्रकार के वचन सुन-कर भगवती ने हंसकर मधुर वाणी में कहा–हे शंकर! आपने इस समय जो कुछ कहा है वह प्रकृति नहीं है क्या? फिर आप किस तरह प्रकृति से परे हो सकते हैं। यह सब तत्व-स्वरूप कहिए। संसार में समस्त रचना एवं वचन आदि प्रकृति से ही है। आपका श्रवण

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

भोजन, दर्शन आदि सभी कुछ प्रकृति का ही कार्य-कलाप है। यदि आप अपने को प्रकृति से परे मानते हैं तो प्रभो! आपको तप से क्या प्रयोजन।

हे योगिराज! मेरा आपके साथ विवाह करने का इरादा नहीं है। जब कोई वस्तु प्रत्यक्ष हो तो वहां विज्ञजन अनुमान को प्रमाण नहीं माना करते। हे शम्भो! प्रकृति से गलित हो जाने के कारण ही आप अपने स्वरूप को नहीं जानते। हे ईश! जब आपको निज का ही ज्ञान नहीं तो तपस्या किस लिए करते हैं। हे योगिश्वर! आप मेरे वचन सुनिए मैं ही प्रकृति हूं, यह सर्वदा सत्य है कि आप पुरुष हैं। यह मेरी कृपा का फल है कि आप सगुण ब्रह्म रूपधारी हुए हैं। मेरे अभाव में आप निरीह हैं, मेरे बिना आप में कुछ भी करने की सामर्थ्य नहीं है। हे शंकर! यदि प्रकृति से आप परे हैं और प्रकृति से दूर रहने का

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

आपका कथन सत्य है तो आपको मेरे सानिन्ध्य में रहने में कोई भय नहीं होना चाहिए।

इस प्रकार सांख्य शास्त्र सम्मत भवानी के वचन सुनकर शिवजी वेदान्त सिद्धान्त का आश्रय लेकर कहने लगे–हे गिर, हे सुभाषिणी! जो तुम सांख्य-दर्शन के सिद्धान्त के अनुसार कह रही हो तो तुम नित्य ही मेरी सेवा किया करो, मैं इसका निषेध नहीं करता। मैं माया से लिप्त न रहने वाला ब्रह्म-परमेश्वर वेदान्त दर्शन के द्वारा जाना जा सकता हूँ। इस प्रकार गिरिराज कुमारी से कहकर शिवजी ने आगे कहा, भगवान सदा अपने भक्तों के ऊपर अनुग्रह किया करते हैं। हे गिरिराज! मैं तुम्हारे इस परम सुन्दर पर्वत प्रदेश में अपने स्वरूप परमार्थ भाव से चिन्तन करते हुए तप करूंगा। अब आप मुझे तपश्चर्या करने की आज्ञा प्रदान करें, क्योंकि बिना आज्ञा के किसी भी प्रकार की तपस्या नहीं की जा सकती।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

सांख्य दर्शन और वेदान्त के मत को स्वीकार करके शिव और गौरी का संवाद सुखप्रद बन गया, वस्तुतः यह दोनों भिन्नता से रहित ही हैं। भगवान शंकर ने अपनी सहेलियों के साथ रहने वाली भवानी से कहा–तुम प्रतिदिन मेरी सेवा आकर किया करो और भयरहित रहो। शिवजी सदा विकार रहित महायोगिश्वर और विविध प्रकार की लीलाएं करने वाले हैं, उन्होंने इस रीति से पार्वती को ग्रहण किया है। धीरतापूर्वक तपश्चर्या करने वालों का यही महान धैर्य है, जो अनेक विघ्न-बाधाओं से विचलित नहीं हुआ करते।

इन्द्र द्वारा कामदेव को शिव के पास भेजना

दुरात्मा तारक नामक असुर से परम पीड़ित होकर देवराज इन्द्र ने कामदेव का

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

स्मरण किया। देवराज के आह्वान पर अपनी शक्ति से त्रिभुवन को वश में करने वाला रति बल्लभ कामदेव रति और सख बसंत के सहित अभियानपूर्वक उपस्थित हो गया। उपस्थित होकर रति बल्लभ ने देवराज को प्रणाम किया और बोला—हे महेन्द्र! ऐसा कौन-सा कार्य है जिसके लिए मुझे याद किया है। आप मुझे शीघ्र आज्ञा दें मैं उसका पालन करने को प्रस्तुत हूँ। कामदेव के ऐसे वचन सुनकर देवराज को बहुत प्रसन्नता हुई और उसकी प्रशंसा करते हुए कहा—हे मकरध्वज! इस समय तुम्हारा आना अतिउत्तम है, मेरे कार्य के निमित्त जो तुम यहां पधारे हो इसके लिए तुम परम धन्य हो। यह कार्य केवल मुझे ही सुख नहीं देगा बल्कि समस्त देवगणों को प्रसन्नता देने वाला होगा।

कामदेव ने कहा—हे महाराज! संकट के समय अधिक बोलने वाला कुछ भी कार्य

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

करने में समर्थ नहीं होता, तथापि मेरी बात आप ध्यानपूर्वक सुन लीजिए। आप मेरे परम मित्र हैं, यदि कोई आपका पद प्राप्त करने के लिए तप कर रहा हो तो मैं आपके उस शत्रु का निश्चित रूप से पतन कर सकता हूँ, फिर वह चाहे देवर्षि या दानव ही क्यों न हो, मानव की तो बिसात क्या है। आपके कठोर वज्र तथा शस्त्रास्त्र अलग ही रखे रहें, मुझ जैसे शक्तिशाली मित्र के होते वह कोई अहित नहीं कर सकते। मैं अपनी अनाद्य शक्ति से विष्णु और ब्रह्मा को भी तपच्युत कर सकता हूँ, यहां तक कि शिव जैसे योगी की कठिन समाधि को भंग कर सकता हूँ। मेरे कोमल पुष्पों के पांच बाण तीन स्थान पर झुकी कुसुम धनुही, मधुकरों की गुंजार, रूपिणी प्रत्यञ्चा और सुन्दर रमणी मेरा बल है। राकापति चन्द्र मेरा घनिष्ट मित्र है।

रसराज शृंगार मेरा सेनापति तथा हाव-

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

भाव की नाना चेष्टाएं मेरी सेना हैं। हे देवराज ! ऊपर बतलाए यह सभी मृदु स्वरूप वाले हैं तथा मैं भी मृदु स्वरूप वाला हूँ। बुद्धिमान का यही कर्त्तव्य है कि जो जिस कार्य को कर सकता हो उसे उसी कार्य में लगा दे। इसीलिए मेरे करने योग्य जो कार्य हो आप मुझे कहें। कामदेव के वचन सुनकर इन्द्र ने कहा-हे तात ! मैंने मन में जो सोचा है उसे मात्र तम पूरा कर सकते हो, अन्य कोई भी उसे करने में समर्थ नहीं है। एक तारक नामी दुरात्मा दैत्य है जिसने ब्रह्मा जी से अद्भुत वरदान प्राप्त कर लिए हैं तथा अजय हो गया है। वह प्रबल योद्धा बन कर सबको दुःख देता फिरता है। सब ऋषिगण और देवगण उसके उत्पातों से दुःखी हो गये हैं। देवगणों ने अपने बल के साथ उससे युद्ध भी किया किन्तु उसके समस्त सब आयुध निष्प्राण हो गये।

वरुण देव का पाश उसके कण्ठ से स्पर्श

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

करते ही टूट गया, नारायण का अभेद्य सुदर्शन चक्र उसके कण्ठ से टकराकर कुण्ठित हो गया। उस महान दैत्य की मृत्यु प्रजापति ने शिव पुत्र के द्वारा निर्धारित की है। शंकर जी के मन में कोई कामना नहीं है वे इस समय हिमालय पर घोर तप कर रहे हैं। पर्वतराज की पुत्री पार्वती उन्हें अपना पति बनाने की कामना से पिता की आज्ञा लेकर उनकी सेवा में प्रस्तुत रहा करती है ऐसा मैंने सुना है। अतः हे रति नाथ ! अब तुम कोई ऐसा विचार करो जिससे भगवान शिव, जो कि परम स्वतंत्र ईश्वर हैं पार्वती को पत्नी रूप में स्वीकार करने को तत्पर हों।

हे कामदेव ! ऐसा कार्य करने से तुम समस्त दुःखों का नाश कर अपने जीवन में सफल हो जाओगे और निःसन्देह संसार में तुम्हारा प्रताप फिर स्थायी हो जायेगा। हे मित्र ! इस कठिन कार्य को तुम्हें ही करना

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

चाहिए। समस्त लोकों को आनन्द देने वाला यह कर्म है ऐसा मैंने विचार किया है। देवराज के ऐसे वचन सुन कर कामदेव का मुख कमल की भांति खिल उठा और वह बड़े ही प्रेम के साथ बोला कि आपका यह कार्य मैं अवश्य करूंगा। उस समय शिव माया से विमोहित होकर कामदेव अपने सखा और पत्नी के सहित हिमालय पर पहुँचा।

शंकर की माया से मोहित होकर महाभिमानी मन्मथ ने मधु को साथ लेकर अपना मोहने वाला माया जाल का प्रसार करना आरम्भ कर दिया। जहां अनेक वनौषधियां उत्पन्न होती थीं वहां ऋतुराज बसंत का प्रभाव सर्वत्र फैलने लगा। कामदेव के सखा बसंत के प्रभाव से उस क्षेत्र के समस्त वृक्ष पुष्पित हो गये तथा उनकी मोहक सुगन्ध से कामवासना का उद्दीपन होने लगा। कैरव कुसुम मधुकरों की गूंज से सोभित हो गये

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

और इन सभी कारणों से कामदेव का प्रभाव बढ़ने लगा। भ्रमरों की गुंजार उस समय अनेक प्रकार से हो रही थी जिससे तापसों के हृदय में भी कामवासना जाग्रत होने लगी।

सर्वत्र चन्द्रमा की चारूतम चांदनी छिटक उठी जो कि कामी और कामीनियों के लिए दूतिकाओं के समान प्रतीत हो रही थी। वहां बसंत का ऐसा विस्तार सर्वत्र व्याप्त हो गया कि तपोनिरत मुनियों के मन में भी काम की उद्दीप्त वासना जाग उठी। चेतन वाले प्राणियों की तो बात ही क्या जड़ और अचेतन भी काम आसक्ति से अछूते न रहे। उस समय बिना प्राकृत काल के ऋतुराज का ऐसा चमत्कृत प्रभाव देखकर भगवान शंकर को अत्यन्त आश्चर्य हुआ। उस समय सब का दुःख निवारण करने वाले शिवजी संयुक्त होकर लीलापूर्वक तपश्चर्या करने लगे।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

बसंत के अपना पूर्ण प्रभाव प्रस्तुत कर

देने के पश्चात् कामदेव अपनी स्त्री रति को साथ लेकर आम्र की मृदुल मंजरि का बाण चढ़ा कर शिवजी के वाम भाग में स्थित हो गया। जब इस तरह रति की प्रवृति हुई तो रसराज शृंगार भी अपने हाव-भाव आदि सैनिक गणों के साथ शिव के निकट प्रविष्ट हो गया। अपने पूर्ण प्रभाव के साथ कामदेव प्रकट तो हो गया किन्तु शिव के हृदय में कोई छिद्र न पाकर बाहर ही स्थित हो गया। जब कामदेव ने योगिश्वर शिव के मन काम उत्पन्न करने का अवसर नहीं देखा तो शिव प्रताप से भयभीत हो गया। ध्यानावस्था में समाधिस्थ भगवान शिव को अपने अधीन करने का क्षमता किसमें है।

उसी समय नित्य की भांति भवानी अपनी सखियों सहित बहुत से पुष्प लेकर शिव की अर्चना करने को वहां आ पहुँची। पार्वती के बिल्कुल समीप आने पर भगवान

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

आशुतोष थोड़ी देर के लिए समाधि को छोड़ कर जाग्रत हो गये। कामदेव ने यह स्वर्ण अवसर पा लिया और अपने अमोघ बाणों द्वारा शिव को आहत करने लगा। उस समय अपने पूर्ण शृंगार और हावों-भावों के सहित पार्वती का आगमन कामदेव का सहायक हुआ। यह अवसर पाकर वह शिवजी की मनोरुचि का भवानी के निरीक्षण आदि व्यापारों में बढ़ाने के लिए पुष्प बाणों से प्रहार करने लगा। नित्य की भांति भवानी शिव के समीप अर्चना करने लगी। शिव ने उस दिन कुछ विशेष रुचि से पार्वती को देखा तो वे स्त्री सुलभ स्वभाव से लज्जित होकर अपने अंग-प्रत्यंगों को सिकोड़ने लगीं।

उस समय शिव के मुख से ये वचन निकले कि यह पार्वती का मुख है या चन्द्रमा है। ये नेत्र हैं या पूर्ण विकसित कमल, यह भृकुटियां हैं अथवा कामदेव का धनुष। इस

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

संसार की रचना में जितना भी लालित्य है वह सभी बटोर कर विधाता ने इसी एक पार्वती में भर दिया है। निःसन्देह पार्वती के समस्त अंग-प्रत्यंग सब प्रकार से सुन्दर और मन को हरण करने वाले हैं। इसकी समता रखने वाली सुन्दरी अन्य कोई भी स्त्री लोक में नहीं हो सकती। शिवजी क्षण मात्र में ही भवानी की प्रशंसा करते हुए कुछ विचार कर रहे थे कि उन योगीश्वर की चेतना जाग्रत हो गई और तुरन्त ही विरक्ति भावना में आकर विचार करने लगे, यह क्या विचित्र घटना हुई ? मुझे ऐसा महा मोह किस प्रकार और क्यों हुआ ? समर्थ और ईश्वर होते हुए भी मुझे कामदेव ने विकार युक्त कैसे कर दिया ? मैं स्वयं समर्थ होते हुए भी किसी के अस्पृश्य अंग को स्पर्श करने की लालसा रखूं तो फिर साधारण सामर्थ्य विहीन क्षुद्र पुरुष संसार में क्या-क्या नहीं करेंगे ? इस प्रकार पूर्ण परिवर्तन

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

और वैराग्य में निमग्न होकर शिव ने अपने मन से पार्वती के पर्यङ्क प्राप्ति को हटा दिया। सर्वान्तर्यामी परमेश्वर का क्या पतन होना सम्भव हो सकता है।



CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

महान योगिश्वर महादेव जी ने अपने तप में विघ्न होता देखकर विस्मयपूर्वक गहन विचार किया। शिवजी मन में विचार करने लगे किस दुरात्मा ने मेरे नितान्त शांत चित्त में विकार पैदा किया ? मैंने अनुराग विभोर होकर पराई स्त्री के रूप-सुन्दरता की बढ़ाई की यह धर्म के सर्वथा विपरीत कर्म है। मुझसे यह प्रत्यक्षतः शास्त्र की मर्यादा का उल्लंघन हुआ है। सत्पुरुषों का उद्धार करने वाले महा योगिश्वर ने ऐसा सोचते हुए समस्त दिशाओं का अवलोकन किया। उस समय महादेव ने देखा कि वाम भाग में कामदेव बाण छोड़ने की इच्छा से खड़ा है तथा अपनी विजय पर वह महामूढ़ अति गर्व का अनुभव कर रहा है। ऐसी अवस्था में मदन को देखकर

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

भगवान गिरीश को अत्यन्त क्रोध आया। उसी समय कामदेव भयभीत होकर अन्तरिक्ष में स्थित हो गया।

अपने अमोघ अस्त्र को परमेश पर निष्फल होते देख मदन अत्यन्त भयातुर होकर और प्रभु मृत्युञ्जय को कोपविष्ठ देखकर कांप उठा तथा उसने देवों का आह्वान किया। मन्मथ के स्मरण करने पर समस्त देवगण वहां आकर शिव की वन्दना करने लगे। उस समय क्रुद्ध महेश्वर के तृतीय नेत्र से अग्नि का पुंज प्रकट होकर प्रलय कालीन अग्नि के समान प्रदीप्त होकर जलने लगा। तुरन्त ही उस प्रदीप्त अग्नि के तेज को आकाश, भूमि और अपने चारों ओर दौड़ते देखकर कामदेव पृथ्वी पर गिर पड़ा।

वहां उपस्थित देवताओं का समुदाय जब तक यही प्रार्थना आशुतोष से कर रहे थे कि 'अपराधी को क्षमा करिए' तब तक उस अग्नि

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

ने कामदेव को भस्म कर दिया। उस समय परमवीर मदन के विनाश से देवताओं को बड़ा दुःख हुआ, वे सब दुखाकुल होकर रुदन करने लगे। कामदेव की स्त्री रति मूर्छित होकर मृतक के समान गिर पड़ी। कुछ समय पश्चात होश में आकर पति वियोग के दुःख से बेचैन होकर करुण विलाप करने लगी तथा रोते हुए बोली—मैं क्या करूं अब किसका आश्रय लूं ! देवताओं ने अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए मेरे पति को यहां भेजकर मेरा सर्व-नाश ही कर दिया। यह देवगणों ने क्या किया ?

इतनी कथा सुनकर नारदजी ने ब्रह्माजी से कहा—हे महामनीषी ! त्रैलोक्य की रचना करने वाले भगवान शिव की यह कथा आपने मुझे सुनाई। शिवजी के तृतीय नेत्र की अग्नि ज्वाला से जब कामदेव भस्म हो गया उसके पश्चात क्या हुआ ? पर्वतराज पुत्री पार्वती उस समय

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

कहां चली गईं तथा उसने क्या किया ? हे दया सागर ! मुझे विस्तार पूर्वक बतलाइये । ब्रह्माजी बोले—हे महाभाग ! जब शिव के नेत्र से समुत्पन्न अग्नि द्वारा कामदेव भस्म हो गया तो उस समय ऐसा भयंकर शब्द हुआ जिससे समस्त गगन मण्डल गूंज उठा । इस महा-ध्वनि से कामदेव को ताप दग्ध देखकर पार्वती बहुत व्याकुल हो गईं और सखियों के साथ वहां से चली गईं । उस भयानक शब्द को सुनकर पर्वतराज हिमालय को भी बड़ा विस्मय हुआ और वे अपनी पुत्री का स्मरण करते हुए वहां सपरिवार पहुँच गये ।

हिमालय को अपनी आत्मजा पार्वती को देखकर बहुत कष्ट हुआ । शैलराज शिव की विरह वेदना से व्याकुल पार्वती के समीप पहुँच कर और अपने हाथों से आंसुओं को पोंछकर बोले—हे शिवे ! तुम डरो मत, रुदन बन्द कर दो । हिमालय ने इस प्रकार ढाढस बंधा कर

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

पुत्री को गोद में बिठा लिया और समझा कर अपने भवन में लिवा ले गये। कामदेव को भस्म करने के पश्चात शिव अन्तर्ध्यान हो गये। भवानी उनके वियोग में व्याकुल रहने लगीं तथा उन्हें कहीं भी शान्ति न मिल सकी। उस समय इन्द्र ने तुम्हें वहां भेजा। वहां शैल-राज ने तुम्हारी अर्चना कर श्रेष्ठ आसन दिया तथा पुत्र पार्वती की सेवा तपस्या और शिव के द्वारा मदन के भस्म करने का वृतान्त सुनाया।

इतनी बात सुनकर तुमने शैलेश को शिवोपासना करने की सलाह दी तथा एकान्त में बैठी भवानी के समीप जाकर आदरपूर्वक बोले—हे काली! मुझे आप पर इस समय बड़ी दया आ रही है, इसलिए मैं अब जो तुम्हारे हितार्थ बात कहता हूँ सो ध्यान पूर्वक सुनो। तुमने महेश्वर की सेवा तो की किन्तु वह तपस्या से रहित थी और उस पर तुम्हें बड़ा गर्व था। महेश्वर महान योगी और परम

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

विरक्त हैं, उन्होंने दुरात्मा मदन को भस्म करके भी आपको छोड़ दिया। इसलिए हे शिवा अब तुम कुछ समय तक तपस्या करके सुसंस्कृत होओ ताकि भगवान शंकर तुमको अवश्य ही स्वीकार कर लें।

हे देवी! फिर तुम कभी भी महेश्वर का त्याग नहीं कर सकोगी। केवल शंकर को ही हठपूर्वक अपना पति बनाओगी अन्य किसी भी देव को नहीं। तुम्हारे ऐसे वचन सुनकर शैल सुता ने कहा—हे देवर्षि! आप तो संसार में समस्त प्राणियों का उपकार एवं हित करने वाले हैं। आप भगवान रुद्र की सेवा आराधना करने का अपना गुरुमन्त्र प्रदान कीजिए। अच्छे गुरु के अभाव में कोई भी कर्म सिद्ध नहीं होता ऐसा मैंने सुना है तथा यही सनातन श्रुति भी है। पार्वती के दीन वचन सुन कर तुमने उसे शिव के पंचाक्षरी मन्त्र 'ॐ नमः शिवाय' का उपदेश किया था। इस मन्त्रराज

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

का अतुल प्रभाव बतलाते हुए तुमने कहा था, हे देवी ! यह परम अद्‌भुत मन्त्रराज है इसके श्रवण मात्र से ही आशुतोष प्रसन्न हो जाते हैं ।

नारद जी के वचन सुनकर शैल कुमारी परम प्रसन्न हुईं और उनके चले जाने के पश्चात मन में यह विचार कर कि महेश्वर तप के द्वारा ही प्राप्त हो सकते हैं भवानी ने तपस्या में ही मन लगा दिया। पार्वती ने अपनी सहेलियों से मन की बात कही और उन्हें लेकर शैलराज के सम्मुख पहुँची। वहां उसकी जया-विजया नामक सखियों ने हिमालय से प्रार्थना करते हुए कहा–हे राजन ! आपकी आत्मजा आपके कुल को सफल करने की इच्छा करती है तथा उसे अब निश्चय हो गया है कि भगवान शंकर तप से ही साध्य हो सकते हैं। अतएव हे शैलाधीश ! अब कृपा करके आपको यह आज्ञा प्रदान कर देनी चाहिए कि

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

पार्वती वन में जाकर शिव की प्रसन्नता के लिए तपस्या करे।

पार्वती की सखियों के विचार सुनकर शैलराज मन में विचार करके बोले—मुझे पार्वती का ऐसा निश्चय बहुत अच्छा लगा, किन्तु तप करने की आज्ञा इसे अपनी माता से लेनी चाहिए। शैलराज के ऐसा कहने पर वे सब पार्वती की माता के पास पहुंचीं। वहां भवानी की माता को प्रणाम कर करबद्ध प्रार्थना करने लगीं और बोलीं—हे माता! आपकी पुत्री अपने अभीष्ट देव शंकर को प्राप्त करने के लिए वन में जाकर तप करना चाहती हैं, इनके पिताजी ने तो आज्ञा प्रदान कर दी है। हे पतिव्रते! आपकी यह पुत्री अपने रूप को सफल बनाने के लिए यदि आप आज्ञा प्रदान करें तो वन में जाकर कठोर तपोव्रत को धारण करे।

पार्वती की माता मेना ने व्याकुलता वश

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

इस बात को अस्वीकार कर दिया तब शिव को ध्यान में रखकर भवानी स्वयं ही माता से विनयपूर्वक बोली–हे माता ! मैं महेश को प्राप्त करने के लिए कल ही तप करने के निमित्त वन को प्रस्थान करूंगी। आप मुझे सहर्ष आज्ञा प्रदान करें। पुत्री की बात सुनकर माता ने कहा–हे पुत्री शिवे ! यदि तुझे दुःख है और तेरी शिव के निमित्त तपस्या करने की प्रबल इच्छा है तो घर में रह कर ही तपश्चर्या कर। तू घर छोड़ कर वन में कहां जायेगी ? मेरे इस घर में सभी देवता, तीर्थ और अनेक उत्तम क्षेत्र विद्यमान हैं। हे पुत्री ! इस विषय में विशेष हठ करना उचित नहीं। हे बेटी ! तेरा शरीर फूल के समान कोमल है और तपस्या का कार्य अति कठिन है। इसलिए तू यहां रह कर ही साधना कर।

हे मनोकामना रखने वाली पार्वती ! तपोवन में स्त्रियों की गति नहीं सुनी गई है,

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

इसलिए तुझे भी वन गमन नहीं करना चाहिए। मेना ने अनेक प्रकार से पुत्री को तप के लिए वन न जाने को कहा किन्तु भवानी ने शंकर के अतिरिक्त किसी भी तरह सुख नहीं समझा। मेना ने अनेक प्रकार से वन जाने का निषेध किया इसी कारण भवानी का एक नाम 'उमा' पड़ गया। शैलसुता को अत्यन्त दुःखी जान-कर मेना ने उसे तपश्चर्या करने की आज्ञा प्रदान कर दी। माता की आज्ञा पाकर गौरी को बहुत सुख हुआ और वह अपने माता-पिता को प्रणाम करके शिवजी का स्मरण करते हुए अपनी दो प्रिय सखियों को साथ लेकर वन को प्रस्थान किया।

विविध भांति के मत तथा वस्त्रों आदि का त्याग करके भवानी ने कटि में सुन्दर मौञ्जी बांध ली और लज्जा निवारणार्थ वल्कल वस्त्र धारण कर लिए। कण्ठाहार के स्थान पर मृगचर्म पहन लिया। जिस स्थान

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

पर भगवान शंकर ने समाधि लगाई थी और मन्मथ को भस्म किया था सबसे पहले पार्वती उसी स्थल पर पहुँची। सर्वप्रथम शिवजी ने वहां तपस्या की थी, वहां एक क्षण के लिए पार्वती स्थित रहीं और फिर शिव के विरह में अधिक व्याकुल हो गईं। अत्यन्त दुःखी होकर वियोग में बेचैन होकर 'हा शंकर' कह कर रुदन करने लगीं। बहुत समय के पश्चात् रुद्राणी ने धैर्य धारण किया और दीक्षित विधान से तप करने के नियम धारण किये।

सर्वोत्तम शृंगि तीर्थ में पार्वती तप करने लगीं। भवानी ने वहां भूमि की शुद्धि करके वेदी की रचना की तब ऐसी घोर तपश्चर्या का आरम्भ किया जो कि मुनियों के लिए भी कठिन थी। ग्रीष्मऋतु में अपने चारों ओर अग्नि जला कर स्वयं मध्य में बैठती और मन्त्र जप करती। वर्षाकाल में अविरल जल धारा के नीचे जप करती, शीतकाल की कठिन

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

रात्रियों में शिव भक्ति में निरत होकर जल में खड़े होकर जप करती। इस प्रकार पार्वती ने घोर तप के साथ-साथ शिव के पचांक्षारी मन्त्र का जाप किया। इस तपश्चर्या काल में भवानी को अनेक दुःख विघ्न स्वरूप सामने आये किन्तु उसने किसी की भी परवाह न की तथा विविध संतापों को सावधान चित्त से सहन करने लगी।

पार्वती का एकमात्र ध्येय केवल शिवाराधना था, उसी में उसने मन को रमा लिया। प्रथम वर्ष में फलों का आहार तथा बाद में पत्तों का आहार बनाकर कितने ही वर्ष बिता दिए। अन्त में यह आहार भी भवानी ने त्याग दिया, तब देवगणों ने इनका नाम अपर्णा रख दिया। कुछ समय बाद गौरी ने एक टांग पर खड़े होकर मन्त्र का जाप प्रारम्भ किया। इस प्रकार तपश्चर्या करते हुए और महेश्वर का ध्यान करते हुए भवानी को तीन सहस्र

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

वर्ष व्यतीत हो गए। जिस स्थान पर शिव ने साठ हजार वर्ष तक तप किया था, वहाँ एक क्षण को स्थित होकर गौरी विचार करने लगी कि क्या मेरे उपास्य देव यह नहीं जान पाये कि मैं उन्हें पाने के लिए तपोनिरता हूँ। लोक में और वेद में तथा मुनि समाज में यह विख्यात है कि महेश सर्वज्ञ, सर्वदर्शी और सर्वान्तर्यामी हैं तथा अपने भक्तों की मनोकामना पूर्ण करने वाले हैं।

यदि मैंने समस्त कामनाओं का त्याग करके मात्र महेश में ही अनुराग किया है। यदि नारद तन्त्रोक्त पंचाक्षरी मन्त्र की विधि के साथ मैंने जप किया है तो गिरीश मुझ पर प्रसन्न होंगे। इस प्रकार मन में विचार कर रुद्राणी पुनः तपोनिरत हो गईं। पार्वती के कठिन तप को देख कर मुनिगण भी आश्चर्य चकित हो रहे थे। अनेक ऋषि मुनि गौरी की कठिन तप की बात सुन कर उन्हें देखने आते

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

थे तथा अपने को परम धन्य समझकर गौरी की प्रशंसा कर रहे थे। जो धर्मवृद्ध होते हैं उनके समीप बैठना तथा दर्शन करना परम कल्याणकारी होता है।

पार्वती के तप को देख कर तथा उसके मुकाबले में अन्यों के तप को हेय बतलाते हुए मुनिजन कहने लगे—तप तो ऐसा होना चाहिये जैसा गौरी ने शिव के लिए किया है ऐसा तप आज तक किसी ने नहीं किया, न आगे भविष्य में कोई कर सकेगा। इस प्रकार सब पार्वती के तप की प्रशंसा करते हुए स्व-स्थान को चले जाते। जगदम्बा के तप के प्रबल प्रभाव के कारण वहां परस्पर स्वभाव के विरोधी भी जब आश्रम में पहुँचते तो अपने स्वाभाविक द्वेष का त्याग कर देते। सिंह और गौ परस्पर में रागादि दोष वाले हैं किन्तु उ तपोवन में शिवा की महिमा से किसी ने किसी को कभी कोई बाधा नहीं पहुँचाई। वहाँ

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

वृक्ष लतादि सब पुष्पित हो गए तथा फलित हो गए। इस प्रकार वह देवी सिद्ध रूप हो गई।

देवताओं का तप से व्याकुल होकर ब्रह्मलोक जाना

जब काफी समय तक तपोनिरत पार्वती को शिव के दर्शन नहीं हुए तो पर्वतराज मय परिवार के उनके समक्ष उपस्थित होकर कहने लगे—हे महाभागे ! इस तपस्या से तू खिन्न मत होना। हे बाले ! तुमको रुद्र दर्शन नहीं दे रहे हैं इसका कारण उनका परम विरक्त होना है। हे पार्वती तू परम सुकुमार अंग प्रत्यंगों वाली होकर तपस्या मोहित हो गई है, मैं जो कुछ भी कह रहा हूँ वह सत्य है। हे वर वर्णिनी ! अब तुम्हें तप का त्याग कर देना चाहिए, ऐसे गुरुदेव से तुम्हारा मनोरथ कैसे पूरा होगा जिसने कामदेव को भस्म कर दिया

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

हो। शिवजी विकार रहित हैं इसलिए वे तुम्हें वरण करने कभी नहीं आयेंगे। हे देवी! जिस प्रकार गगन मराडल में स्थित चन्द्र को कोई प्राप्त नहीं कर सकता उसी प्रकार शिव की प्राप्ति भी परम दुर्लभ समझ लो।

पार्वती की माता मेना ने भी उन्हें बहुत समझाया। अन्य साथ आये परिवारजनों तथा सम्बन्धीगण भी समझा कर हार गये तब तपोनिरता देवी मुस्कराती हुई अपने पिता हिमवान से बोली—हे तात! हे माता मैंने पहले ही आप लोगों को कह दिया था, क्या आप उस बात को भुला बैठे हैं? इस समय पुनः सब मेरी प्रतिज्ञा को सुन लें, यह सत्य है कि महेश्वर परम विरक्त हैं और उन्होंने क्रोध में रतिनाथ को भस्म कर दिया है। अब उन्हीं भक्त वत्सल कृपालु शिव को अपनी इस तपश्चर्या से प्रसन्न एवं सन्तुष्ट अवश्य करूंगी। आप सब लोग अपने-अपने स्थान को चले जावें। भगवान

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

शंकर मुझ पर अवश्य प्रसन्न होंगे इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है । उन्हें मैं अपने तपोबल से यहां पर बुला ही लूंगी ।

हे महान भाग्य वालो ! महेश्वर मात्र तप से सेवित हो सकते हैं शैलराज की आत्मजा ने अपनी माता मेना, भाई मैनाक तथा पिता हिमाचल को इस प्रकार समझा कर मौन धारण कर लिया । सब गिरिनन्दिनी के ऐसे वचन सुन कर उनकी प्रशंसा करते हुए स्व-स्थान को चले गये । उन सब के चले जाने पर पार्वती महान तप में पुनः लग गई । उस समय उनके कठोर तपोव्रत से चराचर सन्तप्त हो उठा । सुर, असुर, यक्ष, किन्नर, चारण, सिद्ध, मुनि, विद्याधर, प्रजापति और गुह्यक सबको महान कष्ट की अनुभूति होने लगी लेकिन इसका क्या कारण है, यह कोई भी न जान सका । त्रिभुवन में कोई भी ऐसा बाकी न बचा जिसे सन्ताप न हुआ हो ।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

इन्द्रादि समस्त देवगण गुरु वृहस्पति से परामर्श कर सुमेरु पर्वत पर सर्वांग सन्ताप से व्याकुल होकर विधाता की शरण में पहुँचे। वहां प्रणाम पूर्वक विनय करके स्तुति करने लगे और कहने लगे, हे विभो! किस कारण से आप द्वारा निर्मित यह चराचर जगत सन्ताप का अनुभव कर रहा है। हे ब्रह्मा! आप ही इसका कारण एवं उपाय हमें बतलाइये। हमारा सारा शरीर सन्ताप की अग्नि से जल-सा रहा है। आपके सिवा हमारी रक्षा करने वाला अन्य कौन है। ब्रह्मा जी ने उनकी दीन वाणी सुनकर शिव का स्मरण करके विचार किया कि यह पार्वती की उग्र तपस्या का परिणाम है। यह बात जानकर विधाता सबको लेकर क्षीर सागर पर पहुँचे और प्रणाम करके समस्त वृतान्त कह सुनाया।

वहां नारायण की सेवा में प्रणाम पूर्वक स्तुति करके देवगण बोले--हे नारायण! हम

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

पार्वती की तपश्चर्या से सन्तप्त होकर आपकी शरण में आये हैं आप हमारी रक्षा कीजिए। देवताओं के वचन सुनकर भगवान रमापति बोले कि गिरिजा की उग्र तपस्या का कारण हमें ज्ञात हो गया है, अब आप सबके साथ हम महेश्वर के स्थान पर चलते हैं। हे देव-वृन्द! वहां हम महेश्वर से पार्वती के पाणि-ग्रहण की बात करेंगे। इस पाणिग्रहण के कर लेने से समस्त लोकों का परम कल्याण होगा। महेश्वर पार्वती को जैसे भी वरदान देना चाहें हमें वैसा ही प्रयत्न करना चाहिए। अब हमें वहीं चलना चाहिए जहां महाप्रभु अपनी उग्र तपस्या में रत हैं। ब्रह्मा जी के ऐसे वचन सुन-कर सब देवता कहने लगे कि हम उन महादेव से अत्यन्त भयभीत हैं क्योंकि उन्होंने अकारण ही कामदेव, रतिनाथ को भस्म कर दिया था।

हम उन महाक्रोधाविष्ठ कालानल के समान कान्ति वाले शिव से अत्यन्त डरे हुए

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

हैं। अतः महायुक्त हम उनके समीप नहीं जायेंगे। तब नारायण ने कहा—हे देववृन्द! तुम मेरे वचनों को सत्य समझो और ध्यान-पूर्वक सुनो, वे तो सदा देवों को भयरहित करने वाले हैं, तुम सब मेरे साथ उनके समीप चलो। आप मन में यह धारण करो कि शिव परम कल्याणकारी, सर्वाधीश्वर, परात्पर, वरेण्य-स्वरूप, उग्र तपस्वी और परमात्मा रूप हैं। हरि के इस प्रकार समझाने पर सब देवता महेश्वर की शरण में उनके दर्शन की इच्छा लेकर पहुँचे।

मार्ग में विष्णु आदि देवों ने भगवती शैलात्मजा की तपोभूमि के दर्शन किये तथा उनके कठोर तप को देखा। सर्वप्रथम महेश्वर के निकट नारद जी पहुँचे और उन्हें प्रसन्न मुद्रा में देखकर उन्होंने सब देवताओं को भी बुला लिया। वहां विष्णु आदि सब देवताओं ने मन्मथ का मथन करने वाले, प्रसन्न मुख

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

एवं भक्तवत्सल शंकर जी के दर्शन किये। उस समय शिवजी योगासन पर स्थित थे तथा चारों ओर गण घेरे बैठे थे। उस समय भगवान विष्णु ने उन्हें प्रणाम कर वेद तथा उपनिषदों के सूक्तों से उनकी स्तुति की। देवताओं ने कहा, काम को भस्म करने वाले, उज्जवल कान्ति से पूर्ण तीन नेत्र वाले, परम स्तुति के योग्य देव शंकर भगवान को हम सबका प्रणाम स्वीकार हो। आप समस्त लोकों के स्वामी, माता-पिता और ईश्वर हैं, हे महेश्वर! आप त्रिभुवन के विधाता और रक्षक हैं, आप शम्भु-ईश तथा शंकर और दया करने वाले हैं अतः आप हमारी रक्षा करें। आपके अतिरिक्त और कौन हमारी रक्षा करने में समर्थ है।

देवगणों के ऐसे दीन वचन सुनकर नन्दिकेश्वर महेश से विनय पूर्वक बोले—हे सुरेश्वर! असुरों की दी हुई पीड़ा से परम व्याकुल होकर विष्णु आदि समस्त देवता, मुनिवृन्द और सिद्ध

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

लोग आपकी शरण ग्रहण करना चाहते हैं, हे दीनबन्धो ! अब आपको इनकी रक्षा करनी चाहिए क्योंकि आप तो विशेष रूप से भक्त वत्सल कहे जाते हैं। नन्दिकेश्वर की ऐसी प्रार्थना सुनकर ध्यानावस्था में शंकर ने शनैः-शनैः अपने नेत्र खोले तथा समाधि से जाग्रत होकर देवताओं से बोले—हे देववृन्द ! तुम हरि, ब्रह्मा आदि सब हमारे पास किस कारण उपस्थित हुए हैं। भगवान शिव के ऐसे आज्ञा वाले वचन सुनकर सब देवता विष्णु के मुख की ओर देखने लगे। परम हितैषी हरि ने देवताओं के महान कार्य को पूर्ण करने के लिए भगवान रुद्र से निवेदन किया—हे शंकर ! तारकासुर से देवताओं को भारी कष्ट पहुँच रहा है। उसी के निवारणार्थ सब आपकी सेवा में आये हैं।

हे भगवान ! आपके वीर्य से उत्पन्न पुत्र ही उस असुर का वध कर सकेगा यह मेरा

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

वचन मिथ्या नहीं है। हे महेश्वर! मेरी इस प्रार्थना पर आप विचार करिए। हे शंकर! गिरिराज हिमवान अपनी आत्मजा को आपकी वधु रूप में देने को तैयार है। आप उनका दक्षिण कर से पाणिग्रहण करिये। भगवान विष्णु के वचन सुनकर योगपरायण शिव बोले—जब परम सुन्दरी गौरी मेरे द्वारा अंगीकृत की जायेगी तो सभी मुनि, ऋषि एवं देववृन्द सकाम होकर परमार्थिक मार्ग की सामर्थ्य खो बैठेंगे। क्योंकि पाणिग्रहण होने पर वही दुर्गा भस्मीभूत रतिनाथ को पुनः जीवित करा लेगी। मैंने तो ब्रह्मा जी के कहने से सबके कल्याण के लिए कामदेव को भस्म किया था। हे विष्णु देव! इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है।

हे विष्णो! कामदेव को भस्म कर मैंने सब देवताओं का ही कार्य किया था। जैसे मैं इस समय हूँ वैसे ही समस्त देवगण भी काम वासना से मुक्त होकर स्थिर रहें तथा जैसे मैं

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

तपोनिरत हूँ वैसे ही आप सब भी तपश्चर्या में मग्न रहें। हे विष्णो ! हे विधाता ! हे हेमेन्द्र ! हे मुनिगण ! हे देववृन्द ! उस परम शक्तिशाली रतिनाथ ने इन्द्रादि समस्त देवों की जो दशा की थी उसको भली प्रकार विचार कर लो। उसने पहले भी सबका ध्यान नष्ट किया था। नरक का द्वार काम ही है। काम के द्वारा ही क्रोध की उत्पत्ति हुआ करती है, क्रोध से मोह, मोह से स्मृति और भ्रम से बुद्धि का नाश होकर तप का नाश हो जाता है। हे देवगण ! आप सब मेरी इस उपदेश पूर्ण बात का विचार कर लें।

वृषध्वज महेश ने सबसे उत्तर की इच्छा प्रकट की और ध्यान मग्न होकर मौन हो गये। महेश्वर भगवान निरंजन, निराकार, निराभास, निर्विकार और निरामय आत्म तत्व का अपनी ही आत्मा में चिन्तन करने लग गये कि परमात्मा तत्व परात्पर, नित्यस्वरूप,

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

ममता से रहित, निर्गुण, ज्ञान द्वारा जानने योग्य और शब्द से भी परे है। समस्त जगत के स्रष्टा इस प्रकार ध्यान करते हुए परमानन्द में निमग्न हो गये। भगवान शंकर को ध्यानावस्थित देखकर विष्णु आदि समस्त देव-गण नन्दिकेश्वर से बोले--हे गणाधिप ! भगवान महेश तो समाधि में लीन हो गये अब हम क्या करें ? आप उनके सच्चे सखा और परम पवित्र सेवक हैं, जिस उपाय से वे प्रसन्न हों वह हमें बतलाइये। देवगणों की प्रार्थना सुन-कर शिव प्रिय नन्दी ने कहा—हे देवगण महेश्वर सदा भक्ति द्वारा ही वशीभूत होते हैं। शिव भक्त के वश में होकर अकार्य को भी कर देते हैं। यदि आप उनकी भक्ति नहीं कर सकते तो वापिस चले जाओ। नन्दिकेश्वर की बात सुनकर सबने कहा कि हम यही करेंगे और दीनता पूर्वक भक्ति भाव से शिव की स्तुति करने लगे।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

देवताओं ने कहा—हे करुणा सागर ! इस समय हम सब महान क्लेश में पड़ कर आपकी शरण आये हैं आप हमारा उद्धार कीजिए। बार-बार अपनी रक्षा के लिए सबने दैन्य भाव से स्तवन किया और व्याकुल होकर रुदन करने लगे। तब ब्रह्मा जी और भगवान नारायण ने शिवजी का मन द्वारा स्मरण किया तो करुणा सागर महेश्वर ने समाधि से उपराम ग्रहण किया। परम प्रसन्न शिव ने सब की ओर करुणा दृष्टि से देखते हुए कहा-हे हरे ! इन्द्रादि देवगण ! आप लोग अपना मनोरथ ब्यान करो। तब भगवान विष्णु ने कहा—हे महेश्वर आप सर्वान्तर्यामी सर्वज्ञ और अखिलेश्वर हैं, आप हमारे मन की बात जानते हैं। तथापि आपकी आज्ञा के पालन हेतु हम सब आपकी सेवा में निवेदन करते हैं कि तारक दैत्य ने ब्रह्मा जी को प्रसन्न करके यह वर प्राप्त कर लिया है कि उसकी मृत्यु आपके वीर्य से

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

उत्पन्न पुत्र के द्वारा हो। हे महेश ! उस दैत्य से हम सभी दुखी होकर आपकी शरण में आये हैं। जगदम्बा गौरी ने आप ही के लिए हिमवान के यहां जन्म धारण किया है। उस गिरिजा के उदर से उत्पन्न शिशु द्वारा ही वह दुरात्मा मारा जाना जान कर समस्त जगत को सता रहा है।

देवर्षि नारद के उपदेश पर भगवती गिरिजा अत्यन्त कठोर तपश्चर्या कर रही हैं। हे परमेश्वर ! आप उस तपोमग्न पार्वती को वर देने के लिए वहां पधारें। हे स्वामिन ! आप हम देवों के दुःख को दूर करिये। हे शंकर ! हम सबके मन में आपका विवाह देखने का उत्साह भरा हुआ है। आपने कामदेव की स्त्री रति को भी वरदान दे रखा है उसका भी समय आ गया है सो आप हमारी प्रार्थना पर उसे सत्य सफल करें। भक्त पराधीन महेश्वर ने देवगण के निवेदन को श्रवण कर मर्यादा

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

का पालन करते हुए उसी समय हंसकर कहा- हे हरे ! हे विधाता ! हे देववृन्द ! जहां तक भी बन सके मनुष्यों को भी विवाह का बन्धन उचित नहीं होता, क्योंकि यह वैवाहिक महा-निगढ़ के समान दृढ़ है। यों तो संसार में अनेक संग हुआ करते हैं, किन्तु इन सब में स्त्री का संग महाहानिकारक हुआ करता है। अन्य कुसंगों से छुटकारा मिल सकता है किन्तु इस स्त्री संग के बन्धन से छुटकारा मिलना मुश्किल है।

इस महा बन्धन में पड़े मनुष्य की वासना बढ़ती चली जाती है और जब विषयों की बाढ़ निरन्तर बढ़ी चली जाये तो मोक्ष की आशा रखना बेकार है। यदि मतिमान मनुष्य सच्चा सुख चाहता है तो उसे सविधि विषयों का त्याग कर देना चाहिए। यह विषय विष के तुल्य प्राणी को मारने वाला हुआ करता है। विषयी पुरुषों के साथ वार्तालाप करने से क्षण मात्र

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

में तपोनिरत व्यक्ति का पतन हो जाता है। हे महेन्द्र ! महामनीषी आचार्यों ने विषयों को मिश्री से मिश्रित साक्षात सुरा कहा है। यद्यपि मैं विषयों के बुरे प्रभाव एवं कुपरिणामों को जानता हूं तो भी मैं अब तुम्हारी प्रार्थना को सफल करूंगा। मैं भक्तों के अधीन होकर उनके कहे अनुसार सब कुछ करता हूं। जो त्रिभुवन में शक्तिशालियों से भी असाध्य कार्य हैं उन महान तथा अनुचित कार्यों को करने में मैं प्रख्यात हूँ। मैं त्र्यम्बकात्मा सुख को पाने वाला होने के कारण अपने भक्तों को सताने वाले दुरात्माओं को विशेष रूप से कष्ट एवं शाप दिया करता हूँ। भक्त वत्सलता भाव के हेतु ही देवहित के लिए ही मैंने महाकाल कूट विष का पान किया था। हे देवगण ! आपके कष्ट तो मैं सर्वदा यत्न से दूर करता

१३६ हूँ।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

भक्तजनों के हितार्थ मैंने अनेक बार

विविध कष्टों को सहन किया है। गृहाति होकर मैंने विश्वानर मुनि का दुःख निवारण किया था। हे हरे! हे विधाता! मेरे भक्तों पर जिस समय विपत्ति आ पड़ती है मैं उसी समय तत्काल उसे दूर कर देता हूँ मुझे ज्ञान है कि तारकासुर आप सबको बड़ा कष्ट दे रहा है, मैं तुम्हारी उस पीड़ा का हरण अवश्य ही करूंगा। यद्यपि मुझे विषय वासना में लिप्त होकर विहार करने की इच्छा कदापि नहीं है तो भी पुत्रोत्पादन के लिए मैं गिरिजा से विवाह करूंगा। हे देववृन्द! आप सब लोग भयरहित होकर अपने-अपने स्थान को चले जाओ। मैं प्रण करता हूँ कि आपका कार्य अवश्य करूंगा। इतना कहकर शिव मौन और समाधिस्थ हो गये।

सब ऋषिगण हिमालय के पास गये और उन्हें अपनी पुत्री को शिव के साथ विवाह करने को कहने लगे। मुनिवृन्द की बात सुन-

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

कर शैलराज ने अपने परिवार जनों से विचार विमर्श किया तथा उनके निर्णय को ऋषियों को बतलाते हुए कहा—इस गिरिजा का संसार में अवतीर्ण होना तो शिव के लिए ही है। यह तो देवों का कार्य करने के लिए ही समुत्पन्न हुई हैं, उसने शंकर को ही पति रूप में पाने के लिए घोर तप किया है। आप सप्त-ऋषियों की कृपा से मुझे रुद्राणी और शंकर का पवित्र चरित्र ज्ञात हुआ है। मैं भली-भांति समझ गया हूं कि मैं, मेरा परिवार और समस्त चराचर जो कुछ भी है समस्त महेश्वर का ही है। यह कहकर और अपनी आत्मजा को वस्त्राभूषणों से समलंकृत कराकर ऋषियों की गोद में बिठा दिया और शैलाधिप बोले कि मेरी यह आत्मजा शिव की सेवा में समर्पित है।

हिमवान् की बात सुनकर ऋषियों ने

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

कहा—आप दानदाता, भगवान शंकर ग्रहीता

करने वाले और पार्वती शिक्षा स्वरूप है इससे अधिक सर्वोत्तम कार्य क्या हो सकता है। हे हिमाचल ! आप अपने समुदाय में परम धन्य हो यह कहते हुए पवित्रान्तःकरण वाले ऋषियों ने जगदम्बा को आशीर्वाद दिया कि हे गिरिनन्दिनी ! तुम भगवान शिव को सुख की देने वाली होओ। तुम्हारा कल्याण होगा और शुक्लपक्ष के चन्द्रमा की तरह तुम्हारी श्री वृद्धि होगी। फिर चतुर्थ दिन उत्तम लग्न में सभी सन्तुष्ट होकर भगवान शंकर के समीप पहुँचे वहां जाकर उन्हें सादर प्रणाम किया और अनेक सूक्तों से उनकी स्तुति की फिर वशिष्ठादि ऋषिगण महेश्वर से बोले—हे देवाधिदेव ! शैलराज ने अपनी पुत्री को वाग्दान द्वारा आपको देने का निश्चय किया है। हे महेश्वर ! अब आप अविलम्ब हिमवान् के यहां पधार कर रीति पूर्वक पार्वती को पत्नी रूप में स्वीकार करिये।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

भगवान महेश ने अपने समस्त गणों को बुलाकर आज्ञा दी कि कुछ गण तो यहां रहें, बाकी सभी गण इस महान उत्सव में भाग लेने को हिमाचल के यहां चलें। गणराज शखकर्ण अपने साथ एक करोड़ देवगण गणाधिपति दस करोड़ तथा गणेश्वर आठ करोड़, विकृत गण लेकर चले। गणनायक विशाख चार करोड़, परिजात गण नौ करोड़, श्रीमान सर्वान्तक और विकृतानन साठ-साठ करोड़, दुन्दुभी गणनायक आठ करोड़, कपाली गणेश्वर पांच करोड़ तथा कुराड और पर्वतक बारह-बारह करोड़ गण लेकर चले। इस तरह नन्दी आदि समस्त रुद्रगण कोटि गणों को साथ लेकर चले। हे महर्षि! अधिक क्या वर्णन करूं इस विवाह में सम्मिलित होने के लिए समस्त लोकों के निवासी बड़े प्रेम से गये।

जब गणों सहित महेश्वर पहुँचे तब शत्रुओं को भय देने वाली होकर चण्डी भी

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

वहां प्रेमपूर्वक आई। अनेक भूत और विरूपाक्षों व रुद्र गणों को पीछे कर स्वयं आगे आई। उस समारोह में डमरू की ध्वनि, भेरी की झंकार और दुन्दुभियों के निर्घोष से घोर ध्वनि चहुँ ओर व्याप्त हो गई। इससे समस्त अमंगल भाग गए और सर्वत्र जगत मंगलमय हो गया। ऐसे निर्घोषकारी गणों के पीछे उत्कंठा से युक्त देवों ने प्रस्थान किया उनके पीछे समस्त सिद्धियां तथा लोकपाल आदि ने प्रस्थान किया। इन सबके मध्य गरुड़ासीन वैकुण्ठाधिपति चले। ब्रह्माजी के साथ महासिद्धि सनकादि एवं प्रजापति भी थे। महर्षियों का समुदाय भी शिव विवाह की उत्कण्ठा लिए वर यात्रा की अपूर्व शोभा बढ़ा रहा था।

शिवजी की बारात में यातुधानी, शाकिनी, बेताल, ब्रह्मराक्षस, भूत-प्रेत, पिशाच आदि सभी परमाह्लाद प्रदर्शन करते हुए और वाद्य बजाते हुए चल रहे थे। भगवान शंकर विशुद्ध स्फटिक

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

के समान दीप्तिमान, परम सुन्दर वृषभ पर विराजमान थे। धर्म वत्सल शिव सबके साथ पार्वती के पाणिग्रहण को हिमवान् के यहां पहुँचे। गर्गाचार्यों की प्रेरणा से हिमालय अपनी पत्नी सहित कन्यादान की इच्छा से तत्पर हुए। हिमाचल ने परम प्रसन्नता के साथ अपने पुरोहित के साथ अर्घ्य-पाद्य और चन्दन वस्त्रादि देकर वर का वरण किया। श्रेष्ठ लग्न में विधि-विधान के अनुसार अपनी कन्या का दान करके गिरिश्रेष्ठ बोले—हे सर्वेश्वर, अब इसे आप अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार कीजिए।

जब हिमवान ने वेद मन्त्रों के साथ अपनी कन्या का दान कर दिया तो शिव ने परम प्रसन्नता से जगज्जननी गिरिजा का पाणिग्रहण कर लिया। फिर लौकिक गति का प्रदर्शन करते हुए शंकर ने भूमि का स्पर्श करते हुए 'कोदात कारतादांत' इत्यादि मन्त्र का

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

उच्चारण किया। इस समय सर्वत्र परमानन्द को प्रदान करने वाला महान उत्सव मनाया गया। सभी लोग 'साधु-साधु' और नमः शब्द का उच्चारण करने लगे। गिरिजा ने दहेज में रत्नों से जड़ित पात्र एवं बहुमूल्य रत्न प्रदान किए। लाखों दूध वाली गौ, सुसज्जित अश्व एवं गिरिनन्दिनी में सौहार्द्र रखने वाली परि-चारिकाएं, हाथी एवं रथ दिए। इस प्रकार हिमवान ने उदारता पूर्वक बहुत-सा दहेज दिया। वेद के स्तोत्रों से भगवान शिव का स्तवन किया। ब्राह्मणों ने वेद मन्त्रों से भवानी का अभिषेक किया।

सप्त ऋषियों ने हिमवान के समीप उप-स्थित होकर कहा--हे गिरिराज ! आज परम शुभ दिन है अतः आज पार्वती की विदाई कर दो। विदाई की बात से हिमवान व्याकुल हो गए किन्तु चेतना प्राप्त करके बोले ऐसा ही होगा और अन्तःपुर में इस आशय की

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

खबर भिजवा दी। महारानी मेना ने अनेक रत्नाभूषण पुत्री को प्रदान किए तभी महारानी का हार्दिक विचार समझ एक ब्राह्मण पत्नी गिरिजा को पतिव्रत धर्म समझाने लगी। द्विज पत्नी बोली–हे पार्वती ! संसार में पतिव्रता नारी ही सबको पवित्र करने वाली और पापों को नाश करने वाली होती है। हे शिवे ! जो नारी अपने स्वामी को ही परमेश्वर समझ कर उसकी बड़े प्रेम से सेवा करती है वह यहां समस्त सुख भोगकर अन्त में पति लोक का लाभ प्राप्त करती है। नारियों में उदाहरणीय पतिव्रता सावित्री, अरुन्धती, शाण्डिल्या, लोपामुद्रा, शतरूपा, लक्ष्मी और शती आदि कही जाती हैं इनके अतिरिक्त अन्य भी बहुत-सी पतिव्रता हैं विस्तार भय से मैं इनका वर्णन नहीं करना चाहती। पतिव्रत धर्म के कारण ही ये सब संसार में वन्दनीय और मान्य हो गईं। इनका ब्रह्मा, विष्णु, महेश तथा महर्षियों ने भी

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

सम्मान किया है। मेरे कथन का सार यही है कि तुम भी अपने पति शंकर की भक्ति भाव से सेवा करती रहना। ये सत्पुरुषों के उद्धारक तथा समस्त चराचर के द्वारा सेवित हैं।

पतिव्रत धर्म का महत्व श्रुतियों, स्मृतियों में विशद रूप से लिखा है। अपने स्वामी के भोजन कर लेने के पश्चात् पतिव्रता को भोजन ग्रहण करना चाहिए। पतिदेव के शयन के पश्चात् शयन करना और पति से पहले शैया का त्याग कर देना चाहिए। सदा निश्चय भाव से पति की प्रिय बन कर सेवा करे तथा पति का हित चिन्तन करती रहे। जब स्वामी विदेश को गए हों तो शृङ्गार न करे, अपने पति का नाम न ले, स्वामी के कटु और तिरस्कार भरे वचन सुनकर भी उलटा जवाब न दे। पति के बुलाने पर तुरन्त अन्य कार्य छोड़कर जाना चाहिए। पतिव्रता को घर के द्वार पर अधिक देर तक नहीं रहना चाहिए। दूसरों के घर में

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

बिना आज्ञा न जावे बिना पति आज्ञा के तीर्था-टन को भी न जावे। पति का चरणोदक ग्रहण करने से पत्नी को समस्त धाम, क्षेत्र और तीर्थों का पुण्य प्राप्त हो जाता है। पतिव्रत धर्म की मर्यादानुसार सदा देव, पितरगण और अति-थियों को प्रथम भोजन देकर स्वयं करना चाहिए। घर की समस्त सामग्री का संग्रह करने का कौशल आना चाहिए तथा अधिक व्यय न करे।

पति आज्ञा के बिना व्रतोपवास करना निष्फल कहा गया है। सुख के साथ बैठे पति को कार्य के लिए कभी न उठाए। मासिक धर्म में तीन दिन अपना मुख न दिखावे, चौथे दिन शुद्ध होकर सर्वप्रथम पतिव्रता अपने स्वामी के दर्शन करे। यदि पति कहीं अन्यत्र गया हो तो सूर्य के दर्शन करे। मंगलमय वस्त्राभूषण धारण करे, ताम्बूल आदि का सेवन करे। धोबिन, व्यभिचारिणी संन्यासनी तथा पति से छूटी

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

रखने वाली स्त्री से मित्रता न करे। एकान्त में अकेली न रहे, बिल्कुल नग्न होकर स्नान न करे। हे देवी! इस प्रकार पतिव्रता नारी को सबकी हितकारिणी होना चाहिए। सुख और दुःख दोनों समय में समान भावना रखते हुए धैर्य धारण करके सर्वदा पति को प्रसन्न करने वाली बनकर सती नारी को रहना चाहिए। स्त्री के लिए उसका स्वामी ही ब्रह्मा, विष्णु, महेश से भी कहीं विशेष कहा गया है। स्त्री के माता-पिता, भाई और पुत्रादि सब सीमित सुखों के देने वाले होते हैं किन्तु पति उसे अपरिमित सुख देने वाला होता है।

हे देवी! जो दुष्ट बुद्धि वाली नारी अपने पति को छोड़ कर अन्य पुरुष के समीप एकान्त में जाती है वह वृक्ष की खोंतर में उलूकी बनकर निवास करती है। पति के प्रताड़ित करने पर जो पति को मारने दौड़ती है वह बाघिन और वृषदंशिका का शरीर धारण

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

करती है। स्वामी को न देकर स्वयं मिष्ठान खाने वाली ग्राम शूकरी बनती है, अपने पति को तू कहने वाली गूंगी का शरीर धारण करती है। अपने पति से आंख चुरा कर अन्य को देखने वाली कानी, बुरे मुख वाली बनती है। हे देवी ! जैसे जीवात्मा निकल जाने से मानव देह एक क्षण में ही अपवित्र हो जाता है वैसे ही अपने स्वामी के बिना स्नान करने पर भी स्त्री अशुचि ही रहती है। स्त्री अपने शील को भंग करके लोक-परलोक में दुःख भोग करती है। पतिव्रत धर्म का महत्व अनिर्वचनीय है। पतिव्रता के चरण जहां भी पड़ते हैं वहीं पापों का नाश हो जाता है।

जगत में पतिव्रता पत्नी ही गार्हस्थ्यम् और सुख का मूल है। धर्म के फल की प्राप्ति और सुसन्तति के लिए भार्या ही साधन-स्वरूप होती है। जगत में भार्या ही के द्वारा सच्चा सुख प्राप्त होता है। पत्नी के अभाव में देव,

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

पितृगण, अतिथि आदि का अर्चन एवं सत्कार तथा यज्ञ कर्म नहीं हो सकते। वैसे तो स्त्रियां सब की ही होती हैं किन्तु सही अर्थों में उसी की गृहस्थी सुखी है जिस घर में पतिव्रता नारी है। यदि पति ओंकार है तो स्त्री वेद श्रुति है। यदि स्त्री क्षमारूपिणी है तो पुरुष तपोरूप है। यदि पति फल है तो पत्नी सत्क्रिया है। हे पार्वती! जो ऐसे हैं वे स्त्री-पुरुष दोनों ही धन्य हैं।

हे गिरिजे! पतिव्रता भी उत्तम, मध्यम, अधम और निकृष्ट आदि भेद से चार प्रकार की कही गई हैं। जिसका मन स्वप्न में अहर्निश अपने पति को देखा करती है वह उत्तम, जो नारी दूसरी स्त्रियों के पतियों को अवस्थानुसार पिता, भ्राता, पुत्र के तुल्य देखती है वह मध्यम, जो नारी हृदय में अपना धर्म समझ कर व्यभिचार को बुरा कार्य मान कर बचती है वह अधम श्रेणी की तथा पति

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

और कुल के भय से तथा लोकापवाद के कारण इच्छा रखते हुए भी व्यभिचार से बची रहती है उसे ज्ञानीजनों ने अति निकृष्ट श्रेणी की पतिव्रता कहा है। हे दुर्गे ! ये चारों प्रकार की पतिव्रताएं पापों का नाश करने वाली तथा दोनों लोकों को पवित्र करने वाली होती हैं। तुम जगदम्बा, महेश्वरी, साक्षात भगवान तुम्हारे पति हैं। तुम्हारा नाम स्मरण करने मात्र से मंगल हो जाता है। हे कल्याणि ! यद्यपि जगत् स्वामिनी आपके सम्मुख ऐसे उपदेशों की आवश्यकता नहीं है फिर भी लोकाचार से ही मैंने यह सब कहा है।

———

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

७

कुमार कार्तिकेय द्वारा तारकासुर का वध

कुमार कार्तिकेय ने वीर शत्रु का नाश करने वाले वीरभद्र का निर्वाय कर भगवान शिव के चरण कमलों का स्मरण किया और मन में तारकासुर का वध करने का संकल्प किया। महाबली और परम तेजस्वी कुमार कार्तिकेय को भारी क्रोधावेश हो गया और बड़ी भारी सेना लेकर युद्ध करने को चल दिये। उस समय समस्त देवगण जय-जयकार करने लगे तथा ऋषिगण श्रेष्ठ वाणी से स्तुति का गान करने लगे। तारका सुर और कुमार कार्तिकेय का भयंकर युद्ध प्रारम्भ हुआ, जो कि समस्त चराचर को भयभीत करने वाला था।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

संग्राम भूमि में वे दोनों वीर शक्ति लेकर ऐसा युद्ध करने लगे कि समस्त देवता परमाश्चर्य करने लगे। उस समय दोनों का शरीर शक्ति के प्रहारों से छिन्न-भिन्न हो गया था किन्तु वे दोनों एक दूसरे पर निरन्तर प्रहार कर रहे थे। दोनों वीर वैतालिक और खेचर मत वाले मन्त्रों के द्वारा संग्राम कर रहे थे।

दोनों वीर ही एक दूसरे के शिर, कराठ, उरु, जानु, कटि, वक्षस्थल तथा पृष्ठ भाग में प्रहार कर रहे थे। दोनों के हृदय में एक दूसरे के वध की प्रबल इच्छा थी। समस्त देव समुदाय और गन्धर्व आदि इस अभूतपूर्व भीषण संग्राम को देखकर, किसकी विजय होगी, ऐसी चर्चा करते थे। सभी देवों के सन्देह के निवारणार्थ आकाशवाणी हुई कि कुमार कार्तिकेय के द्वारा ही तारक दैत्य का वध निश्चित रूप से होगा। आप लोग चिन्ता मत करो। सुख पूर्वक रहो, तुम्हारे कल्याण

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

के लिए भगवान शिव ही यहां पुत्र रूप में उपस्थित होकर युद्ध कर रहे हैं। उस समय महाबाहु कुमार ने तारक की छाती में बड़े क्रोध पराक्रम से शक्ति का प्रहार किया, किन्तु उस प्रहार के बदले में तारकासुर ने कुमार पर प्रहार किया और कुमार मूर्छित हो गये तब महर्षियों ने स्तवन किया और वे क्षण भर में ही संभल गये। मदोन्मत्त सिंह के समान गर्जना के साथ प्रतापी कुमार कार्तिकेय ने तारक पर प्रहार किया। उस समय संग्राम की प्रबलता के कारण वायु का चलना बन्द हो गया। भास्कर कान्तिहीन हो गये। समस्त वन कानन सहित पर्वत एवं पृथ्वी भी चलायमान हो गई। शिव पुत्र कुमार ने उन्हें सान्तवना देकर कहा—हे महाभागो! आप लोग मन में खेद और चिन्ता मत करो मैं अभी कुछ क्षणों में इस दुरात्मा तारकसुर का वध कर दूंगा।

तब कुमार ने शैलराज, देवगण, भगवान

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

शंकर सहित जगत माता पार्वती को प्रणाम कर परम प्रभावशाली शक्ति को ग्रहण किया तथा लोक को क्लेश देने वाले तारक पर बहुत तेजी से प्रहार किया। उस प्रहार से तारक जो कि महाबली, असुरों का अधिपति था, विदीर्ण होकर भूमि पर गिर पड़ा और नाश को प्राप्त हो गया। उस समय वीर धर्म का पालन करने हेतु कुमार ने कोई प्रहार नहीं किया। महाबली तारक, जो कि दैत्यों का नायक था, के मरने के पश्चात देवताओं ने अन्य असुरों का सहज ही संहार कर दिया। उस समय सहस्रों काल कलवित हो गये, कुछ छिन्न-भिन्न अंग वाले होकर भाग गये तथा कितने ही भयभीत होकर युद्धस्थल में दीनता प्रदर्शित करने लगे। कुमार की शरण में जाकर 'रक्षा करो' ऐसी प्रार्थना करने लगे।

जब महेश्वर ने विजय का संवाद सुना तो स्वयं समस्त गणों और प्रिया भवानी को

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

लेकर कुमार के समीप गये। भास्कर के तुल्य कान्ति वाले पुत्र कार्तिकेय को मां पार्वती ने गोद में बिठा लिया और स्नेह से लाड़ करने लगीं। उसी अवसर पर हिमवान भी समस्त परिवार के सहित उपस्थित हुए तथा पूज्य शंकर अपनी पुत्री तथा दोहते कुमार की प्रशंसा करने लगे। समस्त देवगण, ऋषि-मुनि विद्याधर, गन्धर्व और सिद्ध चारण आदि ने भी प्रसन्न होकर शिव-शिवा और शिवकुमार की स्तुति की। चारों ओर विशेष वाद्यों का वादन होने लगा, जय-जयकार और नमो नमः की तूमुल ध्वनि से आकाश गूंज उठा। ब्रह्मा जी और लक्ष्मी पति भी वहां गये और कुमार के साहस की प्रशंसा की। इसके अनन्तर विधाता, विष्णु, महेन्द्र आदि समस्त देवों ने कुमार को आगे बिठा कर उनकी आरती की। वेद ध्वनि, गायन, वादन और यश कीर्तन आदि के द्वारा यह महान उत्सव मनाया गया। उस समय गान

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

वादन के साथ बद्धाञ्जलि देवों से सन्तुष्ट होकर भगवान शिव प्रसन्न होकर कैलाश पर चले गये।

एक समय बाणासुर से उत्पीड़ित होकर क्रौंच नामक पर्वत ने कुमार की शरण में उपस्थित होकर प्रार्थना की–हे कुमार, हे स्कन्द ! मैं बाणासुर के कारण अति पीड़ित हूँ, आपकी शरण में आया हूँ, आप मुझ दीन हीन की रक्षा करिये। हे नाथ ! तारक वध के समय वह आपसे घबराकर भाग गया था, अब वह मुझे सता रहा है। विभो ! आप तो दुष्ट दैत्यों के संहार करने वाले हैं और अपने ही तेज से प्रकाशित होकर देवों की रक्षा करने वाले हैं। आप उस दुरात्मा का वध करके मुझे सुख प्रदान कीजिए। क्रौंच के दीनतापूर्वक वचन सुनकर तथा उन पर प्रसन्न होकर कुमार कार्तिकेय ने शिव का स्मरण करके शक्ति को हाथ में ले लिया। बाण को लक्ष्य बनाकर

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

उसका वध करने के लिए शक्ति को छोड़ दिया। उस समय शक्ति प्रयोग से समस्त दिशाएं तेज से प्रज्वलित हो उठीं तथा एक महान ध्वनि हुई।

क्षण मात्र में कुमार की शक्ति बाणासुर और उसके अनुयायी वर्ग को भस्मीभूत करके तुरन्त कुमार के पास आ गई। तब कुमार ने क्रौंच से कहा कि तुम को सताने वाला बाणा-सुर मारा गया। उसके अनुगामी भी विनाश को प्राप्त हो गये। स्वामी कार्तिकेय के ऐसे वचन सुनकर क्रौंच को परम प्रसन्नता हुई तथा वह कुमार का स्तवन करके स्व-स्थान को चला गया। इसके पश्चात परम प्रसन्न होकर कुमार ने समस्त पापों के समूह के क्षय करने वाले शिव के तीन लिंगों की स्थापना की। इन तीनों के नाम, प्रतिज्ञेश्वर, कपालेश्वर और कुमारेश्वर हुए। इसके उपरान्त अपने जय स्तम्भ के समीप में सर्वेश्वर लिंग को स्थापित

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

किया। उस जगह पर शंकर के इन सभी सुस्थापित लिंगों की अद्भुत महिमा हुई। ये सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाले तथा मुक्ति प्रदान करने वाले हैं।

जब विष्णु आदि समस्त देवों ने कुमार के साथ कैलाश गमन की इच्छा प्रकट की तब शेष जी का पुत्र कुमुद प्रलम्बासुर दैत्य से पीड़ित होकर कुमार की शरण में पहुँचा। तारक वध के समय यह दुरात्मा भागकर पाताल लोक में चला गया था और वहां उपद्रव मचाना शुरू कर दिया था। महान गतिमान शेष जी के पुत्र ने गिरिजा की शरण में आकर उनकी स्तुति की और कहा—हे देवाधिदेव महादेव के आत्मज ! हे महाप्रभो ! इस समय मैं दुष्ट प्रलम्ब की पीड़ा से सताया हुआ आपकी शरण में आया हूँ। हे स्कन्ध ! हे तारक संहारक ! कृपा करके मुझे प्रलम्बासुर की पीड़ा से छुटकारा दिलाइये। मुझ दीन की

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

रक्षा कीजिए। आप दीनों के बन्धु, दया के सागर, शरणागत के प्रतिपालक और सतपुरुषों के उद्धारक हैं।

कुमुद के दीनता-भरे वचन सुनकर महाप्रभु ने तुरन्त अपनी शक्ति उठा ली। जब गिरिजा नन्दन ने प्रलम्ब का वध किया तो आकाश और दिशाएं प्रज्वलित हो गये। दस हजार के बल वाले उस दैत्य को अनुचरों सहित शक्ति भस्म करके कुमार के पास आ गई। उस समय कुमार ने कुमुद को आज्ञा दी कि तुमको सताने वाला दुष्ट दैत्य विनाश को प्राप्त हो गया है अब तुम निडर होकर अपने घर को लौट जाओ। कुमुद ने बहुत प्रकार से स्वामी कार्तिकेय की स्तुति की और सादर प्रणाम क रस्व-स्थान को चला गया। यह तारका बध की कथा पापों का क्षय करने वाली है और संसार में मनुष्यों की समस्त कामनाओं की पूर्ति कर मुक्ति एवं भक्ति प्रदान करने वाली है। कुमार

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

के इस अति उत्तम चरित्र के कीर्तन तथा श्रवण करने से अन्त में शिव लोक की प्राप्ति होगी। जो मनुष्य श्रद्धा और भक्ति भावना से कुमार के इस दिव्य कीर्ति का वर्णन-श्रवण करेंगे तो उन्हें दिव्य मोक्ष का लाभ होगा।

गणेश के प्रथम पूज्य होने की कथा

ब्रह्मा जी से ऋषि श्रेष्ठ अरज ने पूछा कि हे विधाता! गणेश जी को प्रथम पूज्य क्यों माना गया? आप कृपा करके मुझे कहें। विधाता बोले—हे विपेन्द्र! परम तपस्वी महेश्वर और जगज्जननी पार्वती अपने दोनों पुत्रों की बाल लीलाओं को देखकर परम प्रसन्न रहने लगी। हे मुनिश्रेष्ठ! शिव के दोनों आत्मज परम पितृ भक्ति से युक्ति होकर अपने माता-पिता की सेवा करने लगे। इस तरह शिवा का षणमुख (कार्तिकेय) और लम्बोदर (गणेश) में आये दिन शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा के तुल्य प्रीति का

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

भाव बढ़ने लगा। एक दिन प्रेम के साथ एकांत में स्थित शिव और गौरी परस्पर विचार कर रहे थे। उनका विचार था कि उनके दोनों ही पुत्र विवाह संस्कार के योग्य हो गये हैं सो इनका विवाह करना चाहिए।

हमारे तो ये दोनों ही अतिशय प्रीति के पात्र हैं, परम प्रिय हैं। इस प्रकार कुमार और गणेश के विचार करते हुए महेश्वर गौरी सहित आनन्द मग्न हो रहे थे। जब अपने माता-पिता की इच्छा का दोनों कुमारों को पता चला तो दोनों के मन में एक साथ अपने-अपने विवाह की इच्छा उत्पन्न हुई। उन दोनों ने अपने माता-पिता के समक्ष बैठकर प्रार्थना की मेरा विवाह पहले करना चाहिए और इस तरह दोनों का विवाद बढ़ गया। जगतजननी गौरी तथा जगत पिता महेश्वर अपने दोनों आत्मजों का विवाद सुनकर लोकाचार का आश्रय लेकर विस्मय करने लगे। उन्होंने

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

विचार किया कि किस प्रकार दोनों के विवाह के विषय में निर्णय किया जाये। उन्होंने इसके उपाय स्वरूप एक युक्ति खोज ली। भवानी और महेश ने एक दिन अपने दोनों पुत्रों को बुलाकर कहा—हमने एक उपाय खोज लिया है जिससे कि तुम दोनों को सुख हो।

तुम दोनों ही हमारे परम प्रिय आत्मज हो। इसलिए समान भाव से ही प्यार के पात्र हो। हमने तुम दोनों के लिए प्रतिज्ञा की है कि जो समस्त भूमण्डल की पूर्ण परिक्रमा करके यहां पहले लौट आयेगा उसी का विवाह प्रथम करेंगे। अपने माता-पिता के ऐसे वचन सुनते ही महा बलवान कुमार कार्तिकेय पृथ्वी की परिक्रमा पूरी करने को चल दिये। परम बुद्धिमान गणेश वहीं स्थित होकर बार-बार मन में विचार करने लगे। मैं तो किसी भी तरह यह कार्य पूरा नहीं कर सकता अब क्या करूँ कहां जाऊँ? इस भूमण्डल की परिक्रमा करना तो

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

अति कठिन कार्य है। ऐसा विचार करके मतिमान गणेश जी ने एक अद्भुत उपाय सोच लिया। गणेश्वर ने स्नान आदि से शुद्ध होकर अपने माता-पिता से विनती की कि मैं पहले आप दोनों को सिंहासन पर विराजमान करके आपकी अर्चना करना चाहता हूँ सो आप मेरे समीप विराज कर मेरी यह इच्छा पूर्ण करें।

गणपति की ऐसी प्रार्थना सुनकर महेश्वर और पार्वती दोनों सिंहासन पर विराजमान हो गये। गणेश ने भक्ति के साथ उन दोनों का अर्चन कर सात बार प्रणाम पूर्वक परिक्रमा की। अब बुद्धि के सागर गणेश जी ने हाथ जोड़कर कहा–हे माता ! हे पितृदेव ! आप मेरी प्रार्थना सुनकर शीघ्र ही मेरी विवाह करें। यह बात सुनकर भगवान शंकर और गौरी गणेश से कहने लगे जिस प्रकार कुमार कार्तिकेय भूमण्डल की परिक्रमा करने गये हैं वैसे

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

ही तुम भी पर्वत कानन सहित भूमण्डल की प्रदक्षिणा करके शीघ्रता से आओ। अपने माता-पिता के ऐसे वचन सुनकर गणेश ने क्रोध पूर्वक कहा—हे माता! हे पिता! आप दोनों ही महामनीषी और धर्मस्वरूप हैं। मैंने तो एक बार नहीं सात बार समस्त भूमण्डल की प्रदक्षिणा कर ली है। इस पर भी आप मुझे पुनः परिक्रमा की आज्ञा दे रहे हैं। गणेश जी के वचन सुनकर लीलाधारी प्रभु बोले—हे पुत्र! तुमने भूमण्डल की परिक्रमा किस समय पूरी कर डाली, प्रदक्षिणा न करके भी क्यों कहते हो कि कर ली? अपने माता-पिता के वचन सुनकर महा मतिमान गणेश ने कहा— मैंने आप दोनों माता-पिताओं का पूजन कर सात बार परिक्रमा कर ली।

मैंने तो अपनी बुद्धि के अनुसार समस्त भूमण्डल की प्रदक्षिणा पूरी कर ली है। यह बात तो वेद और शास्त्र सम्मत है कि माता

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

पिता का अर्चन करने से उनकी परिक्रमा करने से भूमण्डल की प्रदक्षिणा का फल मिलता है। अब यह आप निर्णय करें कि यह बात कहां तक सत्य है। वेद और समस्त शास्त्र इस बात को कहते हैं कि माता-पिता की आज्ञा बिना जो तीर्थाटन करता है उसे उनकी हत्या का पाप लगता है। पुत्र के लिए इनकी सेवा करना ही सब तीर्थों का फल प्रदान करता है। पुत्र की स्त्री के लिए भी यही आदेश है। यदि आप यह बात नहीं मानेंगे तो लोक में यह सभी शास्त्र झूठे हो जायेंगे। साथ ही आपका यह सत्य स्वरूप भी असत्य हो जायेगा। यह निर्विवाद सत्य है।

अब आपको मेरा शुभ विवाह कर देना चाहिए या शास्त्र मर्यादा को अमान्य कर देना चाहिए। इन दोनों में से जिसे आप श्रेष्ठ समझें, उसे ही करें। महाज्ञानी गणेश्वर इतना कहकर मौन हो गये। पार्वती और महेश्वर

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

अपने आत्मज की युक्ति युक्त बात सुनकर परम प्रसन्न हुए और उनकी बढ़ाई करते हुए कहने लगे हे आत्मज ! तुम यथार्थ कह रहे हो। निश्चय ही तुम्हारी बुद्धि महात्माओं जैसी है। जो कुछ तुमने कहा है वह सर्वथा सत्य है उसमें अन्यथा कुछ भी नहीं है। भास्कर के उदय होने पर अन्धकार की भांति संकट आ जाने पर भी जिसकी बुद्धि कार्य करती है वह धन्य है। वस्तुतः जिसमें बुद्धि होती है उसी में बल होता है, बुद्धिहीन में बल नहीं रहा करता। बुद्धिमान खरगोश ने बुद्धि बल से मदोन्मत्त सिंह को कुएं में डाल दिया था। हे पुत्र ! तुमने जो कुछ भी इस समय किया उसे कोई नहीं कर सकता। हम दोनों ने तुम्हारी बात मान ली है। इस प्रकार बुद्धि के सागर गणेश जी प्रथम पूज्य बन गये।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

युद्ध के समय शंखचूड ने महान दाने-श्वर को अपना दूत बना कर शिव के पास भेजा। शंखचूड के दूत ने कोटि सूर्य के समान कान्ति वाले, स्फटिक मणि के तुल्य, ब्रह्म तेज से पूर्ण प्रकाशित एवं वटमूल में योगासन की मुद्रा में बैठे शिव के दर्शन किये। वे त्रिशूल और पट्टिश लेकर व्याघ्रचर्म धारण किये हुए हैं। भगवान शंकर विश्व के स्वामी, विश्व के बीज रूप, विश्व उत्पादक, विश्व के भरण पोषण कर्ता तथा विश्व के संहार करने वाले देव हैं। ये कारण के भी कारण, नरक रूपी समुद्र से पार करने वाले, ज्ञान के प्रदान करने वाले, ज्ञान के बीज रूप और सर्वदा ज्ञानानन्द में निमग्न रहने वाले एवं सनातन हैं। गौरी के पति त्रिलोचन परम शान्ति की मुद्रा में

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

स्थित अपने भक्तों की मृत्यु का हरण करने वाले, समस्त सम्पत्तियों के दाता और भक्तों पर शीघ्र अनुग्रह करने वाले हैं। दूत ने इस सुन्दर स्वरूप में समन्वित भगवान महेश को देखा।

रथ से उतर कर परम सुकुमार स्वरूप वाले शंकर को दानवेश्वर ने सादर प्रणाम किया। भगवान शिव के वाम भाग में भद्र काली और आगे स्कन्द विराजमान थे। काली देवी, षणमुख और शंकर जी ने लोक रीति का पालन करते हुए दानेश्वर को आशीर्वाद दिया। शंखचूड के दूत ने करबद्ध होकर प्रार्थना की–हे महेश्वर ! मैं शंखचूड का दूत होकर आपकी सेवा में आया हूँ। दूत की बात सुनकर महेश्वर बोले–हे महा पण्डित ! मेरा सन्देश सावधानी से श्रवण करके अपने स्वामी से कह देना। ब्रह्मा इस जगत के पिता और धर्म के जानने वाले, इनके पुत्र मरीचि और

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

उनके पुत्र कश्यप हुए। प्रजापति दक्ष ने अपनी तेरह कन्याएं कश्यप को दीं, उनमें एक परम प्रतिव्रता दनु नाम की कन्या थी जो कि कश्यप के सौभाग्य को बढ़ाने वाली थी। उसने चार महान दानव पुत्रों को जन्म दिया। इनमें एक विप्रचित्ति नाम का महाबली पुत्र था जिसका पुत्र अति बुद्धिमान, धर्म को जानने वाला दम्भ नाम का दानव राज था। उसके पुत्र तुम दानेश्वर ने उसके यहां जन्म लिया।

पहले तुम श्रीकृष्ण के प्रिय पार्षद एवं प्रमुख गोप थे और श्री राधिका के शाप के कारण इस योनि में आये हो। वस्तुतः तुम दानव नहीं हो। इसलिए देववृन्द के साथ वैर भाव को त्याग दो। देवताओं के साथ किसी भी प्रकार का द्रोह न रखकर अपने पद का सानन्द भोग करो। इसमें विचार पूर्वक सोचो तो कोई हानि नहीं है। हे दानवेश्वर! मेरी प्रीति के विषय में विचार कर देवताओं को

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

उनका राज्य लौटा दो और अपने राज्य में सुखपूर्वक रहो इसी में भलाई है। जब साधारण प्राणियों के साथ भी वैर-भाव रखना ठीक नहीं होता तो देववृन्द के साथ वैर भाव की बात कौन कहे। इस प्रकार श्रुति और स्मृति के अनेक सिद्धान्तों से समझा कर भगवान शंकर ने अपना ज्ञान स्वरूप सन्देश कहा। इन उपदेशों को सुनकर विनीति भाव से दानेश्वर बोला–हे देव ! आपने जो भी मुझसे कहा है वह सर्वथा सत्य है, किन्तु मेरा भी एक निवेदन है कि आपने कहा है कि जाति से द्रोह करना एक महान पाप है क्या यह मात्र असुरों के लिए ही है देववृन्द के लिए नहीं ? यदि दोनों के लिए जाति द्रोह महान पाप है तो आप मेरे सन्देह का निवारण कीजिए।

हे महेश्वर ! यदि ऐसा सभी के लिए है तो आपने मधुकैटभ का सिर चक्र से क्यों काटा

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

था जबकि अन्य कोई कारण न था। हे

गिरीश ! आपने त्रिपुरासुर के साथ किस कारण से युद्ध करके उसे भस्मीभूत कर दिया था। आपने देववृन्द का पक्ष लेकर उन्हीं का कल्याण क्यों किया था ? राजा बलि का सब कुछ लेकर भी उसे पाताल लोक भेजने का क्या कारण था ? देवताओं ने अपने सहोदर भाई सहित हिरण्याक्ष को किस कारण मार गिराया था ? समुद्र मंथन के समय दानवों ने भी घोर श्रम के साथ क्लेश भोगा था फिर अमृत का पान केवल देवों के लिए क्यों ? यह समस्त विश्व काल का एक खिलौना है। परमात्मा स्वरूप यह काल जब भी जिसको देता है उसे ऐश्वर्य प्राप्त हो जाता है। देव और दानवों में होने वाले युद्ध एवं बैर का कुछ न कुछ कारण अवश्य है तथा जय और पराजय काल के अधीन है।

आपस में इन दोनों के विरोध में व्यर्थ ही आपको नहीं पड़ना चाहिए। विरोध भाव

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

समान शक्ति वालों का ही हुआ करता है इसलिये हे शिव! आपको विरोध करना शोभा नहीं देता। आप तो देव और दैत्य सभी के स्वामी हैं, यह तो बड़े लज्जा की बात है कि आप जैसे महान आत्मा वाले हमसे वैर भाव रखें। जिस जय लाभ में बड़ी कीर्ति और हार हो जाने पर महती हानि हो वह बात आपके स्वरूप के सर्वथा विपरीत है। आप स्वयं इसका विचार मन में करें। दानवेश्वर के युक्ति युक्त वचन सुन कर महेश्वर ने हंसते हुए कहा–हे दानवेश्वर! मैं स्वतंत्र नहीं हूं सर्वदा अपने भक्तों के अधीन रहा करता हूँ। उनकी इच्छानुसार ही मुझे कर्म करने को वाध्य होना पड़ता है। मैं कभी किसी का भी पक्षपात नहीं किया करता। सर्व-प्रथम विधाता की प्रार्थना पर विष्णु भगवान ने मधु कैटभ के साथ युद्ध किया था। देवगण की दीन प्रार्थना पर ही भक्त प्रहलाद की रक्षा

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

के लिए भगवान विष्णु ने नृसिंह रूप में हिरण्याकशिप का वध किया था।

मैंने भी देवगण की अतिशय भक्ति और प्रार्थना पर त्रिपुरासुर का वध किया था। सब का वैभव और पद बलात छीनने वाले तथा देवगण को अत्यन्त कष्ट देने वाले शुंभ आदि का वध भी देव गणों की बहुत बार की प्रार्थना पर किया था। इस समय भी समस्त देवगण पहले विधाता की शरण में गए, फिर ब्रह्मा, विष्णु सहित मेरी शरण में आये, सो हे दूत! मैं हरि और विधाता की प्रार्थना पर ही युद्ध करने को तत्पर हुआ हूँ। मैं पुनः तुमको कहता हूँ कि तुम भगवान कृष्ण के पार्षद हो, अब तक जितने भी असुर मारे गए हैं उनमें तुम्हारे जैसा एक भी नहीं था। हे राजन! साथ संग्राम करने में मुझे क्या लज्जा हो सकती है। यह तो देवों का कार्य है जिसे पूर्ण करने के लिए विजय प्रार्थना करने पर मुझ ईश्वर को

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

यहां आना पड़ा। तुम शंखचूड को स्पष्ट कह देना कि उसके मन में जो आए सो करे मुझे तो देवकार्य करना ही है। यह कहकर महेश्वर मौन हो गए और वहां से दानवेश्वर भी चला गया।

वहां जाकर दूत ने भगवान शंकर से हुए वार्तालाप को शंखचूड को बतला दिया। यह सुनकर प्रतापी शंखचूड ने सप्रेम युद्ध करना स्वीकार कर लिया। शंखचूड ने अपने मन्त्रि-गणों से सलाह करके सेना को शिव के साथ संग्राम करने का आदेश दे दिया। इधर भगवान शंकर भी लीला सहित युद्ध को तत्पर हो गए। युद्ध क्षेत्र में बहुत प्रकार के वाद्यों का वादन तथा वीर योद्धाओं का कोलाहल सर्वत्र छा गया। इन्द्रदेव वृषपर्वा के साथ, भास्कर विप्रचित्ति के साथ, विष्णु दम्भ दैत्य से, कामदेव कालासु से और हुताशन गौकर्ण से युद्ध में प्रवृत्त हो गए। कुबेर कालक के भय से, [illegible]

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

कर्मा भयनायक से, मृत्यु भयंकर से, यमराज संहारक से, वरुण कालम्बिक से, पवन देव चचलासुर से, शनिदेव रक्ताक्ष से, धर्म से धुरन्धर का घोर संग्राम होने लगा। भगवान शंकर की सहायता प्राप्त करके देवताओं ने दैत्यों से घमासान युद्ध किया।

इस युद्धभूमि में देवासुरों का प्राणों का संहारक महायुद्ध हो रहा था तथा अनेक प्रकार के दिव्य आयुधों का प्रहार किया जा रहा था। गदा, पट्टिश, ऋषि, भुसुण्डी, चक्र, मुद्गर, पाश, भल्ल, परिघ, शक्ति, परशु, तोमर, शंख, तथा शतघ्नी (तोपें) आदि आयुध प्रयोग में लाये जा रहे थे। इस युद्ध में योद्धा-गण अपने शत्रुओं के शिरों का छेदन कर रहे थे। अश्व, हाथी, रथ इत्यादि नष्ट भ्रष्ट हो रहे थे। वीरों के भुज, उरु, कटि, कर तथा पैर आदि शरीर से छिन्न-भिन्न होकर भूमि पर गिर रहे थे। समस्त भूमि शरों से मधु-

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

मक्खियों के छत्तों के समान व्याप्त हो गई थी। सब तरह के बाणों के आने वाले समूह से वीर सारथी इस प्रकार ढक गए मानो मेघों के झुंड ने सूर्य को ढक लिया हो। योद्धा बड़े-बड़े शंखों को बजा रहे थे जिनकी ध्वनि से आकाश गूंज रहा था। यह सब परमेश शंकर की ललित लीला है जिसने देव, दानव एवं मनुष्य सभी को मोहित कर दिया है।

जब देववृन्द दैत्यों द्वारा परास्त होने लगे तो महेश्वर की शरण में जाकर विह्वल वाणी में कहने लगे—भगवान! हमारी रक्षा कीजिए। देववृन्द को दुखी देखकर महेश्वर अत्यन्त क्रोध में भर गए और अपने तेज से अपने गणों के बल की वृद्धि कर दी और पुत्र स्कन्द को रण में जाने की आज्ञा प्रदान की। उस समय तारक के संहारक कार्तिकेय ने घोर शब्द करते हुए दानवों की सहस्रों अक्षौहिणी सेना का संहार करना प्रारम्भ कर दिया।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

महाकाली देवी समर भूमि में दानवों के रुधिर को पान करने लगी तथा शिरों को भक्षण करने लगी। उस समय सभी ओर से दानवों के रुधिर का पान किया जाने लगा। महाकाली लीला से ही महान गणों और वीरों को उठाकर मुख में डालने लगी। महाबली कुमार ने क्रोध में भरकर बाणों के प्रहार से करोड़ों दानवों का संहार कर दिया। जो बाणों के संहार से बच गए वे क्षत-विक्षत होकर समर भूमि से भागने लगे।

इस युद्ध में स्कन्द और भगवती की जीत हुई। विजय की खुशी में स्वर्ग में दुन्दुभि बजने लगी और आकाश से पुष्प वर्षा हुई। अपनी सेना की हार को देखकर दानवेन्द्र को बड़ा दुःख हुआ और वह ऐसे विमान पर आरूढ़ होकर रणभूमि में आया जिस पर विविध प्रकार के शस्त्रास्त्र रखे हुए थे। दानव-राज के साथ असंख्य वीर थे वह कान तक

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

धनुष की प्रत्यंचा को खींचकर बाणों की वर्षा करने लगा जिससे महान अन्धकार छा गया। नन्दीश्वर आदि सभी को साथ लेकर देवगण वहां से घबरा कर भाग खड़े हुए। वहां अकेले कार्तिकेय जी रह गए। शंखचूड ने देव सेना पर पर्वत, सर्प, नाग और वृक्षों की दुनिवारणीय वृष्टि की। इससे शिव पुत्र परम व्यथित और पीड़ित हुए। कुहरे के समय में जैसे भास्कर भासता है वैसे ही दोनों वीर दिखाई पड़ रहे थे।

इस समय दानवों के राजा शंखचूड ने माया प्रकट की जिसे देवगण और शिवगण कोई भी न जान सका। मायाधारी शंखचूड ने अपने एक ही बाण से स्कन्द के धनुष का छेदन कर दिया, वाहन मयूर को भी बाण वर्षा से जर्जर कर दिया और सूर्य तुल्य एक घातक शक्ति का कुमार पर प्रहार किया जिससे कुमार मूर्छित हो गए। थोड़े समय के पश्चात

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

अपनी चेतना लौटा कर महारत्न निर्मित वाहन पर आरूढ़ हो गए तथा अपनी माता के सहित पिता श्री शिव का ध्यान कर घोर संग्राम करने लगे। उन्होंने दानवेन्द्र के चलाये पर्वत, नाग, सर्प इत्यादि को अपने दिव्य अस्त्र-शस्त्रों से छेदन कर दिया। मेघास्त्र चलाकर शंखचूड द्वारा प्रसारित अग्नि को शीतल कर दिया। कुमार ने असुरेन्द्र के कवच, किरीट, वाहन रथ आदि का छेदन कर भीषण गर्जन किया। तथा एक अत्यन्त जाज्वल्यमान शक्ति मारकर असुर को अचेत कर दिया।

काफी समय बाद चेत में आकर असुर ने घोर संग्राम किया और कुमार पर भीषण प्रहार किया। कुमार ब्रह्मा जी के वचन की लाज रख कर भूमि पर अचेत होकर गिर गए। महाकाली ने उन्हें गोद में बिठा कर शिव के समीप पहुँचा दिया। भगवान शंकर ने लीला से ही उन्हें चेतना दे दी। रणभूमि में गणेश्वर

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

वीरभद्र असुरेन्द्र से युद्ध करने लगा। शंख की एक भयंकर शक्ति के आघात से वीरभद्र भी अचेत हो गया। महाकाली वहां आकर नन्दीश्वर आदि योद्धा, देव, गन्धर्व, यक्ष, पन्नग के साथ जो कि अनेक पात्र लिए हुए थे दानवों का भक्षण और रक्तपान करने लगी। काली के सिंहनाद से दानवों को मूर्छा आने लगी। काली मधुपान करती समरभूमि में नृत्य करने लगी। काली को वहां आया देख शंखचूड मैदान में आ गया और जो दानव व्याकुल हो गये थे उन्हें अभय देने लगा। काली देवी ने प्रलयकालीन अग्नि के तुल्य शक्ति से असुरेन्द्र पर प्रहार किया जिसे उसने वैष्णव अस्त्र से तुरन्त शान्त कर दिया।

जब नारायणास्त्र का प्रहार किया गया तो दानवेन्द्र भूमि पर गिर गया और उसे प्रणाम करने लगा। वह अस्त्र दैत्य राज की विनम्रता देखकर निवृत्त हो गया। अब काली

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

ने मन्त्रपूर्वक ब्रह्मास्त्र को छोड़ा तो दानवेन्द्र ने भूमिगत हो उसे प्रणाम किया और वार से बच गया। अब शंखचूड महाक्रोध में भरकर विविध अस्त्र-शस्त्रों से महाकाली पर वार करने लगा तो महाकाली ने अपना मुख फैला दिया और समस्त शस्त्रों का भक्षण कर लिया। इससे सभी दैत्य भयभीत हो उठे। शंखचूड ने वैष्णवास्त्र से देवी पर प्रहार किया जिसे महाकाली ने महेश्वरास्त्र से निरस्त कर दिया। क्रोध में भरकर महाकाली ने अमोघ पशुपति अस्त्र को मन्त्रों द्वारा अभिमन्त्रित करके जैसे ही प्रहार करना चाहा कि आकाशवाणी हुई हे देवी! इस अस्त्र के प्रयोग से यह दानव नहीं मारा जा सकता, हालांकि ये अमोघास्त्र है। यह जानकर काली ने अस्त्र का प्रहार न करके असुरों का भक्षण करना प्रारम्भ कर दिया। दानवराज ने उत्तम से उत्तम अस्त्रों का प्रयोग काली पर किया किन्तु भगवती ने उन्हें

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

पकड़कर क्रोधपूर्वक खा लिया। फिर आकाश-वाणी हुई—हे देवी। इस संग्राम में शंखचूड के वध करने का विचार त्याग दो। यह निश्चित बात है कि यह तुम्हारे द्वारा वध नहीं किया जायेगा। हे चण्डिके ! अभी समर भूमि में अनेक दानवों का रक्तपान होना शेष रह गया है सो हे ईश्वरि ! इनको तुम शीघ्रतातिशीघ्र भक्षण कर डालो। भगवती ने सानन्द दैत्यों के रक्त का पान एवं उनका भक्षण किया और भगवान शंकर के पास जाकर युद्ध का सब वृतान्त सुनाया।

महाकाली से वृतान्त सुनकर महेश्वर अपने गणों सहित युद्ध भूमि जाने को तत्पर हो गए। शिव ने वृषभ पर सवारी की तथा अपने ही तुल्य भैरव और क्षेत्रपाल साथ लेकर वीर-भद्र से संयुक्त रणभूमि में गए। शिवजी को वहां आया देख दानेश्वर ने मस्तक झुकाकर प्रणाम किया। सौ वर्ष तक निरन्तर शिव और

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

करने लगे हे अम्बा ! देवाधिदेव महादेव ने मेरा सृजन किया और समस्त विश्व को रचा है। मैंने भी सृष्टि रची है किन्तु हे शिवे ! इनके पुनः-पुनः सृजन करने पर भी कुछ वृद्धि नहीं हो रही है। अब इसके आगे मैथुन द्वारा उत्पन्न होकर जन्म ग्रहण करने वाली सृष्टि को सृजन करने की इच्छा है ताकि यह प्रजा बढ़े। अब तक नारी कुल का प्राकट्य नहीं हुआ था।

मेरे पास इसके सृजन की शक्ति नहीं थी। हे जगज्जननी ! सब शक्तियों का उद्भव आपके द्वारा ही होता है। सो हे महेश्वरी ! मेरी आपसे करबद्ध प्रार्थना है कि इस नारी कुल की सृजन शक्ति मुझे प्रदान करें। मेरा आपको बारम्बार प्रणाम है। एक उत्तम शक्ति के द्वारा हे जगत की माँ ! समस्त चराचर की वृद्धि के लिए आप मेरे पुत्र दक्ष की कन्या बन जायें। इस प्रकार विधाता की प्रार्थना पर

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

भगवती ने कहा–ऐसा ही होगा। भवानी ने शक्ति के द्वारा अपनी भृकुटी के मध्य भाग से अपने ही सदृश कमनीय कान्ति वाली एक अन्य नारी को प्रकट कर दिया। कृपा के सागर लीलाधारी भगवान शिव ने उस शक्ति को देखकर जगत की माता से कहा–हे महेश्वरी! आप विधाता की तपस्या से परम सन्तुष्ट हो गई हो। अतः इनके सभी मनोरथों को पूर्ण करो। भगवान शिव की आज्ञा को मानकर भवानी की अंश शक्ति ने दक्ष पुत्री होना स्वीकार कर लिया और भवानी पुनः शिव में समाहित हो गई। इस प्रकार ब्रह्मा जी ने मैथुनी सृष्टि की रचना की। शिव का यह अत्यन्त श्रेष्ठ स्वरूप परममंगल प्रदाता है। जो इस कथा का पाठ करता है वह सब भोग-भोग कर मोक्ष पाता है।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

शिव के इन बारह ज्योति लिंग अवतारों के पीठ स्थान इस प्रकार हैं--केदारनाथ-हिमालय, भीमशंकर-डाकिनी, विश्वनाथ-काशीपुरी, त्र्यम्बकेश्वर-गोमती के तट पर, सोमनाम-सौराष्ट्र में, मल्लिकार्जुन-शैल, महाकालेश्वर-उज्जयिनी, अमरनाथ-ओंकार (कश्मीर), वैद्यनाथ-चिता भूमि, नागेश्वर-दारूकवन, रामेश्वर-सेतुबन्ध, घुश्मेश्वर-शिवालय में। भगवान शिव के उपरोक्त ज्योतिर्लिंग दर्शन एवं स्पर्श करने पर सुख सौभाग्य तथा परमानन्द प्रदान करते हैं। इन सब में प्रथम सोमनाथ श्री चन्द्रदेव के दुःख को दूर करने वाले हैं। इनका पूजन अर्चन करने से कुष्ठ एवं क्षय रोग दूर हो जाते हैं। श्री सोमनाथ का अवतार सौराष्ट्र में हुआ था। इस लिंग का सर्वप्रथम पूजन चन्द्रदेव ने

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

किया था। वहां चन्द्र कुराड के नाम से एक कुराड है यहां लोग भक्ति भाव एवं श्रद्धा से स्नान करके रोगों से छुटकारा पाते हैं।

भगवान शिव का द्वितीय लिंग गिरि पर्वत पर मल्लिकार्जुन नाम से स्थापित है। पुत्र सुख के लिए इन लिंगावतार की पूजा की गई थी। इनके दर्शन से महान सुख और जप पूजन से मोक्ष की प्राप्ति होती है। अपने भक्तों को मन चाहा फल प्रदान करने में अग्रणी हैं। तीसरा लिंग उज्जयिनी में महा-कालेश्वर के नाम से स्थापित है। यहां दूषण नाम के दैत्य का वध किया था। यह दैत्य वेद एवं ब्राह्मणों का द्वेषी था। भगवान शिव ने एक हुँकार से उसे नष्ट कर दिया था। वेद नामक ब्राह्मण का पुत्र जो कि शिव का भक्त था, का वध वह दैत्य करना चाहता था। भक्त वत्सल शंकर ने अपने भक्त की रक्षा के लिए उनका मारा कर दिया। इस लिंग के दर्शन का महान

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

भगवान शिव का सप्तम ज्योतिर्लिंगावतार काशी में विश्वेश्वर नाम से हुआ। यह ज्योतिर्लिंग सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का स्वरूप है। ये मुक्ति एवं भुक्ति प्रदान करते हैं। यहां भगवान विष्णु आदि देवताओं ने उनकी स्तुति की थी। भगवान यहां भैरव रूप में भी विराजमान हैं। काशीपुरी तथा उनके स्वामी विश्वनाथ की भक्ति भाव से पूजन अर्चन करने से नाम स्मरण करने से पुरुष मोक्ष प्राप्त कर लेता है। शिव का त्र्यम्बक नाम वाला अष्टमावतार गौतम ऋषि की प्रार्थना पर गौतम नदी के तट पर हुआ। चन्द्रशेखर शिव ऋषि गौतम की प्रार्थना पर वह ज्योतिर्लिंग में स्थित होकर विराजमान हो गए। यहां भगवान त्र्यम्बकेश्वर के पूजन अर्चन से मनुष्य की सम्पूर्ण कामनाएं पूर्ण हो जाती हैं।

लंकापति रावण के हितार्थ भगवान शिव का नामावतार ज्योतिर्लिंग रूप में वैद्यनाथ के

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

नाम वाला हुआ। लंकेश्वर उन्हें अपने साथ ले जाना चाहते थे किन्तु लीलाधारी वहां (चिताभूमि) लिंगरूप में विराजमान हो गए। यह स्वरूप वैद्यनाथेश्वर के नाम से विख्यात हुआ। इनके इस रूप को पूजन तथा अर्चन करने पर पूर्ण भक्ति और मुक्ति प्रदान करते हैं। भगवान शिव का दशम ज्योतिर्लिंगावतार नागेश्वर नाम से प्रसिद्ध हुआ। यह अवतार अपने भक्तजनों की रक्षा और दुष्टों को दण्ड देने के लिए हुआ था। इस अवतार में भगवान शिव ने दारूक नामक दैत्य का वध करके अपने प्रिय शिष्य सुप्रिय वैश्य की रक्षा की थी। नाना प्रकार की लीलाएं करने वाले परम शिव जगदम्बा सहित यहां लिंग रूप में विराजे हैं। इन नागेश्वर नाम के लिंग के दर्शन-अर्चन करने से बड़े-से-बड़े पातकों के समूह भी नाश को प्राप्त हो जाते हैं।

हे द्विजो! रामेश्वरम नाम का भगवान

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

शिव का एकादशवां लिंगावतार हुआ। इस लिंग को भगवान शिव का यह रामेश्वर नामक ज्योतिर्लिंग स्वरूप भगवान रामचन्द्र जी की पूजा से अत्यन्त सन्तुष्ट होकर यहां स्थापित हुए। भगवान राम को विजय का वर प्रदान किया। सेतुबन्ध पर भगवान राम ने इनकी बहुत सेवा की थी। इस भूमण्डल पर रामेश्वर ज्योतिर्लिंग की अद्भुत महिमा है, ये मोक्ष और मन की समस्त इच्छाओं को पूर्ण करते हैं।

घुश्मेश्वर नामक भगवान शिव का बारहवां लिंगावतार हुआ। अपने भक्त घुश्मा को महान आनन्द देने के कारण घुश्मेश्वर नाम से विख्यात हुए। दक्षिण में देवशैल नामक स्थान पर प्रभु प्रकट हुए तथा अपने प्रिय भक्त को कष्ट मुक्त किया। यहां घुश्मा की प्रार्थना पर सुदेह नामक दैत्य के द्वारा मारे गए उसके पुत्रों को पुनर्जीवित किया था

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

तथा दैत्य का वध किया था। इस ज्योतिर्लिंग के जो मनुष्य दर्शन करता है वह इस लोक में समस्त भोगों का उपभोग करके मोक्ष पद प्राप्त कर लेता है।

हे मुनिवरो! मैंने आपके सम्मुख शिव के इन द्वादश नामों का (ज्योतिर्लिंग) वर्णन किया। इनके दर्शन, पूजन, अर्चन करने से भुक्ति और मुक्ति दोनों की प्राप्ति होती है। जो मनुष्य इस कलिकाल में इस ज्योतिर्लिंग कथा को सुनता है तथा सुनाता है वह समस्त पापों से छुटकर मोक्ष पद पा लेता है। यह शतरुद्र संहिता शिव के सौ अवतारों का कीर्ति स्वरूप है जो इसका श्रवण मनन करता है वह धन्य है।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

११

द्वादश ज्योतिर्लिंगों का माहात्म्य

समस्त प्रकार के विकारों से रहित, स्वकीय भुवन मोहिनी माया से सब भुवनों को धारण करने वाले तथा जगन्माता पार्वती को अपने आधे अंग में धारण किये हुए तेजोमय स्वरूप भगवान शंकर को मैं सर्वदा प्रणाम करता हूँ। जिनकी कृपा कटाक्ष से सम्पूर्ण स्वर्ग-अपवर्ग के वैभव भक्तों को प्राप्त हो जाते हैं। योगीजन जिनका सुख पूर्ण बोध अपने हृदय से करते हैं। अधिभौतिक, आध्यात्मिक और आधिदैविक इन त्रितापों का शमन करने वाले, चन्द्रदेव की कला के समान परमोज्ज्वल स्वरूप युक्त, समस्त सुखों के दाता, स्फूर्तिमान, सच्चिदानन्द स्वरूप तथा भवानी की भुजाओं

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

से आलिंगित भगवान शंकर सर्वदा हमारा मंगल करें। हे सूत जी! आपने लिंगावतारों का वर्णन किया अब कृपा करके महात्म्य का वर्णन करिए।

हे व्यास शिष्य! आप भगवान शिव के भक्तों में सर्वश्रेष्ठ और परम धन्य हैं। हे प्रभो! आपके मुखारवृन्द से सदाशिव के यशोमृत का पान श्रवण द्वारा करके हमारी तृप्ति नहीं हो रही है अतः आपसे निवेदन है कि उसे पुनः सुनाने की कृपा करें। इस भूमण्डल में जहां भी जितने शिव के ज्योतिर्लिंग स्थापित हुए हैं आपको उन सबका ज्ञान हैं सो हे व्यास रूप सूत जी! आप सब लोगों के कल्याण की कामना से उस वृतान्त को कहिए। सूतजी बोले—हे ब्राह्मणो! मुझे आपसे अति स्नेह है अतः मैं संक्षिप्त रूप में आपके समस्त कहता हूँ। भगवान शिव के सम्पूर्ण लिंगों की संख्या

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

बतला देना तो असम्भव है। उनको वर्णित

करने की सामर्थ्य किसी में भी नहीं है, क्योंकि यह समस्त भूमण्डल लिंगमय है। सभी कुछ लिंग से प्रतिष्ठित एवं लिंग में ही स्थित है। इस पर भी अपने श्रुत के अनुसार लिंग वर्णन करता हूँ।

भगवान महेश्वर लोक कल्याण की भावना के वशीभूत होकर समस्त तीर्थ स्थलों में विविध प्रकार के लिंग का स्वरूप धारण करते हैं। जब जिस समय जहां-जहां पर शिव भक्तों ने अपने अभीष्ट देव का स्मरण किया है उसी समय वहां-वहां पर अवतार लेकर भक्तों के कार्य पूर्ण करके महेश्वर लिंग स्वरूप स्थापित हो गए हैं। संसार में लोगों का उपकार करने के लिए भगवान महेश्वर ने अपना लिंग रूप प्रकट कर दिया। उसी लिंग प्रतिमा का समर्थन कर संसार में मनुष्य अनेकानेक सिद्धियों को प्राप्त कर लेते हैं। मैं उन भूमण्डल पर स्थापित लिंगों का वर्णन करता हूँ

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

जिनके आख्यानों का श्रवण करके मनुष्य समस्त पापों से छुटकारा पा लेता है।

सौराष्ट्र में सोमनाथ, उज्जयिनी में महाकाल, श्री शैल में मल्लिकार्जुन, हिमाचल पर केदारनाथ, डाकिनी में भीमशंकर, वाराणसी में विश्वनाथ, गोमती के तट पर त्र्यम्बकेश्वर, चिताभूमि में वैद्यनाथ, सेतुबन्ध में रामेश्वर, दारूकवन में गणेश्वर, शिवालय में घुश्मेश्वर नाम के ज्योतिर्लिंग स्थापित हैं। प्रातः समय जो कोई इन द्वादस ज्योर्लिंगों का स्मरण करता है वह समस्त पापों से छूट जाता है। जो नर श्रेष्ठ हृदय में जिस-जिस कामना को लेकर इन द्वादस नामों का कीर्तन करता है वह निश्चय ही इहलोक और परलोक में मनोरथों को पा लेता है। जो कोई निष्काम भावना से अपना कर्त्तव्य समझ कर इन नामों का स्मरण करता है वह आवागमन के चक्कर से मुक्त हो जाता है।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

ऊपर वर्णित द्वादश दिव्य लिंगों का अर्चन करने मात्र से समस्त वर्गों के दुःख दारिद्र्य का नाश हो जाता है। इन दिव्य ज्योतिर्लिंगों पर चढ़ा नैवेद्य (प्रसाद) लेकर सत्यन भक्षण कर लेना चाहिए। ऐसा करने से उसके समस्त पापों का क्षय हो जाता है। हे मुनिवरो! इन द्वादश दिव्य लिंगों का नित्य ही छः मास तक पूजन करता है उसे फिर माँ के गर्भ का कष्ट नहीं उठाना पड़ता। जो पुरुष निकृष्ट योनि में होकर भी शिव के लिंगमय प्रतिमा के दर्शन करता है वह अगले जन्म में श्रेष्ठ कुल में जन्म लेता है। श्रेष्ठ कुल में जन्म लेकर धनी, वेद शास्त्र का ज्ञाता तथा श्रेष्ठ कर्मों को करने वाला बन जाता है और अन्त से मुक्त हो जाता है। अतएव महेश्वर के दर्शन हर एक को अवश्य करने चाहिएं। हे द्विजवरो! इन दिव्य लिंगावतारों

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

के वन्दन-अर्चन से जिन फलों की प्राप्ति होती

है उनका सम्पूर्ण वर्णन करने की सामर्थ्य ब्रह्मा में भी नहीं है फिर साधारणजन की तो बात ही क्या है। नीचे द्वादश ज्योतिर्लिंगों का स्तोत्र पाठ दिया जा रहा है।

द्वादश ज्योतिर्लिंगानि

श्री गणेशाय नमः

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्री शैले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यां महाकालं ओंकारम् मलेश्वरम् ॥
परल्यां वैजनाथं च डाकिन्यां भीमशंकरम् ।
सेतबन्धे तु रामेशं नागेशं दारुकाबने ॥
वाराणास्यां तु विश्वेशं त्र्यम्बकं गौमती तटे।
हिमालये केदारम् घुशमशं शिवालये ॥
एतानि ज्योतिर्लिंगानि सायं प्रातः पठेन्नरः।
सप्त जन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति ॥

॥ इति द्वादश ज्योतिर्लिंगानि ॥

हे श्रेष्ठ ऋषिगण! अभी तक मैंने भगवान शिव के दिव्य ज्योतिर्लिंगों के फल को कहा। अब उनके उपलिंगों का वृतान्त

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

कहता हूँ। भूमि और सागर के संयोग में सोमेश्वर का उपलिंग अन्तकेश नाम से विख्यात है। मल्लिकार्जुन से प्रकट भृगुकच्छ में रुद्रेश्वर नामक उपलिंग है जो परम सुख का दाता है। नर्मदा नदी के तट पर समस्त पाप राशि का हरण करने वाला दुग्धेश नामक महाकाल ज्योतिर्लिंग से उत्पन्न है। बिन्दु सरोवर में कर्दमेश्वर नामक उपलिंग से उपलिंग जो कि श्री ओंकार से समुत्पन्न है समस्त कामनाओं के देने वाला कहा गया है। केदारेश्वर दिव्य लिंग के उत्पन्न यमुना के तीर पर भूतेश्वर नाम का विख्यात उपलिंग है जो कि दर्शन एवं अर्चन करने पर महापातकों का नाशक कहा गया है।

ब्रह्म नामक पर्वत पर भीमेश्वर नामक उपलिंग स्थित है जिसका समुद्भूत होना भीम शंकर से बतलाया गया है। इनके अर्चन करने से भारी बल की प्राप्ति कही गई है। सरस्वती

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

नदी के तट पर भूतेश नामक उपलिंग है जिसके दर्शन मात्र से ही पापों का क्षय हो जाता है। इसका उद्भव नागेश्वर ज्योतिर्लिंग से हुआ है। श्री रामेश्वरम् से समुत्पन्न उपलिंग को गुप्तेश्वर तथा घुश्मेश्वर से उद्भूत उपलिंग को व्याघ्रेश्वर कहा जाता है। हे ब्राह्मणो! यह मैंने ज्योतिर्लिंगों के समीप स्थापित उपलिंगों का वर्णन किया। इनके दर्शन का भी महान पुण्य कहा गया है। इनके दर्शन से मनुष्य समस्त पातकों से छूट जाता है और अपने मनोरथों को पा लेता है। ये सभी उपलिंग विख्यात हैं। अब अन्य विख्यात शिव लिंगों का वर्णन करता हूँ।

भागीरथी के पावन तट पर एक काशी (वाराणसी) नाम की विख्यात नगरी है। यह समस्त लिंगमयी तथा विश्वनाथ की भूमि कही गई है, यहां प्राण त्यागने वाला मुक्ति लाभ करता है (शुभकर्मा बनकर दुष्कर्मी नहीं) यहाँ

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

भगवान शिव की मुख्य प्रतिमा विराजमान हैं। यहां निवास करने वाला साक्षात शिव बन जाता है। यहां दक्षाश्मेघ तथा तिलभराडारेश्वर शिव भी हैं। गंगा सागर के सामने के समुद्र में संगमेश शिव विराजते हैं। कौशिक नदी के तट पर 'भूतेश्वर' एवं 'नारीश्वर' नामक शिवलिंग स्थापित हैं। ये अपने भक्तों को निरन्तर समस्त पदार्थों को प्रदान करते हैं। फल्गु नदी के तट पर सुखदाता 'पूरेश्वर' गराड नदी के तट पर 'वटुकेश्वर' नाम वाले भगवान शंकर हैं। उत्तर में 'सिद्धताथेश्वर' शिव एवं 'दरेश्वर' शिव विराजमान हैं जो मनुष्यों को दर्शन मात्र से ही सिद्धि प्रदान करने वाले कहे गये हैं। 'भृगेश्वर', 'वैद्यनाथ' तथा 'जप्येश्वर' नामक शिवलिंग दधीचि मुनि के युद्ध स्थल पर विख्यात है। यहां पर 'गोपेश्वर', 'वामेश्वर', 'रंगेश्वर', 'नागेश', 'कामेश' और 'विमलेश्वर' नाम शिवलिंग भी हैं।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

इनके अतिरिक्त 'व्यासेश्वर' 'सुखेश' 'भाराडेश्वर' 'हुँकारेश्वर' 'सुरोचन' 'भूतेश्वर' तथा 'संगमेश्वर' नामक ज्योतिर्लिंग हैं जिनके दर्शन अर्चन करने से मनुष्य के पाप नष्ट हो जाते हैं। ताप्ती नदी के तट पर शिव के तट पर शिव के 'सिद्धेश्वर' कुमारेश्वर' और 'सेनेश' नामक दिव्य लिंग हैं। 'रामेश्वर' 'कुम्भेश' 'नन्द्रीश्वर' 'पुजेश' और 'पूर्वक' नाम शिव लिंग भी विख्यात हैं। प्रयागराज में ब्रह्माजी द्वारा ज्योतिर्लिंग स्थापित है जो कि दशाश्वमेध तीर्थ पर 'ब्रह्मेश्वर' नाम से प्रसिद्ध है यह धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों वर्गों के प्रदाता कहे गये हैं। यहां पर ही 'सोमेश्वर' नामक लिंग समस्त आपत्तियों को नष्ट करने वाले तथा 'भारद्वजेश्वर' ब्रह्म तेज को प्रदान वाले लिंग भी स्थापित हैं।

'शूलटंकेश्वर' महादेव समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाले कहे गये हैं। भगवान

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

शिव 'साधवेश्वर' नामक लिंग रूप में अपने भक्तों की रक्षा करने को विराजमान हैं। अयोध्यापुरी में परम पावन 'नागेश' नामक शिव लिंग स्थापित है जो सूर्यवंशी राजाओं को विमेष रूप से सुख सौभाग्य देने वाले माने गए हैं। पुरुषोत्तमपुरी में भगवान शिव की 'भुवनेश' नामक प्रतिमा अति विख्यात है, यहां ही 'लोकेश' शिव भी मनुष्यों को परमानन्द प्रदान करते हैं। भगवान शिव के 'शुक्रेश्वर' नामक लिंग भी लोगों के हितार्थ यहां स्थापित हैं। सिन्धु नदी के तट पर श्री 'कपालेश्वर' और 'वक्रोश' नामक शिवलिंग समस्त पापों का हरण करने वाले कहे गये हैं। साक्षात् शिव के स्वरूप वाली 'कामेश्वर' 'धूतपापेश्वर' 'भीमेश्वर' और 'सूर्येश्वर' नामक प्रतिमाएं भी हैं। 'नन्दीश्वर' समस्त संसार में पूजित तथा 'रामेश्वर' महान पुन्यों के दाता कहे गए हैं।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

सागर तट पर 'विमलेवर' 'वैंकटेश्वर' 'धतुर्केश' नामक शिवलिंग हैं। 'चन्द्रेश्वर' चन्द्रमा के समान कान्ति प्रदान करने वाले तथा सब मनोरथों के दाता 'सिद्धे श्वर' नामक शिवलिंग कहे गये हैं। जहां भगवान शिव ने अन्धक दैत्य का वध किया था वहां 'अन्धकेश' तथा 'विल्लेश्वर' नामक दिव्य लिंग हैं। भगवान शिव ने अपने अंश को शरणेश्वर नामक ज्योतिर्लिंग में स्थित कर लिया है वे समस्त प्राणियों को सुख प्रदान करने वाले बतलाए गए हैं। आबू पर्वत पर 'कर्दमेश' 'कोटीश' और 'अचलेश' नामक दिव्य लिंग हैं। कौशिकी नदी के तट पर शिव लिंग की 'नागेश्वर' तथा अनन्तेश्वर नाम की प्रतिमाएं हैं। इनके अतिरिक्त 'वैद्यनाथ' 'योगेश्वर' 'सप्तेश्वर' 'कोटिश्वर' 'भद्रेश्वर' 'चण्डीश्वर' एवं 'संगमेश्वर' नामक विख्यात शिवलिंग हैं।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

उत्तर में गौकर्ण क्षेत्र पर 'चन्द्रभाल' नामक विख्यात शिवलिंग लंकेश्वर रावण ने स्थापित किया था। ये समस्त सिद्धियों के दाता कहे गये हैं। दया के सागर भगवान चन्द्रभाल शिवलिंग भी वैद्यनाथ के तुल्य ही संसार की भलाई के लिए स्थित हैं। गौकर्ण क्षेत्र में स्नान करके चन्द्रभाल शिवलिंग की पूजा-अर्चन करने वाला पुरुष शिव लोक को प्राप्त कर लेता है इसमें कुछ भी संशय नहीं है। इनकी महिमा का वर्णन महर्षि व्यास भी नहीं कर सकते। मिश्र ऋषि नामक तीर्थ पर 'दाधीच' नामक शिवलिंग है। नैमिषारण्य की पवित्र भूमि में ऋषियों द्वारा 'ऋषिश्वर' नामक ज्योतिर्लिंग है। देव प्रयाग में सब पापों का त्तय करने वाले 'ललितेश्वर', नेपाल में 'पशुपति नाथ' स्थित हैं।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

ऋषियों ने पूछा कि मुक्ति क्या है? मुक्ति पाने पर जीव की क्या दशा होती है? कृपा करके बतलाइये। सूत जी बोले–मुक्ति चार प्रकार की होती है। इनके नाम क्रमशः सारूप्य, सालोक्य, सान्निध्य एवं सायुज्य हैं। ये सब शिव प्रताप से प्राप्त हुआ करती हैं। ब्रह्मा, विष्णु आदि; तीन पदार्थ वर्ग धर्म, अर्थ और काम को दे सकते हैं। चतुर्थ वर्ग मोक्ष तो मात्र महेश की कृपा से मिलता है। हे मुनि श्रेष्ठो! एक पांचवीं मुक्ति 'कैवल्य' नाम की भी है जो कि सभी के लिए दुर्लभ है।

जिससे यह सब जगत उत्पन्न होता है तथा जिसके द्वारा जगत का भरण पोषण होता है और अन्त में इस जगत का जिसमें लय हो जाता है वे शिव कहे जाते हैं। वेद न

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

उनको सगुण और निर्गुण दोनों प्रकार का कहा है। शिव का ऐसा विलक्षण स्वरूप है कि जिसका ज्ञान ब्रह्मा, विष्णु कुमार एवं नारद जी को भी नहीं है फिर साधारण ज्ञानियों की तो बात ही क्या है। यह सत्य ज्ञान अनन्त सत् चित् आनन्द स्वरूप है तथा बिना उपाधि के निर्गुण, शुद्ध और निरंजन है। वह परमात्मा तत्व, लाल, श्वेत, पीत और नीला नहीं है ह्रस्व, दीर्घ, सूक्ष्म और स्थूल भी नहीं है। जहां मन के सहित वाणी की पहुँच नहीं है उसी परमब्रह्म की शिव संज्ञा कही है। यह परब्रह्म आकाश की भांति सर्वत्र व्यापक माया से परे, द्वन्द रहित, मत्स-रता से हीन है।

हे द्विजो ! इस संसार में ज्ञान प्राप्त कर लेना अति कठिन तथा भजनोपासना करना सुगम कहा गया है। इसलिए मोक्ष प्राप्ति के लिए जप पूजन ही करना सरल है। भगवान

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

शिव भक्त के अधीन रहा करते हैं वे ज्ञान की आत्मा और मोक्षादि देने वाले पर-पुरुष हैं। कितने ही सिद्धों ने भक्ति के द्वारा ही मोक्षपद पा लिया है। हे मुनिश्वरो! यह भक्ति सगुण, निर्गुण आदि भेदों से अनेक प्रकार की कही गई है। भक्ति नैष्ठिकी और अनैष्ठिकी दो प्रकार की कही गई है। इसमें अनैष्ठिकी के तो भेद नहीं हैं नैष्ठिकी के छः भेद कहे गये हैं। इनको भी शास्त्रज्ञों ने विहिता और अविहिता आदि भेद से अनेक भेदों वाली बतलाया है। सब प्रकार की भक्ति (अर्चन, श्रवण कीर्तन आदि के भेद से) शिव की प्रसन्नता के बिना प्राप्त कर लेना अत्यन्त दुष्कर है। भगवान शिव के अनुसार ज्ञान आर भक्ति में कोई भिन्नता नहीं है। जो भक्ति की निन्दा करता है उसे विशेष ज्ञान प्राप्त हो ही नहीं सकता। शिव की भक्ति से शीघ्र ही ज्ञान का उदय हो जाता है।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

हे मुनिश्वरो ! इसलिए भगवान शिव की भक्ति अवश्य ही करनी चाहिए। महेश्वर की भक्ति करने से ही सब कुछ सिद्ध हो सकता है इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। ऋषियों ने आगे कहा कि हे सूत श्रेष्ठ। शिव कौन हैं ? विष्णु कौन हैं ? रुद्र कौन हैं ? ब्रह्मा कौन हैं ? इनमें निर्गुण और सगुण कौन हैं, कृपा करके बतलाइए। इस विश्व की सृष्टि के आरम्भ में जो निर्गुण निर्विकार परमात्मा तत्त्व हैं उन्हें ही वेद के ज्ञाताओं ने 'शिव' कहा है। उसी शिव से पुरुष के सहित प्रकृति का उद्भव हुआ है। वहां पर उन दोनों ने मूल में स्थित होकर जल में तपश्चर्या की है तथा उसका नाम पचकोशी जो काशी के नाम से जानी जाती है। यह सबको प्रिय है इसका जल समस्त संसार में फैल गया जान भगवान विष्णु माया सहित जल में शयन कर गये। इनको हरिनारायण और प्रकृति को नारायणी

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

नाम विख्यात हुआ।

उनकी भूमि में कमल से जिनका उद्भव हुआ वे ब्रह्मा हैं और उन ब्रह्मा जी ने तपश्चर्या के द्वारा जिन्हें जाना वह विष्णु हैं। हे पंडितो ! ब्रह्मा एवं विष्णु के मध्य उठे विवाद के शान्ति के निमित्त शिव ने महादेव नामक स्वरूप का प्रदर्शन किया। उन्होंने कहा था कि मैं शम्भु विधाता के मस्तक से पैदा होऊंगा। वे शम्भु ही 'रुद्र' कहे गये। अपने भक्तों पर कृपा करने वाले शिव स्वयं से रूपरहित होकर भी सबके ध्यान में आने योग्य रूप सहित हो गये। सगुण रुद्र एवं माया से रहित (तीनों गुणों) साक्षात शिव में तत्वतः कोई भेद नहीं है। जिस प्रकार से सोने के जेवरों में और सोने में कुछ भी अन्तर नहीं है, मात्र आकृति का अन्तर है। ये दोनों ही स्वरूप समान गुण-कर्म वाले भक्तों पर शीघ्र अनुग्रह करने वाले समस्त जगत् के लिए सेव्य तथा अनेक प्रकार

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

बोले–हे ऋषिवृन्द ! शिव का ज्ञान अत्यन्त गोपनीय और मोक्ष पद को देने वाला है। मैंने इसे जितना समझा है वह तुम्हें कहता हूँ। शौनक, स्वामी कार्तिकेय, नारद, वेदव्यास एवं कपिलदेव जी ने शास्त्रों का निचोड़ जानकर कहा है कि यह समस्त जगत शिवमय है। ज्ञानी को सर्वदा ऐसा मानकर चलना चाहिए।

परम्ब्रह्म के स्वरूप से लेकर तृण तक जो कुछ भी स्वरूप इस संसार में दिखाई पड़ता है वह शिवमय ही है। जब कभी उनके चित्त में रचना करने की इच्छा होती है तब वे समस्त जगत की रचना कर दिया करते हैं। वे सबको भली प्रकार जानते हैं किन्तु उनको कोई नहीं जानता। इस चराचर की रचना करके स्वयं इसमें प्रविष्ट होकर भी सबसे पृथक रहा करते हैं। वस्तुतः वे इसमें प्रविष्ट नहीं होते न ही उनका लय होता है वे तो केवल ज्ञान स्वरूप हैं। जिस प्रकार जल में

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

अग्नि के तेज की परछाईं का आभास होता है कि वह इसमें विद्यमान है (किन्तु वास्तव में ऐसा है नहीं) उसी प्रकार इस जगत में शिव का भान मात्र ही होता है।

रूप से वह परमब्रह्म सबको वेद का आक्रमण करके सबको भासते हैं। बुद्धि के भ्रम को ही अज्ञान कहते हैं। समस्त दर्शन शास्त्रों में मति का भेद स्पष्ट होता है क्योंकि प्रत्येक सिद्धान्त भिन्न रूप वाले होते हैं किन्तु वेदान्ती नित्य परमब्रह्म को अद्वैत ही कहा करते हैं। अपने ही अंश के स्वरूप में स्थित यह जीवात्मा अविद्या से मोहित होकर मैं और तू ऐसा समझता है परन्तु शिव उस विद्या से सर्वथा रहित हैं। सबमें व्यापक भगवान महेश्वर सबको व्याप्त करके समस्त जीवों में स्थित रहा करते हैं। जो ज्ञानी पुरुष शिव के दर्शन की इच्छा करता है वह वेदान्त मार्ग का ही आश्रय ग्रहण किया करता है। जिस प्रकार

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

हर एक लकड़ी में अग्नि का वास हुआ करता है किन्तु मात्र उसका मन्थन करने वाला ही अग्नि के स्वरूप का दर्शन कर पाता है, अन्य नहीं। इसी प्रकार मानव भक्ति आदि साधनों का आश्रय ग्रहण करके आगे बढ़ता है एवं निश्चय ही भगवान शिव के दर्शन प्राप्त कर लेता है।

शिव भक्त को सर्वत्र शिव ही भासने चाहिएं अर्थात् उसकी भावना ऐसी होनी चाहिए कि इस संसार में मात्र शिव ही शिव हैं अन्य कुछ भी नहीं। जिस प्रकार मिट्टी, स्वर्ण आदि अनेक उपाधियों के कारण भूमि के अनेक रूप हैं वैसे ही शिव नाना उपाधियों के कारण विभिन्न स्वरूपों में भासते हैं अर्थात् भ्रान्ति वश ही शिव नाना स्वरूप वाले दृष्टिगोचर नहीं होते हैं। वस्तुतः विचार पूर्वक सोचा जाए तो यहां कार्य और कारण में कुछ भी भेद नहीं है। यह भेद मात्र अपनी बुद्धि के

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

कारण प्रतीत होता है। जब यह बुद्धि को भ्रान्ति (अज्ञान) नष्ट हो जाती है तो यह अन्तर दृष्टिगोचर नहीं होता। जिस प्रकार बीज से वृक्षों की उत्पत्ति हुआ करती है और समय पर वह नष्ट हो जाते हैं और शेष रह जाता है बीज।

ज्ञान सम्पन्न जीवात्मा बीज रूप है और यह समस्त प्रकृति वृक्ष रूप है किन्तु इसकी विकृति में ज्ञानी ही होता है यह निर्विवाद सत्य है। शिव ही जगत है और जगत शिव है इसको असत्य नहीं कहा जा सकता। यह किस प्रकार अनेक स्वरूप में दिखाई पड़ता है तथा फिर कैसे एक रूप दिखाई दिया करता है अब उसे कहता हूँ। जिस प्रकार एक सूर्य ही जल में अनेक सूर्यरूप दिखाई पड़ता है उसी प्रकार वह परम शिव एक होकर भी भ्रान्ति वश अनेक रूपों में दृष्टिगोचर होता है। जिस प्रकार आकाश व्यापक होकर भी

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

उसका स्पर्श कोई नहीं कर सकता उसी प्रकार सर्वव्यापक परमात्मा भी किसी द्वारा बद्ध नहीं होता। जीवात्मा अहंकार से युक्त है और शिव अहंकार से रहित हैं। जीवात्मा अपने शुभाशुभ कर्मों को भोगता है जबकि परम शिव इससे निर्लिप्त हैं। जिस प्रकार स्वर्ण मूल्यवान होकर भी अन्य धातु के मिल जाने पर कम मूल्यवान बन जाता है तथा क्षार, तेजाब आदि से शोधित करने पर शुद्ध होकर वैसा ही मूल्य वाला हो जाता है उसी प्रकार संस्कारों से शुद्ध होकर यह जीवात्मा भी शुद्ध हो जाता है।

सर्वप्रथम जीव को किसी योग्य गुरु से दीक्षा लेनी चाहिए फिर भक्ति भाव से ईश्वर का पूजन, अर्चन तथा नाम स्मरण करना चाहिए, इस प्रकार करने से देह के समस्त मल दूर हो जाते हैं और सारा अज्ञान नष्ट हो जाता है। जब जीवात्मा को ज्ञान की

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

प्राप्ति हो जाती है तो उसके अहंकार का नाश होकर उसकी बुद्धि निर्मल बन जाती है तथा वह शिव के स्वरूप को प्राप्त कर लेता है। जीवात्मा देह से मुक्त होकर शिव के स्वरूप में मिल जाता है। यह देह प्रारब्ध के कारण मिलता है, किन्तु ज्ञानी को देह रखते हुए भी उससे रहित माना जाता है। ज्ञानवान जीवात्मा वही है जो अपनी प्रिय वस्तु पाकर हर्षित नहीं होता, अत्यन्त प्रिय वस्तु के खो जाने पर शोक नहीं करता अर्थात् सुख और दुःख में समान भाव रखता है।

मुक्ति का इच्छुक पुरुष अपनी आत्मा के योग से या तत्व विचार से देह का त्याग करता है। वह सदा शिव में ही लीन रहता है। ऐसा जीव ही समस्त व्यथा, पीड़ाओं से छुटकारा पाकर ज्ञान के मूल स्वरूप अध्यात्म को प्राप्त कर लेता है उससे ही शिव भक्ति की प्राप्ति होती है। जो निरन्तर शिवोपासना

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

करता है वह इसी रीति से ज्ञान का भण्डार बन जाता है। परम शंकर के अतिरिक्त अन्य कोई भी देवता ऐसा नहीं है जिसकी शरण में जाकर जीवात्मा संसार बन्धन से छुटकारा पा सके। हे ब्राह्मणो ! सर्वप्रमम शिवजी ने अपने ज्योतिर्लिंग के समीप यह ज्ञान भगवान विष्णु को दिया था। विष्णु जी ने ब्रह्माजी को दिया तथा ब्रह्माजी ने सनकादिक ऋषियों को इस ज्ञान का उपदेश दिया। सनकादिक ने इस ज्ञान को नारद जी को कहा तथा नारद जी ने इसका उपदेश वेद व्यास जी को दिया। वेदव्यास जी से यह ज्ञान मुझे प्राप्त हुआ है। मैंने आपको यह ज्ञान जिज्ञासु जान कर दिया है। यह ज्ञान शिव के चरणों की प्राप्ति करने वाला है।

व्यास शिष्य सूत जी के यह उपदेश सुनकर मुनिवरों को बहुत हर्ष हुआ वे गद्गद् वाणी से उन्हें बारम्बार नमस्कार पूर्वक उनकी स्तुति करने लगे। ऋषियों ने कहा—हे सूतजी !

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

तुम शिव के उपासकों में सर्वश्रेष्ठ और परम धन्य हो। आपने हम पर बड़ा अनुग्रह करके हमको तत्वरूपी शिव ज्ञान को दिया है। आपकी इस कृपा से हमारी सब भ्रान्ति दूर हो गई तथा मुक्तिदायक ज्ञान प्राप्त करके हम परम सन्तुष्ट हो गए हैं। ऋषियों के वचन सुनकर सूत जी ने कहा कि हे द्विज श्रेष्ठो! इस ज्ञान का उपदेश किसी नास्तिक, शिव भक्ति रहित, श्रद्धाहीन शठ को कभी भी नहीं करना चाहिए। यह परम गोपनीय है। समस्त वेद, पुराणों का सार रूप यह ज्ञान है। इसके श्रवण मनन करने से समस्त पाप भस्मीभूत हो जाते हैं।

इसके दो बार श्रवण मनन करने पर भक्ति की प्राप्ति होती है। मोक्ष प्राप्ति के इच्छुक जीव को इसका बार-बार मनन, श्रवण करना चाहिए। किसी विशेष फल की प्राप्ति के लिए इसकी पांच बार आवृति करनी

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

चाहिए। प्राचीन काल में अनेक जनों ने इसके श्रवण मनन से लाभ प्राप्त किया है। इस कलिकाल में भी जो इसका श्रवण मनन करेगा वह निश्चय ही भुक्ति और मुक्ति को प्राप्त कर लेगा। यह कोटि रुद्र नामक शिव पुराण की संहिता मैंने कही है। यह परमानन्द देने वाली है। जो पुरुष सावधान चित्त से इसका भक्ति पूर्वक मनन श्रवण करेगा, वह संसार में समस्त भोगों का उपभोग करके अत्यन्त परमगति को प्राप्त कर लेगा इसमें कुछ भी संशय नहीं है।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

१३

सनत्कुमार का महापातक वर्णन करना

श्री व्यास जी ने सनत्कुमार जी से पूछा—हे ब्रह्मपुत्र ! जो महापापी हैं और नरक अधिकारी हैं उन जीवों का वर्णन कीजिए। सनत्कुमार जी बोले—मैं संक्षेप में पाप कर्मी जीवात्मा और घोर नरक के जो अधिकारी हैं उन्हें समझाता हूँ। कर्म भेद से तीन प्रकार के हैं। मानसिक, वाचिक तथा शारीरिक। अपने मन से दूसरे का बुरा विचारना, दूसरों के धन तथा स्त्री की प्राप्ति करना, कामवासना के विचार तथा अभिनिवेश आदि कर्म मानसिक कहे गए हैं। असंगत सम्भाषण करना, अप्रिय तथा असत्य बातें कहना, पीछे-पीछे चुगलखोरी

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

करना वाचिक कर्म है। अभक्ष्य का भक्षण करना, हिंसा करना, झूठे कार्य करना तथा दूसरे का धन हड़प लेना शारीरिक कर्म है। अब इनके प्रभेद कहता हूँ। जो मनुष्य संहार रूपी महासागर से तारने वाले की निन्दा करता है उनका यह महापाप नरक के समुद्र में जाने लायक होता है।

जो उन्मत्त पुरुष शिव कथा कहने वाले तपस्वी तथा गुरु की निन्दा करता है पितरों के निन्दक दुरात्मा जीव नरक को प्राप्त होते हैं। शिव की, गुरु की निन्दा करने वाले, ब्राह्मणों के द्रव्य का हरण करने वाले, शिवज्ञान की पुस्तकों का अनादर करने वाले, शिवज्ञान में दोष निकालने वाले पातकी कहे गए हैं। शिव पूजा से हर्षित न होने वाले, पार्थिव लिंग पूजा देखकर लिंग को प्रणाम न करने वाले, लिंग का स्नान पर्वों में स्नान न करने वाले, सन्निधि

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

अपने गुरु का अर्चन न करने वाले, शिवजी

एवं गुरु के निकट भ्रष्ट उपचार करने वाले, शिव भक्तों का अनादर करने वाले एवं उनसे द्वेष रखने वाले, अन्याय का आश्रय लेने वाले तथा लालच के वशीभूत कुत्सित ज्ञान से बुरी क्रीड़ा करने वाले, शिव कथा में विक्षेप करने वाले या कुचेष्टा करके कुतर्क करने वाले नरकगामी होते हैं।

जो कभी सत्य नहीं कहते, कभी कुछ दान नहीं करते, स्वयं पवित्रापवित्र का ध्यान नहीं करते, जो बिना गुरु पूजन के ही शास्त्रों को श्रवण करते हैं, जो गुरु सेवक नहीं हैं, उनकी आज्ञा का आदर नहीं करते, उनके कार्य को असाध्य कह कर लापरवाही करते हैं, जो गुरु को रोगी, असमर्थ, परदेश में स्थित तथा शत्रुओं से घिरा छोड़ देते हैं, जो गुरु पत्नी, उनके बच्चों और मित्रों का अनादर करते हैं। हे मुनि श्रेष्ठ! ये समस्त कर्म शिव

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

निन्दा के तुल्य पाप कर्म हैं। ब्राह्मण की हत्या

करने वाला, चोरी करने वाला, शराब पीने वाला, गुरु पत्नी से नाजायज सम्बन्ध रखने वाला या प्रीत प्यार रखने वाले भी महापातकी होते हैं। जो ब्राह्मण को दान करके वापस ले लेता है, जो दोषरहित व्यक्ति में दोष लगाता है वह सभी ब्रह्म हत्यारे के समान पातकी होते हैं। जो मनुष्य अपनी पठित विद्या के अभिमान में चूर होकर किसी उदासीन श्रेष्ठ ब्राह्मण को निस्तेज करता है यह भी ब्रह्म हत्या के समान पाप है। जो अपने मिथ्या गुणों के बल पर पदोन्नति कर लेता है, बैल आदि से तृस्कृत गायों को तथा गुरु के सहित ब्राह्मणों को विघ्न पैदा करता है वह भी ब्रह्म हत्यारा कहा गया है।

जो देवता, विप्र और गौओं के लिए दान दी गई भूमि को कालवश नष्ट होने पर हस्तगत कर लेता है, अनीति से धन एकत्रित करने वाला, देव ब्राह्मण के धन का हरण

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

करने वाला ब्रह्म हत्यारा माना गया है। जो महामूढ़ विप्र पढ़कर भी शिवज्ञान को त्याग देता है इसे मदिरापान के समान पाप माना गया है। किसी भी व्रत इत्यादि को ग्रहण कर के पंच महायज्ञ का त्याग कर देने वाला भी मदिरा पीने वाले के तुल्य महा पापी कहा गया है। माता-पिता को त्यागने वाला, झूठ बोलने वाला, शिव भक्तों का अनादर करने वाला, अभक्ष्य का भक्षय करने वाला, वन में विचरते निरापराध पशुओं का वध करने वाला, धर्म कार्य या साधु ब्राह्मणों के लिए प्राणों का मोह करने वाला, ग्राम में तथा गौशाला में आग लगाने वाला भी ब्रह्म हत्यारा माना गया है।

किसी दीन-हीन का सब कुछ छीन लेने वाला, किसी की धरोहर को हड़प कर लेना, (अमानत में ख्यानत करना) स्वर्ण की चोरी कर लेने के समान पापी है। वर योग्य

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

कन्याओं का विवाह न करने वाला, पुत्र, मित्र की स्त्रियों के साथ रमन करने वाला, बहन के साथ रमन करने वाला तथा कुमारी के साथ बलात्कार करने वाला घोर पापी कहा गया है। यह मदिरापान के समान महापाप है। मदिरा पान करने वाली स्त्री के साथ रमन करने वाला, सवर्ण की पत्नी के साथ रमन करने वाला, गुरु पत्नी के साथ रमन करने जैसा घोर पाप माना गया है।

अति पाखण्डी, घमण्ड करने वाला, किसी अन्य के भाग को स्वयं हड़प करने वाला, किसी के एहसानों को न मानना, सांसारिक विषयों में ही मन को लगाये रखना, सज्जन पुरुषों से द्वेष करना, अन्य की स्त्री से रमन करना, कंजूसी करना, श्रेष्ठ कन्या में दोष लगाना, पर-वित्ति-परवेत्ता दोनों को कन्यादान करना या इनसे यज्ञ कराना, शिव के आश्रमों में स्थित बाग, वृक्ष एवं पुष्पादि

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

को नष्ट करना, ग्रामवासी को कष्ट देना ये सभी उपपातक बतलाए गये हैं। जल को अपवित्र करना, सेवक परिवार (बन्धुआ मजदूर) सहित पशु, धन-धान्य का दान करना, यज्ञ भाग, सरोवर, अपनी स्त्री और सन्तान का विक्रय कर देना, स्त्री की वृतिका से जीवन यापन करना, स्त्रियों का रक्षण न करना, इनका कपट से उपभोग करना, होने पर याचक को कुछ भी न देना, निन्दित धन का संग्रह करना या लेना, व्यापार में बेईमानी करना, बैल की सवारी करना, किसी का मारण, उच्चाटन आदि कर्म करना, किसी का धान्य छीन लेना, अपनी जीभ के स्वाद के कारण बुरे कार्य करना, दूसरों के धर्म को ग्रहण करना, उनके आचार-विचार का सेवन करना, बुरे साहित्य को पढ़ना, कुतर्क करना, देवता, ब्राह्मण, साधु और चक्रवर्ती राजा की पीठ पीछे बुराई करना भी उप-पातक कहे गये हैं।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

अपने स्वाभाविक कर्म का त्याग करना, पितृ यज्ञ न करना, नास्तिक भाव रखना, दुराचरण करना, मिथ्या भाषण करना, पर्व के समय में, जल के मध्य में रजस्वला के साथ रमन करना, पशुओं के साथ रमन करना भी उप-पातक कहे गए हैं। जो सर्वदा कटु वचन बोलते हैं, लोक व्यवहार का त्याग कर देते हैं, तालाब, कूप या जलाशय को बिगाड़ते हैं, एक साथ बिठाकर भोजन कराने में भेदभाव करते हैं वे सभी उप-पातकी माने गये हैं। जो कोई गौ, ब्राह्मण, कन्या, स्वामी, मित्र और तपस्वी के कार्य में विघ्न उपस्थित करता है या बिगाड़ता है वह निश्चय ही नरक का अधिकारी होता है। व्यापार में कम तौलने वाले, दूसरों की स्त्रियों को दुःख पहुँचाने वाले, दूसरों के धन को हरने वाले, ब्राह्मणों को सताने वाले नरक को प्राप्त होते हैं।

जो द्विज होकर शूद्र स्त्री से रमन करते

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

हैं, मदिरा पान करते हैं, अत्यन्त क्रूर हैं, सर्वदा पापकर्मा हैं, हिंसा करने वाले, जीविका के लिए दान यज्ञ करने वाले, गौशाला, अग्नि कुण्ड, जलाशय, वृक्षों की छाया, राह में, पर्वत शिखर तथा तीर्थ-स्थलों पर मल-मूत्र त्यागने या फेंकने वाला भी निश्चय ही नरक वास करता है। दूसरों की भूमि को हड़पने वाले, रास्ते को ईंट-पत्थर कांटें आदि से रोकने वाले, कपटपूर्ण शिक्षा देने वाले, खाद्यान्नों में मिलावट करके बेचने वाले, अपने नौकरों से निर्दयता का व्यवहार करने वाले, पशुओं के साथ दुर्व्यवहार करने वाले भी नरक के अधिकारी होते हैं। जो मनुष्य अपनी स्त्री, पुत्र, बान्धवों, वृद्ध, दुर्बल, रोगी, भृत्य तथा अतिथि को न देकर (भूखा रखकर) स्वयं भोजन कर लेते हैं, अपने गुरु, स्वामी और मित्र से द्रोह करते हैं, मिथ्या बातों को रस लेकर सुनते हैं ये सब भी नरक के अधिकारी

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

होते हैं।

जो स्वयं नित्य मिठाई खाते हैं किन्तु ब्राह्मणों को नहीं पूछते (यहां ब्राह्मण को वर्ग विशेष जाना जाये जाति विशेष नहीं। ब्राह्मण जाति कदापि नहीं है जो ब्रह्म में लीन है वही ब्राह्मण है) संन्यास ग्रहण करके घर में रहने वाला, देव प्रतिमा को तोड़ने वाले, अत्यन्त क्रूरता से गायों को मारने वाले, दुर्बलों का पोषण न करने वाले तथा उनका त्याग करने वाले भी नरक के अधिकारी होते हैं। निर्बल पशुओं पर अधिक बोझा लादते हैं, भूखे पशुओं को जोतते हैं या पशु को भूखा बांधे रखते हैं, अधिक भार से पीड़ित एवं घायल, रोगी तथा क्षुधा पीड़ित पशुओं का उचित रूप से पालन नहीं करते वे भी नरक गमन करते हैं। जो बांझ गौओं को जोतते हैं भूखे-प्यासे; वृद्ध, बालक, अभ्यागत और रोगी को द्वार से दुत्कारते हैं वे महामूर्ख मनुष्य महानरक को

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

यातना भोगते हैं।

मनुष्य मृत्यु को प्राप्त हो जाने पर सारा धन-ऐश्वर्य आदि घर पर ही छोड़ जाता है। उसे परिवार वाले श्मशान में ले जाते हैं और घर लौट आते हैं। केवल वही जीवात्मा अपने पाप-पुण्यों के साथ परलोक गमन करता है। जो अनुचित कर को वसूल करता है, जो सर्वदा दण्ड देने की प्रवृत्ति रखता है वे भी घोर नरक में जाते हैं। जिस राजा के राज्य में कर्मचारी घूसखोर हों तथा व्यापारी मनमाने ढंग से व्यापार करें तथा प्रजा तस्करों से पीड़ित हो वह राजा भी अवश्य ही नरक का अधिकारी होता है। जो ब्राह्मण अन्यायी राजा के दान को ग्रहण करते हैं। जो राजा प्रजा की अवहेलना करके अन्याय पूर्वक धन का अर्जन करता है, चोरी करने वाले, पराई स्त्री से नित्य रमन करने वाले भी घोर नरक को प्राप्त होते हैं।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

घी, तैल, पीने की वस्तुएं, अन्न, मांस, अर्क, ईख, गुड़, शाक, दूध, दही, फल, मूल, काष्ठ, वस्त्र इत्यादि को लालच वश चुराने वाले भी नरक की यातना भोगते हैं। इनके अतिरिक्त भी बहुत से द्रव्य हैं जिनका हरण कर लेना चाहे वह स्वल्प मात्रा में ही क्यों न हो पाप कर्म है। दूसरे की वस्तु चाहे वह सरसों के बीज के बराबर ही क्यों न हो अपराध है और इसके लिए नरक की यातना भोगनी पड़ती है। यमराज के आदेश से ऐसे मनुष्य यमदूतों द्वारा पकड़े जाते हैं और घोर यातना भोगते हैं। धर्मराज अनेक प्रकार के दण्ड, देव, मनुष्य, पक्षी, आदि जो अधर्म करते हैं उन्हें देते हैं। जो नियमों और सदाचार के बन्धनों में बंधे रहा करते हैं और कभी पथभ्रष्ट हो जाते हैं उन्हें गुरु प्रायश्चित के द्वारा शिक्षा दे देते हैं। ऐसे मनुष्यों को धर्मराज के पास नहीं जाना पड़ता ऐसा ज्ञानी

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

लोग कहते हैं।

पराई स्त्री से रमन करने वाले, चोरी करने वाले और अन्याय युक्त व्यवहार करने वाले को दण्ड देकर शिक्षा देने वाला राजा बताया गया है। जो व्यक्ति गुप्त महापाप करता है उसे यमराज दण्ड दिया करते हैं। इसीलिए किए गए पाप कर्मों की शुद्धि के लिए प्रायश्चित अवश्य करना चाहिए। पापों का फल बिना भोगे कभी भी क्षय नहीं होता। पाप कर्म स्वयं करे, मन वाणी या शरीर से पाप कर्म करावे या उनका अनुमोदन करे तब भी इनका फल भोगना पड़ता है।

सनत्कुमार जी बोले—चार प्रकार के पापों से त्रस्त समस्त प्राणी भयंकर यमलोक को जाते हैं। गर्भ में स्थित रहकर जन्म धारण करने वाले बालक, युवा प्रौढ़, वृद्ध एवं स्त्री, पुरुष तथा नपुंसक को यह भली भांति समझ लेना चाहिए कि उनके कर्मों का लेखा-जोखा धर्मराज

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

के लिपिक चित्रगुप्त द्वारा लिख लिया जाता है। ऋषि-महर्षियों का कथन है कि अपना किया गया कर्म जीवात्मा को अवश्य भोगना पड़ता है, इसलिए सब प्राणियों को ही अपने शुभाशुभ कर्म निर्णय के लिए यमलोक अवश्य ही जाना पड़ता है। जो जीवात्मा शुभ कर्मा होते हैं, सौम्य चित्त वाले और दयालु हैं वे यमलोक में सौम्य मार्ग से पूर्व द्वार को जाया करते हैं। जो अनेक पापों को करते हैं क्रूर हैं वे दान शून्य हैं वे दक्षिण दिशा से यमलोक को जाया करते हैं। यह वैवस्तपुर अनेक रूपों में स्थित है और वहाँ जाने के लिए ८६ हजार योजन का फासला चल कर पूरा करना पड़ता है।

यही यमलोक पुण्यात्माओं को अत्यन्त समीप लगता है और पापियों को अत्यधिक दूर। पापी जीव बड़े भयंकर मार्ग से होकर इस लम्बी यात्रा को तय करके वहां पहुँचते हैं।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

मार्ग में कहीं मरुस्थल है तो कहीं कसटकपूर्ण मार्ग किसी-किसी जगह छुरी की धार सरीखे पत्थर बिछे पड़े हैं। कहीं बड़ा भारी दलदल है, कहीं मार्ग सूई की नोकों के समान तीखी कुशाओं से युक्त है, कभी दहकते अंगार हैं तो घने जंगल हैं, ऊंचे पर्वत हैं, कहीं बर्फ ही बर्फ तो कहीं तपती पाषाण शिलाएं। ऐसे भयंकर मार्ग से जाने वाला प्राणी बड़ी व्यथा को भोगकर यमलोक पहुँचता है। मार्ग में हिंसक जीव सिंह, भेड़िया आदि हैं, कहीं अजगर पड़े हैं, कहीं मगरमच्छ कहीं विषधर, तो कहीं मतवाले मस्त हाथियों का झुराड यह समस्त प्राणी जाने वाले को भय दिया करते हैं। यमलोक का यह मार्ग सब ओर से भयावह जीवों से भरा रहता है। इन तापों से पीड़ित होकर प्राणी यमलोक जा पाता है।

कहीं प्राणियों पर वज्रपात, कहीं उल्कापात और किसी-किसी जगह प्राणियों पर अंगारों

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

की वर्षा होती है जिससे शरीर जलता है। प्राणी मार्ग में कष्ट पाकर रुदन करते हैं, मार्ग में रूखी और कठोर वायु चलती है जिससे प्राणियों को अपना शरीर शुष्क और सुकड़ा प्रतीत होता है। इसी रीति वह मार्ग बडा कष्टपूर्ण होता है जिसमें न कुछ चबेना न कोई आधार होता है। बड़े ही विषम निर्जन आश्रयहीन, अन्धकारपूर्ण तथा दुरात्माओं से घिरा हुआ यमपुरी का मार्ग है। इसी मार्ग से पापी आत्मा जाया करते हैं। जो मूर्ख पापी प्राणी होते हैं उन्हें यमराज की आज्ञा से बलात महाक्रूर दूतों द्वारा ले जाया जाता है।

पापी जीव यमदूतों के द्वारा पकड़े हुए अकेले, पराधीन, विवश, मित्र, बन्धु बांधवों से रहित अपने कर्मों पर चिन्ता करते हुए रुदन मचाते हुए मार्ग से जाया करते हैं। पापी प्राणी जब प्रेत बनते हैं तो उनके ओठ व तालू सूखे हुए व वस्त्र रहित, भयभीत, अत्यन्त संतप्त

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

और भूख से परम क्लेशित होकर यमपुरी की यात्रा करते हैं। उनमें कुछ सांकलों से बंधे रहते हैं, कुछों के पैर ऊपर की ओर होते हैं उन्हें बलवान यमदूत बलात खींचते हुए चलते हैं। कुछ काल के पाश से बंधे घिसटते हुए चले जाते हैं। कोई-कोई अत्यन्त क्लेशित हैं जो कि करण्टकाकीर्ण एवं अंगारपूर्ण मार्ग से ले जाए जाते हैं। कुछ के हाथों में कीलें ठुकी रहा करती हैं। कोई पापात्मा गर्दन के फांसे से खींचे जाते हैं। कुछ नाक में, नकेल डालकर, कुछ गाल छेदकर रस्सी द्वारा खींचे जाते हैं।

उनमें कितने ही हाथ-पैरों से हीन, नाक-कान से हीन, अण्डकोष, और लिंग से हीन यमदूतों द्वारा कर दिए जाते हैं। यमदूतों के द्वारा अत्यन्त त्रास को त्रास को प्राप्त पापात्मा यमपुरी के मार्ग में वाणों द्वारा विदीर्ण कर दिए जाते हैं। इस प्रकार से मार्ग में कर्मों का न्याय

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

प्राप्त करते प्राणी यमपुरी में पहुँच कर धर्मराज के समक्ष उपस्थित किये जाते हैं। शुभ कर्म करने वालों का धर्मराज भी स्वागत करते हैं, अर्घ्य, पाद्य, आसन आदि देकर सम्मान करते हैं और धर्मराज उनसे कहते हैं कि आप लोग शास्त्रानुकूल कर्म करने वाले धर्म को मानने वाले हैं आप सब धन्य हैं। आप लोगों ने दिव्य सुखों के लिए ही पुराय कर्म किये हैं। इसलिए आप लोग दिव्य विमानों पर आरूढ़ होकर दिव्यांगनाओं का आनन्द स्वाद करते हुए समस्त कामनाओं की पूर्ति के लिए स्वर्ग में चले जाओ। वहां महाभोगों के अन्त में जो कुछ थोड़ा पाप शेष रहेगा उसे भोगने को आप लोग यहां आओगे।

जो धर्मात्मा, मित्र स्वरूप एवं पुराय पुरुष हैं वे धर्मराज के यहां भी सौम्य सुख पाते हैं। जो क्रूर एवं पाप कर्म करने वाले प्राणी होते हैं उन्हें यमराज का स्वरूप अत्यन्त डरावना

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

लगता है। उनके सामने यमराज बड़ी दाढ़ों से युक्त विकराल मुखाकृति वाले और चढ़ी हुई टेढ़ी भृकुटियों से कुटिल दृष्टि वाले दिखाई दिया करते हैं। पापियों के समक्ष उनका स्वरूप सिर पर लम्बे केश बड़ी दाढ़ी मूंछ फड़फड़ाते अधर, अठारह भुजा, क्रोध से पूर्ण और काजल के समान वर्णमाला होता है। पापियों के समक्ष धर्मराज समस्त शस्त्रों से सुसज्जित सब प्रकार का दण्ड देने वाले, फटकार मारने वाले महिषारूढ़ जलती हुई आग के समान आंखों के वर्ण वाले होते हैं। पापियों को धर्मराज का स्वरूप अत्यन्त भयावना दिखाई पड़ता है। उस समय ऐसा प्रतीत होता है कि वे पर्वतों को निगल रहे हैं और अग्नि को उगल रहे हैं। यह स्वरूप तो धर्मराज का स्वयं का और उनके समीप कालानल के तुल्य कान्ति वाले उनके भृत्य होते हैं।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

यमदूतों का स्वरूप भी बड़ा भयावना

हुआ करता है। यमराज के निकट कृष्ण वर्ण वाला काल, भयानक राजमारी, उग्रमहामारी तथा दारुण काल रात्रि भी स्थित रहती है। वहां अनेक रूपों वाले यमदूत नाना विधि रोग भी रहा करते हैं। यमदूतों की कोई निश्चित संख्या नहीं है ये असंख्य होते हैं। वे वर्ण से काले सभी हाथी में अस्त्र-शस्त्र रखने वाले परम भयानक होते हैं। ऐसे परिकर से घिरे धर्मराराज के भयानक स्वरूप को अति भयंकर चित्रगुप्त को पापी प्राणी देखा करते हैं।

यमराज के दरबार में चित्रगुप्त पापात्मा जीवों को कहते हैं—अरे महान पाप कर्म करने वालो! अनेक रूप लावण्य तथा वीर्य पराक्रम से गर्वित होने वालों! दूसरों की स्त्री से रमन करने वालो! तुमने जो संसार में बुरे कर्म किये हैं अब उनके लिए दण्ड भोगना पड़ेगा। बताओ तुमने क्लेश उत्पन्न करने वाले ये कर्म क्यों किए थे? अब तुम अपने कर्मों से

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

उत्पीड़ित होते हुए क्यों रोते-चिल्लाते हो? अब कर्मों का फल भोगो। इसमें अन्य किसी का दोष नहीं है। इस प्रकार अपने कर्मों के अनुसार बल का घमराड करने वाले राजा लोग भी यमराज के समक्ष उपस्थित किए जाते हैं। महाप्रभु धर्मात्मा चित्रगुप्त धर्मराज के आदेश से क्रोधपूर्ण उन राजाओं को शिक्षा देते हैं। चित्रगुप्त कहते हैं–हे प्रजा का सर्वनाश करने वाले राजाओ! हे दुराचारमग्न पापात्माओ! तुमने थोड़े समय तक राज्य करने पर भी ऐसा पाप क्यों किया? हे नृपवृन्द! आप लोगों ने राज्य भोगने के साथ-साथ अन्याय और बल का आश्रय ग्रहण करके प्रजा को अकारण सताया है अब उसका फल भोगो। तुम्हारा वह राज्य, बल एवं स्त्री धन आदि कहां हैं जिनके लिए तुमने महान पाप किए थे? अब यहां पर तो तुम सबको छोड़कर उपस्थित हो। मैं तुम्हारा सारा बल

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

नष्ट हुआ देख रहा हूँ जिससे तुमने अपनी प्रजा को दण्डित किया था।

चित्रगुप्त के ऐसे वचन सुनकर राजा लोग चुपचाप अपने कर्मों को सोच-सोच कर पछताते हैं। धर्म का न्याय करने वाले यमराज राजाओं को उनके कर्म के अनुरूप दण्ड देने की व्यवस्था करते हुए कहते हैं–हे चण्ड! हे महाचण्ड! तुम बलात इन राजाओं को नरक रूपी अग्नि में डाल दो, इनकी शुद्धि करो और नियमों का पालन करो। धर्मराज का आदेश पाकर दूतों ने ऐसे पाप कर्मा राजाओं को दोनों पैरों से पकड़ कर उठाया और जोर से घुमा कर नीचे फेंक दिया। उन्हें विशाल संतप्त शिलाओं पर फेंक पटक देते हैं। उस समय उनके कानों से रक्त टपकता है तब प्राणी जर्जर होकर चेतना शून्य हो जाता है। फिर वायु का स्पर्श पाकर पुनः जीवित होकर पाप से शुद्धि होने के लिए नरक में डाल दिया

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

जाता है। उन नरकों के नाम सुघोर, अतिघोर, महाघोर, भयानक, कालरात्रि, भयोत्कटा, चराड, महाचराड आदि अनेक प्रकार के हैं।

उक्त नरकों में पापात्मा प्राणी गिराये जाते हैं। वहां पर अनेक प्रकार की यातनाओं द्वारा अपने कृत दुष्कर्मों के नाश हो जाने पर अत्यन्त तीव्र नरक की अग्नियों में सुखाये जाते हैं। तैल से पूर्ण गर्म कड़ाह में उन्हें पकाते हैं। इसी प्रकार बड़ी भयानक यातनाएं पाकर पापी लोग क्रमानुसार नरकों को भोगते हैं। इन नरकों की यातनाएं अत्यन्त कष्टदायक हैं। कीड़ों के समुदाय में फेंके हुए तथा पीव मांस और अस्थियों के बीच में डाले हुए उनको अत्यन्त दुखित मन से रहना पड़ता है। तपे हुए वज्र लेप से उनका शरीर लिप्त रहता है, उनका मुख नीचे की ओर तथा पैर ऊपर रख कर ताप दिया जाता है। वहां पापी पुरुषों के मुख में तप्त लोहे की गदा दे दी जाती है।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

जिसे वे विवश होकर खाते हैं। हे व्यास जी! इस संसार में बुरे कर्म करने वाले प्राणी परलोक में जाकर महान से महान नरकों की यातनाएं भोगते हैं। अब मैं पापी पुरुषों के तत्व को कहता हूँ।

मिथ्या शास्त्र में प्रीति रखने वाला पुरुष द्विजिह्वा नामक नरक में जाता है और जीभ के समान आधे कोस लम्बे हल से पीड़ित किया जाता है। अपने माता-पिता को क्रूर स्वभाव वाला व्यक्ति ललकारता है तथा गुरु को फटकारता है। वह कीड़ों से युक्त विष्ठा-मुख में भर कर पीटा जाता है। जो शिव स्थान को नाश करता है, ब्रह्म को कष्ट देता है, मन्दिर, बाग, कूप आदि को तोड़ता है वह प्रलय काल तक रौरव नरक की यातना सहते हैं। जो पराई स्त्री के साथ रमन करते हैं वे वहां वैसे ही ताड़ित किए जाते हैं। लोहे की तप्त स्त्री से उनका आलिंगन किया जाता है। ऐसे व्यभिचारी पुरुष रुदन करते जाते हैं और

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

अपने कर्मों पर पछताते हैं। जो पुरुष पाप तो बड़ा करते हैं किन्तु पुण्य बहुत ही स्वल्प होता है इन दोनों की दशा का भी श्रवण कर लो—बड़े पाप का प्रभाव भी बड़ा होता है और थोड़े धर्म का प्रभाव शून्य रह जाता है।

पाप के प्रभाव से बहुत भोगों में फंसा हुआ प्राणी भी उसमें सुख का अनुभव करता है। ऐसा पुरुष परम दुखित एवं हृदय में जलता हुआ रह कर भोज्य पदार्थों में कभी भी सुख नहीं माना करता। वह सर्वदा अपने लिए उनका अभाव ही माना करता है और दूसरों के आगे देखकर उसे दुःख होता है। जो अधिक धर्म करने वाला है वह उपवास करने वाले गृहस्थ के तुल्य धनवान होकर सर्वदा नियम में स्थित रहकर अपनी पीड़ा का होना मानता ही नहीं है। ऐसे भी अत्यन्त घोर पाप हैं जिनके कारण मनुष्य पृथ्वी पर वज्र से ताड़ित हुए पर्वत के समान सैकड़ों ही भेद वाला होता है।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

सनत्कुमार जी बोले—जल का दान समस्त दानों में सर्वश्रेष्ठ दान कहा गया है। क्योंकि इससे समस्त जीवों को पूर्ण तृप्ति होती है और यह जीवन देने वाला होने के कारण इसका दान करना बड़ा दान माना जाता है। मनुष्य को अपनी सामर्थ्य के अनुसार कुआं, बावड़ी, तालाब आदि का निर्माण अवश्य ही कराना चाहिए। जलाशयों का निर्माण कराना बड़े आनन्द का कार्य है। बड़े स्नेह से प्याऊ आदि लगाकर जल का दान करना उत्तम कर्म है। ऐसा करने वाला पुरुष इह लोक और परलोक दोनों स्थानों में उत्तम सुखों का भोग करता है इसमें कुछ भी संशय नहीं है। जल दान करने से पराक्रमी पुरुष के आधे पापों का क्षय हो जाता है। जिसके द्वारा निर्मित जलाशय

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

में गौ, ब्राह्मण, साधु तथा अन्य जीव जल ग्रहण करते हैं उसका वंश तर जाता है। जो ग्रीष्मकाल में अधिक जल का वितरण करता है वह बड़े कष्टों को नहीं भोगता।

तडाग का निर्माता तीनों लोकों में आदर पाता है। तालाबों का निर्माण कराने से कीर्ति वृद्धि होती। जिस व्यक्ति ने अपने किए शुभ कर्म से जलाशय का निर्माण कराया है उसे उसका अत्यन्त पुण्य मिलता है। ज्ञानीजन धर्म, अर्थ, काम को इसी कारण सफल कहा करते हैं। कुआं, तडाग आदि समस्त जलाशय लक्ष्मी दाता कहे गए हैं। देव, मनुष्य, गन्धर्व, पितर, नाग, राक्षस स्थावर भूत आदि सब जलाशय को आश्रय बनाया करते हैं। जिसके द्वारा निर्मित जलाशय में वर्षा ऋतु में जल भरा रहता है उसे अग्निहोत्र करने के तुल्य फल मिलता है। जिसके निर्मित जलाशय में शरत ऋतु में जल भरा रहता है उसे

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

एक हजार गौ दान का फल प्राप्त होता है। जिसके बनाए सरोवर में हेमन्त तथा शिशिर ऋतु में जल भरा रहता है वह अत्यधिक स्वर्ण दान के समान पुराय पा लेते हैं इसमें कुछ भी असत्य नहीं है। जिनके द्वारा निर्मित जलाशयों में बसंत और ग्रीष्म काल में जल भरा रहता है उन्हें अतिरात्रि तथा अश्वमेघ यज्ञों का फल मिलता है ऐसा पंडित लोगों का कथन है।

हे मुने ! हे व्यास जी ! मैंने जीवों को सन्तुष्ट करने वाले जलाशयों का निर्माण का पुराय फल बतला दिया है। अब वृक्षारोपण का क्या फल होता है उसे श्रवण कीजिए। जो वन में वृक्षों को रोपा करता है वह बीते तथा आने वाले पित्रों को तार जाता है। इसलिए वृक्षों का रोपण करना पुराय का काय है। इस जन्म में लगाये गए वृक्ष अगले जन्म में उस आने वाले के पुत्र के समान होते हैं।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

वृक्षों को लगाने वाला भी मृत्यु को प्राप्त होकर अक्षय में वास करता है इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। लगाये गए वृक्षों के पुष्पों से देवगण, फलों से पितृ तथा छाया से अतिथि तृप्त होते हैं। किन्नर, सर्प, राक्षस, देवता, मनुष्य, गन्धर्व तथा ऋषि सब ही वृक्षों का आश्रय लिया करते हैं। इस लोक में पुष्पित तथा फलित वृक्ष मनुष्य को पूर्ण मानसिक और शारीरिक तृप्ति प्रदान करते हैं। ऐसा करने वाले ही वस्तुतः लोक-परलोक में धर्म पुत्र कहे जाते हैं। जो द्विज बाग लगाने वाला, जलाशय का निर्माण कराने वाला, पंच महायज्ञ करने वाला होता है वह कभी भी नरक लोक की यातना को नहीं भोगता।

सत्य ही परमब्रह्म है, तप ही सत्य है, सत्य ही परम यज्ञ है और सत्य ही परम आदरणीय है। सत्य ही सोने वालों को जगाता है, सत्य ही परम पद है, सत्य ने ही पृथ्वी को

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

धारण कर रखा है, इस परम श्रेष्ठ सत्य में ही सब कुछ विद्यमान रहता है ऐसा ज्ञानीजनों का कथन है ! तप, यज्ञ, देव, ऋषि, पितृ पूजन जल और विद्या आदि इस एक सत्य में ही प्रतिष्ठित हैं। सत्य ही यज्ञ, तप, दान ब्रह्मचर्य है। सत्य ही ओंकार है और सत्य ही मन्त्रों वाली देवी सरस्वती है। सत्य के प्रभाव से यह समीर बहती है, सत्य से ही स्वर्ग की प्राप्ति बतलाई गई है। सब तीर्थों में स्नान का फल, सब वेदों में श्रवण मनन का फल सत्य के द्वारा मिल जाया करता है। सत्य से सभी कुछ मिल जाता है इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है।

सहस्रों अश्वमेघों का फल तथा अन्य लाखों यज्ञों का फल तराजू में एक ओर और दूसरे पलड़े में सत्य को रखने से सत्य वाला पलड़ा ही नीचे रहता है। अतः यह स्वयं सिद्ध है कि सत्य इन सब से विशिष्ट है। सत्य से देवगण, पितृगण, मनुष्य, सर्प, राक्षस

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

आदि चराचर जगत प्रसन्न रहते हैं। ज्ञानी-जनों ने सत्य को परम धर्म, सर्वोत्तम परम पद और साक्षात परमब्रह्म का स्वरूप कहा है। इसलिए सर्वदा सत्य का ही आश्रय लेना चाहिए। सत्य में परायण मुनि अति कठिन तपश्चर्या करके तथा सत्य स्वरूप धर्म में प्रवृत्त सिद्ध सभी स्वर्ग को प्राप्त करते हैं। सत्य से अधिक कुछ भी धर्म नहीं है। सत्य के आश्रय ग्रहण करने वाले मनुष्य का हृदय परम पवित्र एवं अति सिद्ध है। ऐसे तीर्थ रूपी हृदय में स्नान करके परम प्रसन्न होना चाहिए।

जो सत पुरुष अपने लिए पराये काज के लिए या अपने पुत्र के हित के लिए भी झूठ नहीं बोलते वे मनुष्य निसन्देह स्वर्ग गामी हुआ करते हैं। वेद, मन्त्र तथा यज्ञादि असत्य बोलने वाले ब्राह्मणों को कभी शोभा नहीं दिया करते। इसलिए सर्वदा सत्य ही बोलना उचित है। व्यास जी बोले—हे तपोधन! अब

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

समस्त वर्णों के तथा ब्राह्मणों के तप का फल वर्णन करिये। मेरी पुनः सुनने की इच्छा है। सनत्कुमार जी बोले—तप को सबसे बड़ा बताया गया है। तप से ही विशेष फल की प्राप्ति हुआ करती है। जिनकी प्रवृत्ति नित्य ही तपश्चर्या में रहा करती है वे सर्वदा देवताओं सहित आनन्द का लाभ लिया करते हैं। तप से यज्ञ की प्राप्ति-स्वर्ग की प्राप्ति होती है। तप से समस्त कामनाएं पूर्ण होती हैं तथा तप से ही सम्पूर्ण अर्थों का साधन होता है। तप से ही परम पुरुषार्थ मोक्ष की प्राप्ति होती है। तप से ज्ञान तथा विज्ञान की सम्पत्ति मिलती है। तप से परम सौभाग्य और लोकोत्तर रूप लावण्य की प्राप्ति होती है। मनुष्य तप के द्वारा अनेक तरह की वस्तुओं को पाल लेता है। अधिक क्या कहूँ तप ऐसी विलक्षण शक्ति है कि इसमें रत व्यक्ति जिस-जिस वस्तु की इच्छा करता है वह उन्हें प्राप्त कर लेता है।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

तपश्चर्या के बिना न तो कोई ब्रह्मा को जान सका न परम ब्रह्म शिव को। मनुष्य जिस कार्य की इच्छा से तपोनिरत होता है उन्हें इस लोक में परलोक में अवश्य ही प्राप्त कर लेता है। मदिरा पान करने वाला, पराई स्त्री के साथ रमन करने वाला भी इन महापातकों से तप के प्रभाव से तर जाता है। सबके स्वामी शिव, सनातन विष्णु, जगत सृष्टा ब्रह्मा, देव-राज इन्द्र एवं अग्नि आदि देवगण सब तप से युक्त हैं। अर्ध्वरेता अट्ठासी सहस्र मुनिगण देवताओं सहित सभी तप के प्रभाव से स्वर्ग लोक में आनन्द भोगते हैं। तप के असीम एवं अतुल प्रभाव से व्यक्ति राज्य की प्राप्ति कर लेता है। तप के प्रभाव से सुरेन्द्र प्रतिदिन सबका पालन करते हैं। समस्त लोकों का हित साधन करने वाले सूर्य और चन्द्र देव, नक्षत्र ग्रहादि सभी तप से ही नित्य प्रकाशित होते हैं।

संसार में ऐसा कोई भी सुख नहीं है जो

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

बिना तप के प्राप्त हो जाता है। तप से ही सब सुख प्राप्त होता है। वेद का ज्ञाताओं का ऐसा ही मत है। तपस्या से ज्ञान-विज्ञान, रूपवत्ता, सौभाग्य और सुख आदि निरन्तर प्राप्त होते रहते हैं। तप के कारण ही ब्रह्मा बिना किसी परिश्रम के संसार को रच डालते हैं, विष्णु इस महान जगत का रक्षण एवं पोषण इसी तप के प्रभाव से कर पाते हैं। तप के प्रभाव से ही रुद्र इस चराचर का संहार करते तथा शेष धारण करने में समर्थ होते हैं। हे महामुने ! तप के प्रभाव से ही गाधि के पुत्र विश्वामित्र ने क्षत्रिय से ब्राह्मण वर्ण पा लिया था। ये तप का ही प्रभाव था कि वे समस्त लोकों में विख्यात थे। अब तप से अधिक श्रेष्ठ अध्ययन के फल को कहता हूँ।

सनत्कुमार जी बोले—हे मुने ! वन में कन्द-मूल फल खाकर तप करने के तुल्य वेद की एक ऋचा का पाठ करने का फल होता

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

है। श्रेष्ठ ब्राह्मण वेद के अध्ययन से जो पुण्य प्राप्त करता है उसके पाठ करने से दुगना फल प्राप्त किया करता है। हे मुने! जिस तरह बिना दिवाकर और चन्द्र के यह जगत प्रकाश-हीन रहा करता है उसी प्रकार बिना पुराण के ज्ञान के यह संसार प्रकाश शून्य-सा रहता है। अतः संसारी जीवों को पुराण का पठन-श्रवण अवश्य ही करना चाहिए। सर्वदा अज्ञान से परिपूर्ण लोक शास्त्र के द्वारा ही समझा जा सकता है। पुराण अज्ञान का भली-भांति निराकरण कर देते हैं। इसलिए पुराणों के मर्म को जानकर कहने वाला पण्डित सदा पूजित होता है। सबके मध्य में पुराणों का ज्ञाता अत्यन्त श्रेष्ठ होता है। यह वस्तुतः पतन से रक्षा करने के कारण पात्र कहा जाता है। पुराणों के ज्ञानी ब्राह्मण में मनुष्य बुद्धि नहीं रखनी चाहिए, क्योंकि पुराणों का ज्ञानी विद्वान, ब्रह्मा, विष्णु और महेश की भांति गुरु होता ह।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

इह लोक और परलोक में स्वयं के कल्याणार्थ पुराणों के ज्ञाता पंडित को धन, धान्य और वस्त्र देने चाहिएं। जो पुरुष पुराण वेत्ता को (जो कि सच्चा पात्र है) श्रेष्ठ पदार्थ प्रेम पूर्वक अर्पण करता है वह परम गति को प्राप्त कर लेता है। जो उन्हें गौ, भूमि, रथ, अश्व और हाथी दान करता है वह दाता अपने इस महापुण्य के फलस्वरूप इह लोक तथा परलोक में अक्षय मनोरथों को प्राप्त कर लेता है। अश्वमेघ यज्ञ के पुण्य तुल्य फल प्राप्त करता है। जो जुती हुई उपजाऊ भूमि दान करता है वह अपने पहले देश और बाद के (आने वाले) दस वंशों को तार देता है। ऐसा व्यक्ति दिव्य विमानारूढ़ होकर शिवलोक को जाता है। सब देव आदि पूजन अर्चन से इतने प्रसन्न नहीं होते जितना पुराण वाचन से प्रसन्न होते हैं। शिवालय, विष्णु देवालय या अन्य धर्म की जगह में जो व्यक्ति पुराणों

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

का वाचन करता है वह राजसूर्य तथा अश्वमेघ यज्ञों के पुराय का फल प्राप्त कर लेता है तथा अन्त में ब्रह्मलोक को प्राप्त होता है।

ऐसा व्यक्ति ब्रह्मलोक में सैकड़ों कल्पों तक निवास करके फिर पृथ्वी पर राजा बनता है और निष्कंटक रूप से भोगों का उपभोग करता है इसमें कुछ भी संशय नहीं है। देव प्रतिमा के समक्ष जो कोई पुराणों का पाठ करता है वह अनेकों अश्वमेघों के पुराय को प्राप्त करता है। शिव एवं अन्य किसी भी देवता को प्रसन्न करने का साधन है उनके देवालय में पुराणों का पाठ करना। इसलिए पूर्ण प्रयत्न से पुराण ग्रंथों का पठन तथा श्रवन करने से मनुष्य पाप रहित हो जाता है और समस्त भोगों का उपभोग कर शिव लोक को जाता है। राजसू यज्ञादि करने से जो पुराय प्राप्त होता है वह शिव कथा सुनने से मिलता है।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

हे मुनिश्रेष्ठ ! समस्त तीर्थों में स्नान से, सौ गौदान करने से जो महापुण्य प्राप्त होता है वही फल मनुष्य शिव की कथा सुनने तथा बांचने से प्राप्त कर लेता है। जो लोक पावनी शिव कथा सुनते हैं वे मनुष्य न होकर साक्षात रुद्र ही मानने चाहिएं इसमें कुछ भी संशय नहीं है भगवान शिव की सुन्दर कीर्ति का वाचन करने वाला तथा सुनने वाला इनकी चरण धूलि को मुनिगणों ने अति पवित्र कहा है। जो व्यक्ति किसी कल्याणकारी स्थान को प्राप्त करना चाहते हैं उन्हें चाहिए कि सदा नियमपूर्वक शिव पुराण की कथा का श्रवण पठन किया करें। यदि सदैव पुराण कथा सुनने में असमर्थ हो तो पुण्य मास में एक बार यह कथा अवश्य सुननी चाहिए। हे मुनिश्वर ! जो लोक में शिव कथा सुनते हैं वे अपने कर्म रूपी विशाल वन को भस्म करके मोक्ष को प्राप्त होते हैं।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

जो लोग क्षण मात्र भी भक्ति भाव से इस शिव कथा को सुनते हैं उनकी कभी भी दुर्गति नहीं हुआ करती। हे पण्डित श्रेष्ठ जो पुण्य समस्त दानों या यज्ञों का प्राप्त होता है वह पुण्य फल भगवान शिव के इस पुराण के श्रवण करने से ही प्राप्त हो जाता है। हे व्यास जी कलिकाल में तो पुराण श्रवण का विशेष महत्त्व है क्योंकि इस युग में पुराण श्रवण के अलावा मुक्ति का अन्य कोई मार्ग नहीं है। मनुष्य के लिए शिव पुराण का श्रवण और नाम संकीर्तन करना पण्डितों ने कल्पवृक्ष के तुल्य कहा है। इस युग (कलिकाल) में धर्माचार को त्याग देने वाले कुबुद्धि मनुष्यों के लिए शिवजी ने अपने नाम वाले पुराण को अमृत रस कहा है। अमृत के पान से तो केवल पान करने वाला ही अमर होता है किन्तु शिव पुराण रूप अमृत रस के पान करने वाले का कुल का कुल अजर-अमर हो

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

जाता है। जो गति पुण्यात्माओं, यज्ञकर्त्ताओं तथा तपस्वी की होती है वही गति पुराण श्रवण करने वाले की होती है।

ज्ञान की प्राप्ति के अभाव में यत्नपूर्वक योग शास्त्रों और पुराणों का अध्ययन करना चाहिए, पुराणों के श्रवण करने से मनुष्य पाप रहित हो जाता है। उससे यह लाभ है कि वह मनुष्य ज्ञानी होकर संसार बन्धन से मुक्त हो जाता है, उसे फिर कभी मां के गर्भ का कष्ट नहीं भोगना पड़ता अर्थात् वह आवा-गमन से छूट कर मोक्ष को प्राप्त कर लेता है। यदि धर्म के मार्ग दर्शक ये पुराण न हों तो इस लोक और परलोक की कथा सुनाने वाला कोई बाकी नहीं रहता। इसीलिए धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष प्राप्ति के लिए पुराणों का श्रवण करना श्रेयस्कर है। यज्ञ, दान, तप, तीर्थ सेवन से जो-जो फल मिलते हैं उन्हें ही पुराण श्रवण से मनुष्य प्राप्त कर लेता है।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

१५

हे मुनि श्रेष्ठ ! पहले मैं नरकों का वृतान्त कहकर फिर प्रायश्चित कहूँगा । नरकों को क्रमशः रौरव, शूकर, रोध, ताल, विवसन, महाज्वाल, तप्त कुम्भ, लवण, विलोहित, वैतरणी, पूयवाह, कृमि-कृमि भोजन, घोर, असिपत्र, वन, दारुण, लालाभक्ष, यूयवहावहिर्ज्वाल, अथस्थिर, सदशः, बाल सूत्र, तम, श्वाची, चिरोधत्, श्वभोजन, रुष्ट, महारौरव, शाल्मिनी इत्यादि अनेक परम दुःखदायक नरक हैं । इनमें कौन-कौन पापात्मा जीव जाते हैं उन्हें क्रमपूर्वक श्रवण करिये । जो मनुष्य बिना ब्राह्मण, बिना देवता एवं बिना गौ के झूठी गवाही देता है वह रौरव नरक में जाता है ।

जो भ्रूण हत्यारा है, सुवर्ण चोर है, मद्य पीते हैं, ब्रह्म हत्यारा है, पर धन हारी है वे

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

सब तप्त कुम्भ नरक में जाते हैं। गुरु के वध करने वाला, ब्रह्म, माता, पुत्री तथा गौ का वध करने वाला भी तप्त कुम्भ नामक नरक को प्राप्त होता है। साध्वी स्त्री को बेच देने वाला, ब्याज का पैसा खाने वाला, भक्तों को त्याग देने वाला आदि सब तप्त लौह नामक नरक में जाते हैं। जो गुरु का तिरस्कार करता है, पहले भोजन करता है, मनुष्यों में नीच, देवताओं को दोष देने वाला, वेद, प्रतिमाओं को बेचने वाला और जो अगम्य स्त्री गमन करता है वे सब हे द्विज! महाज्वाल नरक को प्राप्त होते हैं। चोर, गौ, हत्यारा, पतित, मर्यादा तोड़ने वाला, देव, ब्राह्मण, मित्रों से द्वेष करने वाला ये सब कृमिभक्त नामक नरक में जाते हैं। जो नीच मनुष्य देवता, पितृ और अतिथि के बिना स्वयं पहले भोजन कर लेता है तथा शास्त्र कूट है वह लालाभक्ष नामक नरक में जाता है।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

जो ब्राह्मण होकर अन्त्यज के साथ सेवन करता है, दुर्जनों से दान ग्रहण करता है, बिना याजकों के यज्ञ करता है, अभक्ष्य पदार्थों को भक्षण करता है वह रूधिरौध नामक नरक में जाता है। मधु का हरण करने वाला, ग्राम की हत्या करने वाला क्रूर वैतरणी नामक नरक में जाता है। जो यौवन से उन्मत्त होकर मर्यादा को भंग करता है, अपवित्र हैं, स्त्री द्वारा अपनी जीविका चलाते हैं वे सब कृमि नामक नरक को प्राप्त करते हैं। वृथा ही वृक्षों को काटने वाले, असिपत्र नरक को गमन करते हैं। जो क्षरमुक और मृग हिंसक व्याघ्र हैं वह वह्निज्वाला नामक नरक को जाते हैं। हे द्विज श्रेष्ठ! जो ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य अपने आचार से भ्रष्ट हैं वे सब उक्त नरकों को जाया करते हैं। जो व्रत का लोप करने वाले तथा अपने आश्रम से भ्रष्ट हैं वे सब अति कठोर नामक सदृश यातना में जाकर पड़ते हैं।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

जो ब्रह्मचारी मनुष्य स्वप्न में वीर्य को स्खलित करते हैं वे श्वभोजन नामक नरक में गमन करते हैं।

हे मुने! इस प्रकार अन्य सहस्रों नरक हैं जिसमें जाकर पापात्मा मनुष्य यातना भोगा करते हैं। पापी भी सहस्रों प्रकार के हैं जिनके फल भोगने को इन नरकों में जाता है। जो मनुष्य मन वाणी और कर्म से अपने वर्ण तथा आश्रम के विपरीत कर्म किया करते हैं वे निश्चय ही नरकगामी होते हैं। ऐसे नरकों में निवास करने वाले पुरुष देवों के द्वारा नीचे की ओर मुख करके देखे जाते हैं और नरकवासी स्वयं भी नीची दृष्टि से देवों को देखा करते हैं। जिस तरह स्थावर कृमि, पाप, पत्ती मृग हैं इसी प्रकार क्रम से वार्षिक स्वर्ग मोक्ष वाले जीवन हैं। जितने जीव-जन्तु स्वर्ग में रहते हैं उतने ही नरक में स्थित होते हैं। जो मनुष्य अपने किए हुए दुष्कर्मों का कोई भी

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

प्रायश्चित शास्त्रानुसार नहीं करते, वे ही पापात्मा प्राणी नरक में पड़ा करते हैं। स्वयंभु मनु ने तथा अन्य ऋषियों ने भी बड़े पापों के बड़े प्रायश्चित और छोटे-छोटे पाप कर्मों के छोटे प्रायश्चित बताये हैं।

उनमें जितने भी कर्म बतलाए गए हैं उनके सम्पूर्ण प्रायश्चित भी हैं। किन्तु भगवान शिव का स्मरण-अर्चन करना सब प्रायश्चितों में बड़ा है। इस रीति से जिस व्यक्ति द्वारा पाप कर्म किए गए हैं उसे पाप कर्मों का पश्चा-ताप करके शिव पूजन-अर्चन करना प्रायश्चित बतलाया गया है। जो व्यक्ति प्रातः, सायं, मध्याह्न तथा रात्रि में किसी भी समय में नित्य नियम से भगवान शिव का स्मरण करता है वह समस्त पापों से मुक्त हो जाता है। हे मुनिवर! जो मनुष्य भक्तिपूर्वक अहर्निश शिव जी का स्मरण करता है वह कभी भी नरक में नहीं जाता है। क्योंकि भगवान शिव की कृपा

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

से वह पाप रहित हो जाता है।

हे द्विजोत्तम ! यह पाप और पुराय ही नरक और स्वर्ग के नामों के अर्थ हैं। दोनों स्थानों में पाप दुःखों के भोग के वास्ते और सुखोपभोग के लिए ही प्राणी जाता है। ऐसा भी होता है कि वही पुराय सुख प्राप्ति के लिए होकर फिर दुःख के लिए हो जाता है। इस कारण से न कुछ दुःख देने वाला है न सुख देने वाला। सब जीवों के मन का परिणाम ही सुख और दुःख का लक्षण हुआ करता है। इसलिए ज्ञान ही परमब्रह्म का स्वरूप है और ज्ञान के लिए तत्व की कल्पना की जाती है। हे मुनिवर ! यह चराचर समस्त जगत ज्ञानात्मक है, पराविज्ञान से अधिक अन्य कुछ भी नहीं है।

व्यास जी बोले—हे सनत्कुमार जी ! अब आप कृपा करके उस पद की प्राप्ति के विषय में कहें जहाँ प्राप्त होकर श्री शिव की परम

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

भक्ति से परायण होकर प्राणी नहीं लौटा करता। सनत्कुमार जी बोले—हे पाराशर पुत्र श्री व्यास जी! अब मैं आपको शुद्ध एवं पवित्र भक्त और तपस्वियों के द्वारा प्राप्त शुभ-गति का वर्णन करता हूँ, जो शुद्ध कर्मों के करने वाले तथा शुद्ध तपश्चर्या में निरत मनुष्य शिवार्चन किया करते हैं वे सर्वदा सभी के वन्दनीय और पूजा करने के योग्य होते हैं। हे महामुने! बिना तप किये शुद्ध व्यक्ति भी शिव लोक की प्राप्ति नहीं कर सकते। शिव की कृपा प्राप्ति भी पण्डितजनों ने तप के द्वारा बतलाई है। आप मेरे इस कथन को सर्वथा सत्य समझें कि तप से ही देवगण प्रत्यक्ष होकर स्वर्ग में आनन्द भोग किया करते हैं और तप के प्रभाव से ही ऋषि मुनि परम हर्षित होते हैं। जो सबसे कठिन, दुराध्य कठि-नाई से अतिक्रमण करने के योग्य होता है वह सब तपस्या से साध्य हो जाया करता है।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

किन्तु यह तप भी एक परम दुःसाध्य है। इसी तप में ब्रह्म, विष्णु लीन रहा करते हैं। सात्तात शिव भी तपोनिरत रहकर ब्रह्म पद पाते हैं। देवियों और देवताओं को भी यह दुर्लभ फल तप के प्रभाव से ही मिलते हैं।

मनुष्य तप जिस-जिस भावना में स्थित होकर किया करता है। वही फल निश्चय रूप में इस लोक में उसे मिला करता है। मेरे इस कथन में संशय नहीं करना चाहिए। हे व्यास जी ! यह तप सात्विक, राजसिक और तप ही सबका साधन कहा गया है। तीन प्रकार का होता है। देवगणों तथा संन्यासियों के द्वारा जो तप किया जाता है वह सात्विक तप कहलाता है। दैत्य तथा मनुष्यों द्वारा किया गया तप राजसिक अर्थात रजोगुणी होता है। तामसिक अर्थात तमोगुणी तप रात्तस लोग तथा दुष्ट प्रवृति वाले किया करते हैं। तत्वदर्शी मुनियों ने तप के फलों के भी तीन प्रकार कहे हैं।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

जप, ध्यान और भक्ति भाव से देवताओं का पूजन-अर्चन करना सात्विक तप है यह साधक को समस्त फल प्रदान करता है। यह इह लोक और परलोक में साधक की समस्त इच्छाओं को पूर्ण करता है। कामना की इच्छा से देह को कष्ट देकर केवल स्वयं के मनोरथों की सिद्धि के लिए या अन्यों को कष्ट देने के लिए जो तप किए जाते हैं वे राजसिक और तामसिक तप कहे जाते हैं।

इन तपों में सात्विक तप को सर्वोत्तम समझना चाहिए। इसमें निश्चय, धर्मबुद्धि, स्नान, पूजा, जप, होम, शुचि, अहिंसा और इन्द्रिय निग्रह, व्रत, उपवास, मौन विद्या, सत्य अक्रोध, दान, ,धर्म शान्ति और दया का भाव होता है। सात्विक तप में बावडी, कूप, सरोवर एवं महल आदि का निर्माण, कृच्छ्र, चन्द्रायण यज्ञ, श्रेष्ठ तीर्थों का अटन करना होता है। हे व्यास जी ! ये सब धर्म के स्थान हैं। वे

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

बुद्धिमानों को सुख देने वाले और शिव भक्ति के स्वरूप होते हैं। संक्रान्ति, विषुवन योग नाग युक्त का प्रयोग करना चाहिए, तीनों कालों में ध्यान, ज्योति, अनमनी भाव यह धारणा कही जाती है। रेचक, पूरक, कुम्भक ये तीन प्रकार के प्राणायाम हैं। नाड़ी संचार का ज्ञान करना तथा प्रत्याहार का रोकना होता है। चतुर्थ अणिमा आदि आठ सिद्धियों के प्रति अधो बुद्धि रखना यह पूर्वोत्तम परम ज्ञान का साधन कहे गए हैं।

कष्ठावस्था, मृतावस्था और हरितावस्था ये तीन अवस्थाएं बतलाई गई हैं। ये अनेक तरह की उपलब्धियों और समस्त पापों के नाश करने वाली होती हैं। नारी, शय्या, पान, वस्त्र धूप-लेपन एवं ताम्बुल भक्षण ये पांच राजेश्वर्य विभूतियां होती हैं। हेम भारवस्था, ताम्रगृह, रत्न धेनु, वेद-शास्त्रों का पाण्डितय, गीत, नृत्य आभूषण, शंख वीणा, मृदंग, गजेन्द्र, छत्र एवं

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

चमर ये सब उपादान भोगस्वरूप हैं। इनमें हुआ आसक्त मानव अनुराग को प्राप्त हो जाया करता है। हे मुनिवर! जो सांसारिक प्राणी हैं वे दर्पण के तुल्य तथा तिलों की भांति पेरे जाते हैं और भ्रमण को प्राप्त होकर ज्ञान से मोहित किए जाते हैं। प्राणी सब कुछ ज्ञान रखता हुआ भी इस संसार में घड़ी यन्त्र की तरह भ्रमण किया करता है और स्थावर-जंगम स्वरूप समस्त योनियों में परम दुखित होकर विचरण करता रहता है। इस प्रकार समस्त योनियों में घूमकर कालान्तर में जाकर कहीं उसे यह मनुष्य योनि प्राप्त हुआ करती है। इस प्रकार मानव योनि को प्राप्त करना अत्यन्त दुर्लभ होता है।

कभी पुण्य की गुरुता से भी मानव जन्म प्राप्त किया जाता है। कर्मों के बड़ेपन और छोटेपन की अदभुत गति बतलाई गई है। जो जीवात्मा स्वर्ग प्राप्ति तथा मोक्ष साधक इस

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

मानव शरीर में आकर भी अपने कल्याण के लिए कर्म नहीं करता वह मृत्यु के पश्चात बहुत समय तक शोक-एवं चिंता में डूबा रहता है। समस्त देवगणों और असुरों को भी यह मनुष्य शरीर परम दुर्लभ हुआ करता है। सौभाग्य से जब मानव जन्म मिल जाए तो इसे व्यर्थ न खोकर कुछ परमार्थ का कार्य करना चाहिए ताकि नरकों में गमन न करना पड़े। यदि यह दुर्लभ मानव शरीर पाकर भी स्वर्ग-अपवर्ग की प्राप्ति का उद्यम न किया तो इस जन्म को धिक्कार है।

हे व्यास जी! समस्त वर्गों, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि मनुष्य योनि में ही प्राप्त करना कहा है। इसलिए इन्हें अवश्य ही प्राप्त करके धार्मिक पद्धति से यत्नपूर्वक इनका यथोचित उपयोग करना चाहिए। इस मानव जन्म में भी ब्राह्मण शरीर प्राप्त करना परम दुर्लभ है, इसे पाकर भी जो अपने लिए कल्याणकारी

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

कार्य नहीं करता उससे बड़ा मूढ़ और जड़ कौन होगा ? समस्त द्वीपों में इस भूमि को कर्म क्षेत्र बतलाया गया है। यहां पर स्वर्ग और मोक्ष का अर्जन किया जाता है। इस भारत भूमि में अति अस्थिर मानव शरीर को प्राप्त करके भी प्राणी ने यदि कल्याणकारी कार्य नहीं किया तो निश्चित रूप से उसने अपनी आत्मा को वंचित किया है।

हे विप्रवर ! जहां यह कर्म भूमि बतलाई गई है वहां यह फल भूमि भी कही गई है। यहां पर जो सत्कर्म किया जाता है वह स्वर्ग में जाकर भोगा जाता है। जब तक यह सत्कर्म का साधन भूत शरीर स्वस्थ्य रहे तभी तक धर्म के कृत्य करे, क्योंकि स्वास्थ्य के अभाव में औरों द्वारा प्रेरणा पाकर भी कुछ नहीं किया जा सकता न ही अस्वस्थ शरीर में कोई उत्साह शेष रह जाता है। जो व्यक्ति इस अनिश्चित, क्षणभंगुर शरीर के द्वारा परम

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

स्थिर एवं निश्चल धर्म की सिद्धि नहीं करता उसका ध्रुव धर्म तो नष्ट हो ही जाता है और अध्रुव यह शरीर तो अवश्य ही नष्ट होने वाला होता है। इस मानव शरीर की आयु के ऐसे ही खराड-खराड होकर नष्ट होते चले जाते हैं। शास्त्र, ऋषि-मुनि, दिन और रात उपदेश दे रहे हैं किन्तु प्राणी इस गहरी नींद से फिर भी नहीं जग रहे हैं जब कि किसी को मृत्यु का ज्ञान नहीं है कि कब हो जाये। जब अचानक मृत्यु हो जाएगी तो इस ऐश्वर्य की खोज कौन करेगा ?

मृत्यु को प्राप्त होने पर प्राणी अपने समस्त धन-वैभव को यहीं त्याग करके निश्चय से अकेला जाया करता है। इतना ज्ञान होने पर भी मार्ग में अपने लाभ के लिए दान क्यों नहीं करता। जिस प्राणी ने दान रूपी चबेना के बिना अर्थात बिना दान-पुराय के परलोक यात्रा की है उन्हें भारी कष्ट सहन करने पड़े

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

पूछा था कि–हे भगवान ! हे देव ! इस काल चक्र के विषय में मुझे अभी भी संशय है। मृत्यु का चिन्ह और आयु प्रमाण जैसा कुछ होता है मुझे कृपा करके बतलावें। शिवजी बोले–हे देवेशि ! मैं तुमको उस परम सत्य शास्त्र को कहता हूँ जिसके द्वारा मनुष्य काल का ज्ञान कर सकता है। मृत्यु के चिन्हों का ज्ञान दिन, पक्ष, ऋतु, अयन और सवंतसर आदि द्वारा हुआ करता है। ये बाहरी और भीतरी, स्थूल तथा सूक्ष्म हुआ करते हैं। हे प्रिय ! यदि अकस्मात ही पीत वर्ण वाला शरीर ऊपर से लाल हो जावे तो मनुष्य की मृत्यु छः मास के अन्दर मान लेनी चाहिए।

जिस समय मुख, आंख, कान, नाक जिह्वा का स्तम्भन हो जावे तो ऐसा लक्षण भी छः मास के भीतर मृत्यु का सूचक होता है। हे प्रिय ! जो व्यक्ति मानव समुदाय द्वारा की गई ध्वनि को शीघ्र सुनने में असमर्थ हो

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

उसकी मृत्यु भी काल ज्ञान के ज्ञाताओं ने छः मास के भीतर कही है। जो कोई सूरज, चांद और अग्नि के प्रकाश को न देख पावे तथा उसे सारी वस्तु काले वर्ण की ही दृष्टिगोचर हों तो काल के ज्ञाताओं को उसकी आयु छः मास के भीतर ही समझ लेनी चाहिए । हे प्रिय ! जिसका वाम हस्तलगार एक सप्ताह तक फड़कता रहे उसकी मृत्यु एक मास के भीतर हो जाती है। जब व्यक्ति के पूरे शरीर में टूटन हो और तालू सदैव सूखा-सूखा रहे तब भी उसकी आयु एक मास ही समझनी चाहिए । वात-पित्त-काम इन तीनों दोषों के बिगड़ने पर अर्थात त्रिदोष होने पर मुख तथा गला सूखता हो तो प्राणी की आयु छः मास तक शेष रहती है। यदि नाक बहती हो तो मात्र एक पक्ष तक प्राणी का जीवन काल शेष समझ लेना चाहिए। हे देवी ! जिस व्यक्ति की जीभ मोटी हो जावे तथा समस्त दांतों में

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

कीड़ा लग जावे तो उसकी मृत्यु छः मास में हो जाया करती है।

जिस आदमी को दर्पण, जल, तेल आदि में अपनी मुखाकृति विकृत दिखाई दे किंवा बिल्कुल ही न दिखाई दे तो काल ज्ञान के ज्ञाताओं को उसकी आयु छः मास की समझ लेनी चाहिए। हे भामिनी ! जिसे अपनी परछाई दृष्टिगोचर न हो किंवा दिखाई दे और बिना सिर के हो तब ऐसे व्यक्ति का जीवन काल मात्र एक मास का होता है। हे भद्र ! ऊपर मैंने मनुष्य के अंगों से सम्बन्धित मृत्यु के चिह्न बतलाए हैं अब अन्य चिह्नों को कहता हूँ। जब व्यक्ति को सूर्य एवं चन्द्रमा बिना किरणों के लाल गोले के सदृश दृष्टिगोचर हों तो उसे अपना मृत्यु काल एक पक्ष बाद जान लेना चाहिए। जो व्यक्ति अरून्धती आदि तारागण को नहीं देख पाता वह एक मास तक जीवित रहा करता है। जिस व्यक्ति

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

को ग्रह तो दिखाई पड़ें किन्तु उसे दिशा भ्रम रहे तो उसका जीवन काल छः मास ही रहता है। जिस व्यक्ति को सूर्य मण्डल, ध्रुवादि तारागण न दिखाई दें, रात्रि काल में धनुष दिखलाई पड़े तथा दोपहर के समय उल्कापात दृष्टिगोचर हो तो उसे अपनी आयु छः मास की जान लेनी चाहिए इसमें कोई सन्देह नहीं है।

जब व्यक्ति को सप्त ऋषि न नजर आवें तो वह छः मास में मृत्यु को प्राप्त हो जायेगा। जो व्यक्ति अकेला ही चन्द्रमा अथवा सूर्य को राहु ग्रसित देखा करता है या दिक्-चक्र को भ्रान्ति के साथ देखता है काल ज्ञान के ज्ञातओं को उसकी आयु छः मास की जान लेनी चाहिए। अकस्मात जिस मानव का शरीर नीले रंग की मक्खियों से व्याप्त हो जाये तो वह निश्चय से एक मास की आयु वाला होता है। जिस व्यक्ति पर गिद्ध, काक

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

आदि आक्रमण करते हुए सिर पर बैठें तो वह व्यक्ति एक मास में काल का ग्रास बन जाएगा। हे प्रिय ! अब मैं नाद द्वारा प्रकट होने वाले काल ज्ञान को कहता हूं। आत्म विज्ञान को चार प्रकार से जान लेना चाहिए। क्षण त्रुटि लव निमेष और कष्ट काल का मुहूर्त, दिन-रात, पक्ष, मास, ऋतु, वासर, शब्द युग कल्प और महा कल्प आदि। इसी परि-पाटी से सदा शिव काल हरण किया करते हैं। वाम और दक्षिण के मध्य में तीन मार्ग कहे हैं। पांच दिन से आरम्भ करके पच्चीस दिन पर्यन्त वामाचार गति में नाद होता है। यह नाद का प्रमाण मैंने तुम्हें बतला दिया है। हे देवी ! काल के वेत्ता पुरुष को वामाचार गति में भूत, रन्ध्र, दिशा और ध्वजा रूप जान लेना चाहिए।

हे भामिनी ! यदि उसमें ऋतु के विकार वाले गुण प्रतीत हों तो उसे ज्ञान के प्रमाण

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

रखने वालों द्वारा दक्षिण प्रमाण वाला नाद कहा गया है। जिस समय भत संख्यक इड़ा आदि नारी प्राणों का वहन किया करती है तो व्यक्ति की मृत्यु एक वर्ष में ही हो जाया करती है। दस दिन पर्यन्त तक चलते रहने से आयु काल एक वर्ष, बीस दिन तक चलते रहने से छः माह, यदि पच्चीस दिन तक चले तो तीन मास, छब्बीस दिन तक चले तो दो मास और यदि सत्ताईस दिन तक चले तो जीवन एक मास ही शेष रहता है, इसी रीति से वायुमान के प्रमाण से नाद को समझ लेना चाहिए। हे देवी! चार स्थानों में नाड़ी स्थित हुआ करती है और कुल सोलह नाड़ियां हैं। अब मैं उन सबका प्रमाण बतलाता हूं। छः दिन तक विधि के साथ वाम रन्ध्र में प्राण वायु बहती है। जब छः दिन तक नाद प्रमाण चढ़ा रहे तो व्यक्ति की आयु दो वर्ष आठ महीने और आठ दिन की मान लेनी चाहिए।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

आदि आक्रमण करते हुए सिर पर बैठें तो वह व्यक्ति एक मास में काल का ग्रास बन जाएगा। हे प्रिय! अब मैं नाद द्वारा प्रकट होने वाले काल ज्ञान को कहता हूं। आत्म विज्ञान को चार प्रकार से जान लेना चाहिए। क्षण त्रुटि लव निमेष और कष्ट काल का मुहूर्त, दिन-रात, पक्ष, मास, ऋतु, वासर, शब्द युग कल्प और महा कल्प आदि। इसी परिपाटी से सदा शिव काल हरण किया करते हैं। वाम और दक्षिण के मध्य में तीन मार्ग कहे हैं। पांच दिन से आरम्भ करके पच्चीस दिन पर्यन्त वामाचार गति में नाद होता है। यह नाद का प्रमाण मैंने तुम्हें बतला दिया है। हे देवी! काल के वेत्ता पुरुष को वामाचार गति में भूत, रन्ध्र, दिशा और ध्वजा रूप जान लेना चाहिए।

हे भामिनी! यदि उसमें ऋतु के विकार वाले गुण प्रतीत हों तो उसे ज्ञान के प्रमाण

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

रखने वालों द्वारा दक्षिण प्रमाण वाला नाद कहा गया है। जिस समय भत संख्यक इड़ा आदि नारी प्राणों का वहन किया करती है तो व्यक्ति की मृत्यु एक वर्ष में ही हो जाया करती है। दस दिन पर्यन्त तक चलते रहने से आयु काल एक वर्ष, बीस दिन तक चलते रहने से छः माह, यदि पच्चीस दिन तक चले तो तीन मास, छब्बीस दिन तक चले तो दो मास और यदि सत्ताईस दिन तक चले तो जीवन एक मास ही शेष रहता है, इसी रीति से वायुमान के प्रमाण से नाद को समझ लेना चाहिए। हे देवी ! चार स्थानों में नाड़ी स्थित हुआ करती है और कुल सोलह नाड़ियां हैं। अब मैं उन सबका प्रमाण बतलाता हूं। छः दिन तक विधि के साथ वाम रन्ध्र में प्राण वायु बहती है। जब छः दिन तक नाद प्रमाण चढ़ा रहे तो व्यक्ति की आयु दो वर्ष आठ महीने और आठ दिन की मान लेनी चाहिए।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

जब सत्रह दिन तक प्राणारूढ़ रहे तो प्राणी एक वर्ष सात मास छः दिन तक जीवित रहता है। यदि आठ दिन तक बराबर चले तो दो वर्ष चार मास चौबीस दिन तक प्राणी जीवित रहता है। नौ दिन तक चलते रहने से दो वर्ष एक मास का जीवन शेष समझें।

ग्यारह दिन तक चलने पर मनुष्य एक वर्ष नौ मास और आठ दिन तक जीवित रहा करता है। बारह दिन पर्यन्त चलने पर एक वर्ष सात मास छः दिन तक जीवित रहता है। जब तेरह दिन तक चले तो आयु को एक वर्ष चार मास चौबीस दिन शेष समझें। जब वायु का प्रमाण चौदह दिन तक रहे तो एक वर्ष तीन मास जीवन शेष रहा करता है। पन्द्रह दिन तक चलने पर आयु को नौ मास और चौबीस दिन समझे। यदि अट्ठारह दिन तक वामाचार हो तो जीवन आठ मास बारह दिन शेष कहा गया है। हे देवी! यदि तेईस

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

दिन पर्यन्त यह स्वास प्रवाह चले तो व्यक्ति का जीवन कुल चौबीस दिन का शेष रहता है इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। इस रीति प्राण के संचार से अवान्तर के दिन का काल वर्णन तुम्हारे समक्ष कर दिया है यह वामाचार का था अब दक्षिणाचार को श्रवण करो।

यदि अट्ठाईस के प्रवाह में दक्षिणाचार हो तो ऐसा व्यक्ति पन्द्रह दिन की आयु भोगता है। दस दिन के प्रवाह में दस दिन में, तीस दिन के प्रवाह में पांच दिन में मृत्यु को प्राप्त हो जाया करते हैं। हे देवी! जब इकतीस दिन पर्यन्त तक प्राण का प्रवाह रहे तो उसे अपना जीवन तीन दिन समझ लेना चाहिए। जब सूर्य नाड़ी बत्तीस दिन तक निरन्तर प्राण वायु को वहन करे तो व्यक्ति की आयु दो दिन शेष जाने। अब मध्यस्थ प्राण वायु के विषय में सुनो। जब वायु का प्रवाह एक भाग से मुख में छोड़ते हुए रहता

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

है तो वह व्यक्ति केवल एक दिन जीवित रहा करता है। कालवेत्ताओं ने यही काल ज्ञान बताया है।

मुनियों ने कहा–हे पौराणिकोत्तम सूत जी ! अब हमें पराशक्ति के रहस्य को समझाइये। सूत जी बोले–हे मुनिवृन्द ! व्यास जी ने सनत्कुमार जी से पूछा–हे सर्वज्ञ ! मैं पार्वती के सुन्दर क्रिया योग को जानना चाहता हूं अब कृपा करके उसके लक्षण क्या हैं और उन का फल क्या है बतायें ? सनत्कुमार जी बोले— जगदम्बा के भुक्ति और मुक्ति प्रवाह करने वाले ज्ञान योग, क्रिया योग, भक्ति योग तीन मार्ग हैं। मानव के चित्त का आत्मा के साथ संयोग हो जाता है जो यह ज्ञान योग कहा गया है। जिसमें बाहरी अर्थों का संयोग है वह क्रिया योग है तथा जगदम्बा और आत्मा का संयोग भक्ति योग है। इन तीनों योगों को क्रिया योग कहते हैं। धर्म से भक्ति का

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

उदय होता है, भक्ति से ज्ञान उत्पन्न होता है तथा ज्ञान से मुक्ति की प्राप्ति हुआ करती है ऐसा ही शास्त्रकारों का वचन है। हे मुनिश्वर ! योग ही मुक्ति का प्रमुख कारण होता है और क्रिया योग योग को परम ध्येय साधन होता है। प्रकृति को माया जान कर तथा सनातन ब्रह्म को भी माया जान कर और इन दोनों को भिन्न शरीर का ज्ञान प्राप्त करके मनुष्य सांसारिक बन्धन से मुक्त हो जाता है।

हे व्यास जी ! जो कोई व्यक्ति पाषाण, काष्ठ अथवा मिट्टी से देवी के मन्दिर का निर्माण कराया करता है उसके पुण्य का महाफल मिलता है। जो फल प्रतिदिन भजन करने से मिलता है। वही फल निर्माण कार्य से मिला करता है। श्री माता के धाम का निर्माता धर्मात्मा पुरुष अपने अतीत और आगामी एक-एक सहस्र कुल को तार दिया करता

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

है। शास्त्रों का कथन है कि करोड़ों जन्मों के पाप मां का मन्दिर बनवाने से क्षय हो जाते हैं। जिस प्रकार नदियों में गंगा श्रेष्ठ है शोक में क्षमा तथा भूमि में गम्भीरता, ग्रहों में भुवन भास्कर श्रेष्ठ हैं इसी प्रकार की स्थिति देवताओं में पराम्बा की कही गई है। इसलिए परम प्रधान देवी के मन्दिर का निर्माता प्रत्येक जन्म में सुख और प्रतिष्ठा को प्राप्त कर ले तो क्या आश्चर्य। वाराणसी, कुरुक्षेत्र, प्रयाग, पुष्कर, गया, समुद्र तट, अमर कंटक, श्री पर्वत, कर्ण, मथुरा, अयोध्या, द्वारिका आदि में जो मनुष्य माता जगदम्बा का मन्दिर बनवाता है वह व्यक्ति निश्चय ही संसार सागर से मुक्त हो जाता है।

मन्दिर के बनवाने में जो ईंट लगी रहती है वह जितने वर्ष टिक जाती है इतने ही सहस्र वर्षों निर्माण मणि द्वीप में निवास करता है। जो सभी लक्षणों से युक्त देवी की

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

प्रतिमा निर्माण कराता है वह निडर होकर पार्वती के परम लोक को प्राप्त करता है। ऋतु, ग्रह, नक्षत्रादि के शुभ योग में जो पार्वती की मूर्ति की प्रतिष्ठा कराता है वह भगवती की कृपा से कृतकृत्य हो जाता है। कल्प के आरम्भ से लेकर उसके वंश में जो भी उत्पन्न हुए या आगे जो उत्पन्न होंगे वह तर जाता है। जो व्यक्ति देवी की सुन्दर मूर्ति के साथ पंचायत स्वरूप देवताओं की स्थापना करता है उसके पुरायों का फल गिना नहीं जा सकता। चन्द्र सूर्य के ग्रहण में विष्णु भगवान के करोड़ नाम के जपने से जो फल मिलता है वह उससे सौ गुना अधिक पा लेता है।

शिव नाम के जपने से जो फल प्राप्त होता है वह देवी के नाम जपने से करोड़ गुना अधिक हो जाता है। जिसने तीनों देवताओं के स्वरूप वाली देवी की स्थापना की उसे प्रसाद का फल अवश्य मिलता है। जिस पर भगवती

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

की कृपा हो जाये संसार में उसे कुछ भी दुर्लभ नहीं है। देवी के प्रसाद से समस्त पापों का क्षय होकर पुत्र धनादि की वृद्धि होती है। जो मनुष्य किसी अन्य के द्वारा निर्मित मन्दिर को देखकर यह सोचता है कि अगर मेरे पास धन होता तो मैं भी मन्दिर बनवाता ऐसा सोचने वाला भी समस्त परिवार के साथ स्वर्ग को जाता है। जो कोई जगत को उत्पन्न करने वाली माता का आश्रय ग्रहण करता है उसे साधारण मानव नहीं समझना चाहिए क्यों-कि वह तो साक्षात भगवती का गण ही है। जो मनुष्य सोते जागते 'उमा' इन दो अक्षरों को रटता है वह साक्षात शिवा का गण ही है।

जो नित्य पुष्प, धूप, दीप आदि से श्री शिव और भगवती का पूजन अर्चन करते हैं वे अन्त समय में भगवती के धाम को प्राप्त होता है। जो नित्य देवी के मण्डप किंवा

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

मन्दिर को गोमय से, मिट्टी से लीप कर मंडप का मार्जन करते हैं वे पुरुष भी मां पराम्बा को प्रिय हैं। भगवती अपने भक्तों को यही आशीष देती हैं कि सुख के अनुरागी मेरे भक्त सौ साल तक जीवित रह कर सुखोपभोग करें। जो पराम्बा की सुन्दर प्रतिमा निर्माण करा कर उसको विधिवत स्थापित कराते हैं तथा उसकी हर रोज अर्चना करते हैं। ऐसे भक्त लोग मन में जो-जो भी इच्छा करते हैं वे सब उनकी पूर्ण हो जाती हैं। मां भगवती का ऐसा अद्भुत चमत्कार है।

जो व्यक्ति जगदम्बा की प्रतिमा को स्थापित करा के उसको नित्य मधुपर्क, घृत आदि से स्नान कराता है वह उस महान फल को प्राप्त करता है जिसका वर्णन कोई नहीं कर सकता है। भगवती को स्नान कराने का विधान है कि चंदन, कर्पूर, जटामासी, नागरमोथा, अगर, तगर एवं गुग्गल आदि सुगन्ध

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

वाले द्रव्यों से सम्बन्धित एक ही रंग की गाय के दूध (विशेषतः कपिला गाय) से स्नानाभिषेक कराना चाहिये, फिर धूप की आहुतियां देनी चाहिए तथा घृत और कपूर से आरती करनी चाहिए। कृष्ण पक्ष की अष्टमी, अथवा नवमी या अमावश्या वा पंच दिक्पालों की तिथियों में गन्ध, पुष्प आदि से भगवती का विशेष रूप से पूजन करना चाहिए। देवी सूक्त या श्री सूक्त का पाठ करके या नवार्ण मन्त्र का जप करते हुए विष्णु क्रान्ता या तुलसी दल अर्पण करते हुए विशेषतः कमल पुष्पों को देवी पर चढ़ाना चाहिए। ये सब पुष्प देवी को अति प्रिय हैं। ऐसा करने वाला व्यक्ति परिवार सहित परम धाम को प्राप्त करता है।

पूजन की समाप्ति पर देवी भक्तों को मां से अपने पापों की क्षमा मांगते हुए करबद्ध प्रार्थना करनी चाहिए। हे महेशानि! हे जगत

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

माता ! आप हम पर प्रसन्न हों। मन्त्र जप करने वाले को सर्वप्रथम संकल्प करना चाहिए फिर विनियोग करे, करन्यास ऋष्यादि न्यास एवं हृदयादिन्यास करना चाहिए। महालक्ष्मी का ध्यान करते हुए उनका स्तवन करना चाहिए विविध उपचारों से पूजन करके नैवेद्य आदि अर्पण करना चाहिए तथा पूजन समाप्ति पर क्षमा याचना करनी चाहिए कि हे जगदानन्द दायिनी मां ! मैं जप, पूजन आदि कुछ नहीं जानता मैं तो मात्र आपका किंकर हूँ यदि त्रुटि कोई रह गई हो तो वह आपके प्रशाद से पूर्णता को प्राप्त हो। फिर विसर्जन करे। जो अर्पण किये नैवेद्य का भक्षण करता है वह समस्त पापों से छुटकर निर्मल चित्त हो जाता है। जो चैत्र शुक्ल तृतीय को भवानी का व्रत करता है वह संसार बन्धन से मुक्त होकर परम धाम को जाता है। जो व्यक्ति इस दिन देवी का दोलोत्सव करता

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

है तथा पार्वती सहित शिव का अर्चन करता है, जगन्माता उसे अभीष्ट फल प्रदान करती हैं।

वैशाख मास की शुक्ल तृतीया (अक्षय तृतीया) को निरालस्य हो कर पार्वती के व्रत को करता है तथा मल्लिका, जवा, चम्पा, बन्धूक और कमलों से शिव के सहित शिवा का पूजन-अर्चन करता है वह पुरुष करोड़ों वर्षों के पापों का क्षय करके धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों को प्राप्त कर लेता है। ज्येष्ठ शुक्ल तृतीय को सुगन्धित पुष्पों से पार्वती सहित शिव का पूजन करता है एवं व्रत को करता है संसार में उसके लिए कुछ भी अप्राप्य नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति को भगवती का रथोत्सव आषाढ़ शुक्ल तृतीया को अवश्य ही करना चाहिए ये उत्सव अपनी सामर्थ्य के अनुसार करे। इस भूमि को रथ, चन्द्र, सूर्य को रथ के दोनों पहिये, वेदों को

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

अश्व तथा ब्रह्मा जी को सारथी समझ कर मन में कल्पना करे तथा अनेक पुष्पों से पूजन करे रथ में भगवती को विराजमान करने का ध्यान करे। बुद्धिमान भक्त को ऐसी ही कल्पना करनी चाहिए। रथ को ध्यान में धीरे-धीरे चलावे और जब रथ चले तो जय-जयकार करे और प्रार्थना करे कि हे महे शनि ! हम सब तेरी शरण हैं आप हमारी रक्षा कीजिए। ऐसा कहते हुए रथ को अन्तिम सीमा तक ले जाये वहां भगवती का पूजन अर्चन करे, अनेक वाद्यों को बजावे तथा रथ को लौटा लावे तथा प्रणामपूर्वक विसर्जन करे इस प्रकार देवी का रथोत्सव करने वाला भक्त इस संसार में सुखोपभोग करके परम धाम को जाता है इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है।

जो मनुष्य श्रवण एवं भाद्रपद की शुक्ल तृतीय को देवी का व्रतोपवास करके पूजन अर्चन करता है वह संसार में पुत्र, पौत्रादि

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

एवं धन के सुख की वृद्धि करके देवी के परम धाम को जाता है। आशाविनि मास के नवरात्रि पर्व की तृतीय तिथि को व्रत अवश्य ही करना चाहिए। इस व्रत के करने वाले को कुछ भी असाध्य नहीं है इसमें कुछ भी सन्देह नहीं। नवरात्रि पर्व के व्रत का ऐसा अद्भुत महात्म्य होता है जिसका वर्णन शिव, ब्रह्मा, स्वामी कार्तिकेय भी करने में समर्थ नहीं हैं। हे मुनिश्रेष्ठ ! इस व्रत को करके राजा सुरथ ने अपने अपहृत राज्य को पा लिया था। इसी व्रत के प्रभाव से राजा सुदर्शन अयोध्या के अधीश्वर बने थे। इसी व्रत के प्रभाव से समाधि वैश्य ने भगवती को प्रसन्न करके मोक्ष पद प्राप्त किया था।

जो मनुष्य नवरात्रि में भगवती के व्रत को करके पूजन अर्चन करता है उसके समस्त मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं। जो कातिक, मार्गशीर्ष पौष, और माघ मासों की शुक्ल ततीया

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

को व्रत करके रक्त करवीर (लाल कन्नेर) के पुष्पों से पूजन करता है उसके समस्त मनोरथों की पूर्ति जगन्माता अवश्य ही करती हैं। यह व्रत स्त्रियों को सौभाग्य की प्राप्ति के लिए निश्चत रूप से करना चाहिए। विद्या, धन, सन्तान के इच्छुक पुरुषों को भी यह व्रत करना चाहिये। सभी मोक्षार्थी भी यह व्रत करें तो निश्चय ही परम धाम को प्राप्त होंगे।

जो कोई इस महान् पवित्र उमा संहिता को पढ़ता है, सुनता है वह परमगति को प्राप्त करता है। जिसके घर में यह संहिता विराजती हो तथा गृह स्वामी द्वारा पूजित हो उसके समस्त मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं। उस घर में भूत, पिशाच आदि दुष्टों का तनिक भी भय नहीं होता। इसके नित्य पाठ से पुत्र पौत्रादि एवं धन की वृद्धि होती है तथा अन्त में परम-गति मिलती है। इसलिए नित्य ही इसका पाठ करना चाहिए।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

सूत जी ने कहा—हे निष्पाप मुनिवृन्द ! आप लोग परम् भाग्यशाली एवं धन्य हो इस में कुछ भी सन्देह नहीं है । हमारे प्रातः स्मरणीय गुरु जी ने नैमिषारणय के निवासी मुनियों को जो ओंकार को उपदेश दिया था वही उपदेश मैं आप लोगों को सुनाता हूं । स्वारोचिव मन्वन्तर की समाप्ति के समय में समस्त सिद्धियों को प्रदान करने वाले नैमिषारणय दृढ़ व्रत धारण कर तपश्चर्य करने वाले ऋषिगण यज्ञों के स्वामी रुद्र देव का एक सहस्त्र वर्ष में पूर्ण होने वाला यज्ञ करने को तत्पर हुये । वहां उन्होंने महर्षि व्यास जी के दर्शनों की इच्छा तथा शिव भक्ति में लग कर रुद्राक्ष की माला एवं भस्म लेपन करने लगे । उन समस्त मुनिगणों की इच्छा जानकर भगवान के

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

अंशावतार व्यास जी प्रकट हो गए।

उनके प्रकट होने पर मुनियों को बड़ा आनन्द हुआ और उन्होंने उनका स्वागत सत्कार किया एवं पूजन किया। व्यास जी के लिए स्वर्ण निर्मित आसन दिया। वहां विराजमान होकर परम ज्ञानी व्यास जी ने मधुर वाणी में कहा—हे ऋषियो! आपके इस यज्ञ में सभी प्रकार की कुशलता तो है, क्या आप लोगों ने यज्ञपति भगवान रुद्र का भली-भांति सविधि पूजन कर लिया है? आप लोगों ने विश्व के संहारकर्त्ता रुद्र का पार्वती सहित किस भावना से यजन किया है? जहां तक मैं समझा हूँ आप लोगों की पहले से ही शिव में प्रीति थी और अब मोक्ष की भावना से आप लोगों ने यह आयोजन किया है। व्यासजी के ऐसे वचन सुनकर ऋषिगण बोले—हे मुनि शार्दूल! आप तो समस्त जगत के स्वामी महादेव की माया शक्ति एवं गणों के प्रसाद के सागर हैं।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

आपके चरण कमलों के दर्शन पाकर हम सब कृतार्थ हो गये हैं। हे समस्त विद्याओं के अधिपति ! हम लोग इस नैमिषारण्य में ओंकार के अर्थ प्रकाश दीर्घ यज्ञ का आयोजन कर रहे हैं। महाप्राज्ञ ! परमेश्वर को जानने और समझने के विचार से हम परस्पर विचारते हैं। हे साक्षात् नारायण के अंश से समुत्पन्न ! हम उस परमेश्वर को भली-भांति नहीं जानते इसलिए आपकी शरण ली है। आप सर्वज्ञ हैं समर्थ हैं कृपा करके हमारी शंका का समाधान कीजिए।

हे कृपा सागर ! कोई अन्य इस कार्य को नहीं कर सकता अतः आप हम सबको भ्रम के सागर में डूबे हुओं को शिव की ज्ञान रूपी नौका से पार कर दीजिए। हम सबके हृदय में शिवजी के लिए परम श्रद्धा है, कृपया उनको तत्त्व रूप में समझाइए। वेदों के ज्ञाता ऋषियों की ऐसी बात सुनकर वेदान्तशास्त्र के

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

स्वरूप एवं ओंकार स्वरूप में स्थित एवं संसार से मुक्त करने वाले उमा सहित शिवजी का हृदय में ध्यान किया और ऋषियों से कहा— प्रणव के अर्थ का प्रकाशक शिव का ज्ञान संसार में अत्यन्त दुर्लभ है। जिन पर उन महेश्वर की अपार कृपा होती है वही महाभाग शिव के ज्ञान रूपी प्रणव के अर्थ का प्रकाश समझ सकते हैं। इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है कि शिव ज्ञान की प्राप्ति शिव की भक्ति के बिना नहीं हो सकती। मैंने यह देख और समझ लिया है कि यहां आप अम्बिका के स्वामी की उपासना कर रहे हैं। हे आस्तिको! मैं आप को परम पवित्र महेश के उस सुन्दर सम्वाद रूपी इतिहास को सुनाता हूँ।

बहुत प्राचीन समय में दक्ष पुत्री सती ने महेश्वर की निन्दा सुनकर अपने पिता के यज्ञ में अपना शरीर त्याग दिया था। अपनी तपस्या के बल पर हिमालय के यहाँ पुत्री रूप में जन्म

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

लिया था और देवर्षि नारद के उपदेश देने पर शिव प्राप्ति के लिए घोर तपश्चर्या की थी और शिव को पतिरूप में पा लिया था। तब पार्वती ने शिवजी से पूछा था–हे देव! आपने ओंकार सहित मन्त्रों का उपदेश किया है। मैं उस ओंकार (प्रणव) के अर्थ के ज्ञान को जानने की इच्छुक हूँ। प्रणव की उत्पत्ति कैसे हुई, यह प्रणव नाम से क्यों विख्यात है तथा प्रणव में कितनी मात्राएं हैं? इसे वेद आदि में किसने कहा? प्रणव के कितने देवता हैं? आपके द्वारा उपदेशित मन्त्रों में किस प्रकार और क्रम से पांच ब्रह्म स्थित रहा करते हैं। इसकी उपासना से क्या फल मिलता है? इसकी पूजा विधि क्या है यह सब विस्तारपूर्वक कहिए।

जगन्माता की बात सुनकर शिवजी हर्षित होकर बोले–प्रणव वट वृक्ष की भांति स्थूल और उसके बीज के सदृश सूक्ष्म होता है। वही प्रणव वेदादि का सार तथा मेरा रूप होता है।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

'ॐ' इन अक्षर वाले मन्त्र में शिवजी विद्यमान है ऐसा जान लेना चाहिए। इस समस्त जगत में जो कुछ भी है वह गुण और प्रधान के योग से समष्टि रूप विराट और व्यष्ठि रूप स्थावर जगमात्मक सब प्रणव ही है। प्रणव का अर्थ जान लेना ही मेरा ज्ञान प्राप्त कर लेना है। भगवान शिव प्रणव स्वरूप हैं और प्रणव साक्षात शिव स्वरूप इन दोनों में कोई अन्तर नहीं है। इसीलिए ब्रह्म ऋषि गुरु को एकाक्षर स्वरूप कहते हैं। जो ज्ञानी पुरुष वाच्य और वाचक की एकता को मानने वाले हैं वे ही मुझे प्राप्त हो सकते हैं। इसलिए हे महेशानि ! प्रणव को सबका कारण मान लेना चाहिए। जो मोक्ष के इच्छुक हैं या मोक्ष प्राप्त कर चुके हैं वे परमेश्वर को निर्गुण निर्विकार जानते हैं। हे प्रिये ! काशी में प्राण त्यागने वाले को मैं इसी मन्त्र का उपदेश करता हूँ।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

हे अम्बिके ! अब प्रणव का उद्धार कैसे होता है श्रवण करो। इस ज्ञान को जान लेने से व्यक्ति परम गति पा लेता है। सब प्रथम प्रणव में आकर के आश्रित निवृत कला, उकार में ईंधन कला का, मकर में काल का नाद में दराड कला का तथा विन्दु में ईश्वर कला का उद्धार करना चाहिए। इस रीति से पांच वर्णों के स्वरूप वाले प्रणव का उद्धार होता है। यह समस्त स्थावर-जंगम का प्राण होता है, इसलिए इसका नाम प्रणव है। ओंकार में उकार और मकर के क्रम से तीन मात्राएँ होती हैं इस तरह से यह स्वरूप 'ॐ' बनता है। इसके पीछे आधी मात्रा ही नाद बिन्दु स्वरूप वाली है। यहां पर 'ईशान् सर्व विद्यानाम् ईश्वर सर्व भूतानाम् और वै ब्राह्मणविंदधाति पूर्वम्' इत्यादि श्रुति वचन सिद्ध होते हैं। वे सब मुझसे ही हैं, वेदों में यह सब सत्य कहा है। इस प्रकार वेद के आदि में ओंकारात्मक में विद्यमान रहता हूँ।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

प्रणव मेरा वाचक होने से वेद के आदि में कहा जाता है।

अकार प्रणव का बीज है, इसी के रजोगुण से ब्रह्मा की उत्पत्ति होती है। उकार इसकी प्रकृति योनि है इससे सत्व गुण पालनकर्त्ता हरि उत्पन्न होते हैं। इसमें मकर पुरुष बीज है तथा तमोगुणी स्वरूप है इससे तमोगुण युक्त सृष्टि संहारक रुद्र होते हैं। विन्दु स्वरूप साक्षात महेश्वर हैं इनमें तिरोभाव है। नाद स्वरूप सब पर अनुग्रह करने वाले शिव हैं। नाद का मस्तक में विचार करके ही शिव ध्यान योग होता है। वे परात्पर मंगल स्वरूप वाले हैं। वे सर्वज्ञ, सबके कर्त्ता, सबके स्वामी, निर्मल अविनाशी और अद्वैत हैं। अकारादि पांच वर्णों में ब्रह्म के स्वरूप वाले सद्यः वामदेव घोर, पुरुष, ईशान हैं वे सब क्रम से मेरी ही मूर्तियां हैं। सद्यः इससे होने वाले अकार के स्वरूप शिव में आठ कलाएं हैं, उकार में वामदेव रूप

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

तेरह कलायें हैं। मकर में अघोर रूपिणी आठ कलायें होती हैं, विन्दु में पुरुष गोचर चार कलायें तथा नाद में ईशान स्वरूप वाली पांच कलायें हैं।

मन्त्र, यन्त्र, देवता, विश्व गुरु और शिष्य ये छः पदार्थ होते हैं। पूर्वोक्त यह प्रणव मात्र पांच वर्णों का समष्टिक स्वरूप है वही मन्त्र की स्वरूपता को प्राप्त कर लेता है। यन्त्र देवता रूप हैं, विश्व रूप हैं, विश्वरूप गुरु हैं तथा गुरु का शरीर ही शिष्य है। 'ओमितीद सर्वमिति सर्व ब्रह्मेति चक्षुते' का अर्थ है कि यह सब ओंकार स्वरूप है। वाच्य और वाचक का यही अर्थ होता है। जिसको दृढ़ वैराग्य हो जाता है वही इसका अधिकारी है। हे देवी! मैं ही इसका विषय हूँ। जीव और ब्रह्म की एक भावना करनी चाहिए मेरे समेत जीवात्मा की और प्रणव की एकता होती है। यहां बोध्य-बोधक भाव होता है अर्थात् ब्रह्म और जीव की

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

एकता का बोधक प्रणव होता है। यही सम्बन्ध है।

व्रत आदि में तत्पर, शान्त, तपस्वी जितेन्द्रिय, पवित्र आचरण वाला ब्राह्मण, वेदों में निष्ठा रखने वाला, विषयों से विरक्त भाव वाला, लोक-परलोक के विचार से देवता और ब्राह्मण में श्रद्धा रखने वाला, शिवव्रती, शास्त्रों का ज्ञाता को आचार्य के पास जाकर दण्डवत प्रणाम करके उन्हें सन्तुष्ट करना चाहिए। गुणवान शिष्यको गुरुदेव को साक्षात शिव और शिव को गुरुदेव मानना चाहिए। जब ऐसा निश्चय मन में हो तो फिर उन्हें अपना मनोरथ निवेदन करना चाहिए। फिर अपने गुरुजी की आज्ञा लेकर बारह दिन तक केवल जलाहार करे तथा गुफा, पर्वत शिखर, समुद्र तट अथवा शिवालय पर निवास करे। मास की शुक्ल पंचमी या एकादशी के दिन प्रातःकाल में नित्य

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

कर्मों के पश्चात स्नान करे, फिर अपने गुरुदेव

के सम्मुख नान्दी श्राद्ध करके और कर्म करावे (क्षौर बगल और उपस्थ को छोड़ कर करावे) स्नान करे, सायं कालीन सन्ध्योपासना करे सत्तु का आहार ग्रहण करके शिव स्वरूप गुरुदेव को वस्त्र और दक्षिणा दे। फिर अपने विधि के अनुसार हवन करना चाहिए।

समिधा, घृत, अन्न युक्त चरू लेकर पुरुष सूक्त से हवन करना चाहिए। कुशा का आसन लेकर उत्तर दिशा की ओर मुख करके बैठना चाहिए। मृगचर्म धारण करना चाहिए और जब तक ब्रह्म मुहूर्त रहे तब तक गायत्री का जप करे इसके पश्चात पुनः स्नान करके चरू लेकर पुरुष सूक्त से लेकर विरजा होम पर्यन्त आहुतियां दे। वामदेव मन्त्र से हवन करे। वामदेव मन्त्र से हवन इसलिए श्रेष्ठ है क्योंकि ये महापुरुष गर्भ में स्थित मुक्त होकर ही जीवन मुक्त विचरण करते रहे हैं। अग्नि को अपनी आत्मा में आरोपित करे, सन्ध्यो-

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

पासना करे। लोकेषणा पुत्रेषणा और वित्तेषणा का त्याग करके सूर्य के उदित होने पर गायत्री का जप करे तथा प्रेष का उच्चारण करे। इसके पश्चात अपनी चोटी, जनेऊ और कटि सूत्र को त्याग कर पूर्व या उत्तर दिशा में चले जाना चाहिए। मात्र कोपीन और दण्ड ग्रहण करे और अपने गुरुदेव के निकट पतित दण्ड की नाईं गिर कर प्रणाम करे और गुरुदेव के चरणों में बैठ जावे। उस समय गुरुदेव विरजा होम की श्वेत भस्म लेकर शिष्य को मलें तथा भस्म धारण मन्त्रों से तिलक करें तथा मेरा और तुम्हारा (शिव-पार्वती) ध्यान करे अब गुरुदेव प्रसन्न मन शिष्य के सिर पर हाथ रखकर ऋषि आदि का स्मरण कर दाहिने कान में मन्त्र का उच्चारण करे।

इस प्रकार गुरु से मन्त्र का उपदेश लेकर तथा गुरु की अधीनता में रहकर वेदान्त का अध्ययन करे। सदा अपनी आत्मा में गुरु

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

अविनाशी परमात्मा का ध्यान करे। शम-दम आदि के साथ धर्म में विशेष रुचि रखता हुआ, वेदान्त दर्शनशास्त्र का पारगामी होकर अभिमान से एकदम रहित होते हुए जो रहता है वह ही यति कहलाता है। ऐसा यति पुरुष ही उसका अधिकारी होता है।

हृदय पुराडरीक से विराजमान, परम स्वच्छ, शोक रहित, अति उज्ज्वल अष्ट दल कमल के तुल्य, मकरन्द से युक्त कर्णिका से युक्त कर्णिका से शोभित हृदय कमल के अन्दर में आधार शक्ति से आरम्भ करके मणिपूरक हृदय के तत्वांतमय आधार का विचार कर उस समय दहर प्रकाश की भावना करनी चाहिए। 'ॐ' इस एकाक्षर मन्त्र का उच्चारण, मेरे सहित आपका अत्यन्त उत्कराठा के साथ स्मरण करता हुआ उस दहर प्रकाश मध्य से, नित्य ही मेरा स्मरण करता रहे। हे परम प्रिय! इस विधि से उपासना करने वाले पुरुष

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

को मेरे लोक की प्राप्ति हुआ करती है।

पृथ्वी की भली-भांति परीक्षा करके मन की अभिलाषानुसार परम सुन्दर एक चन्दोवा वहां तानना चाहिए। वहां की भूमि को लीप-पोतकर चिकनी बना ले। दो हाथ के चौकोर स्थान में मण्डल की रचना करे, फिर ताल पत्रों से समान भाग तेरह करे, अब मण्डल के पश्चिम दिशा की ओर मुख करके स्थित हो, कलावे से पूर्व-दक्षिण क्रम से चौदह डोरे वहां धरे। हे देवी! ऐसा करने से एक सौ उनहत्तर कोष्टक उसके हो जावेंगे। कोष्टकों के मध्य में जो कर्णिका है उसके बाहर दलाष्टक बन जायेगा।

हे सुरेश्वरि! कमल दल को लाल, तथा पीला बनाकर, क्रम से दल सन्धि को लाल तथा काला बनावे। कर्णिका में प्रणव लिखे उसके नीचे पीठ तथा श्रीकण्ठ लिखे, इसके ऊपर अमरेश, मध्य में महाकाल और महा-

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

काल के मस्तक के समीप दराड लिखे, तद-नन्तर ईश्वर लिखे। सिंहासन को श्याम रंग से तथा पीले रंग से श्री कराठ को रंगे। अमरेश को रक्त वर्ण से तथा महाकाल को कृष्ण वर्ण से रंगे। दराड को धूम्रवर्ण से तथा ईश्वर को धवल रंग का रंगे। इस प्रकार यन्त्र लिख कर सद्योजात मंत्र से आच्छादन करे।

उपस्थित नाद से ईशान को भेद कर तथा अग्नेय क्रम से बाह्य पंक्तियों को ग्रहण करे। हे सुरेश्वरि! उसके कोणों में चार कोष्टकों को श्वेत और लाल रंग से रंग कर चार द्वारों की कल्पना करे, उसके इधर-उधर के कोष्टक पीले रंग से रंगे। अग्नेय दिशा के कोष्टक के मध्य चार अस्त्र प्रमाण वाला आठ दल का कमल बनावे तथा दलों की पंखुड़ी लाल रंग की रंगे। इसकी कर्णिका को पीत वर्ण से बनावे। इसके मध्य में बिन्दु युक्त 'द' कार लिखे। कमल की नैऋत्य की ओर के

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

कोष्टक में चार अस्त्र मध्य वाला अष्टदल कमल उपरोक्त की तरह रंगे तथा श वर्ग के संयुक्ताक्षर 'सू' को लिखे। पद्म मध्य में 'औं' लिखे यह बीज है।

इसी से कमल के ईशान कोण में क वर्ग का तीसरा अक्षर 'ग' लिखे, पंचम स्वर आकार सहित 'गु' लिखे। उस ईशान के कमल के कराठ भाग में बिन्दु लिखे। लिखने का क्रम पूर्व से पशिचम रहेगा। हे पार्वती! इस प्रकार पांच कोष्टक बना कर उनमें से मध्य वाले को पीतवर्ण का रंगे शेष को लाल रंग का बनाना चाहिए। विधि के जानकार पुरुष को चाहिए कि कमल दलों को लाल वर्ण का तथा दल के बाहर के क्षेत्र को कृष्ण वर्ण में रंगे। अग्नि कोण दिशा की ओर वाले चार कोष्टकों को शुक्ल रंग से चित्रित कर पूर्व दिशा के छः बिन्दुओं सहित षट्कोण को कृष्ण वर्ण का बनावे। दक्षिण से उत्तर की ओर

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

तीन कोणों में लाल रंग तथा श्वेत वर्ण युक्त अर्द्ध चन्द्र के आकार का तथा पश्चिम में पीत वर्ण से रंगना चाहिए। चारों बीजों को क्रम से चौकोर में लिख, पूर्व की दिशा में शुभ्रबिन्दु तथा दक्षिण में कृष्णवर्णी लिखे। उत्तर की ओर लाल रंग के उकार, मकर तथा पश्चिम दिशा की ओर आकार पीले रंग से बनाये। नीचे की पंक्ति से प्रारम्भ करके ऊपर की चारों पंक्तियां, पीत, श्वेत, श्याम और रक्तवर्णी और नीचे के त्रिकोण में लाल शुक्ल और पीत-वर्ण रंगना चाहिए।

हे सुरेश्वरि ! इस प्रकार दक्षिण से लेकर सीमान्त तक उसकी बाहरी पंक्ति पूर्वादि मध्य-मान्त में चित्रित करे। पीत, रक्त, श्वेत, श्याम, कृष्ण रंग अग्निकोण दिशा से प्रारम्भ कर रक्त, श्याम, श्वेत, लाल, कृष्ण ये छः रंग दक्षिण के आदि से लेकर पूर्व दिशा तक भरने चाहिएँ। नैऋत्य दिशा से अग्नि कोण तक

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

और वरुण दिशा से लेकर दक्षिण दिशा तक, वायव्य से लेकर उत्तर तक, पूर्व के आदि से लेकर पश्चिम तक और ईशान से लेकर वायव्य तक यही क्रम रखे। इस प्रकार समस्त मण्डल की रचना करके ब्रह्म में परायण होकर भुवन भास्कर सूर्यदेव की पूजा करनी चाहिए।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

१७

शिव बोले—बाघम्बर (बाघ का चर्म) का आसन अस्त्र मन्त्र से शुद्ध किया हुआ प्रयोग करना चाहिए। पहले प्रणव का उद्धार कर आधार का उद्धार करे तत्पश्चात शक्ति कमल का उद्धार करे। इसके साथ चतुर्थी विभक्ति लगाकर अन्त में क्रमः पद जोड़ देना चाहिए। 'ॐ अग्निरिति भस्म-वायूरीति भस्म' आदि मंत्रों से भस्म धारण करके गुरुदेव के चरण कमलों में दण्डवत प्रणाम करके मण्डल की रचना करनी चाहिए। बाहर की ओर त्रिकोण वत और चतुरस्र क्रम से प्रारम्भ कर 'ॐ अर्चन' इस मन्त्र से पीठ को धारण कर शंख का पूजन करे। शुद्ध एवं सुगन्धित जल को प्रणव से अभिमन्त्रित कर गन्ध-पुष्पादि से 'ॐ कार' का पूजन करना चाहिए तथा धेनु मुद्रा प्रदर्शित

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

करनी चाहिए तथा अस्त्र मन्त्र से शंख मुद्रा प्रदर्शित करनी चाहिए।

इसके पश्चात तीन बार प्राणायाम करे तथा विनियोग बोले। इस सौर मन्त्र (सूर्य मंत्र) के वेद भाग ऋषि, छन्द गायत्री, देवता सूर्य हैं। हं, ह्री, ह्रू, ह्रै, ह्रौं, हः इन छः बीजों से करन्यास हृदयादि न्यास करना चाहिए। न्यास के पश्चात अस्त्र मन्त्र से अग्निकोण के कमल से लेकर पूर्व तक अर्चन करना चाहिए, कालाग्नि, रुद्र, आधार शक्ति, अनन्त, पृथ्वी, रत्नद्वीप, संकल्प, वृक्ष का बगीचा, मणिमय गृह। धर्म, ज्ञान, वैराग्य और ऐश्वर्य इन चारों का तथा अधर्म, अज्ञान, अवैराग्य, अनैश्वर्य का अग्निकोण में पूजन करना चाहिए।

माया से नीचे के भाग का तथा विद्या से ऊपर के भाग का आच्छादन करना चाहिए, फिर रज, तम का विधिपूर्वक पूजन कर सौर नामक योग पीठ की पूजा करनी चाहिए।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

प्रतिमा को सिंहासन पर मूल मन्त्र से स्थापित करके मूल मन्त्र से ही प्राणवायु को मुलाधार में रोक कर आसन पर विराजमान हो आधार-शक्ति को पिंगला नाड़ी से प्रभावित करके जगाना चाहिए, वहां मण्डल में विराजमान प्रकाशयुक्त अरुण देहधारी भगवान शिव को पार्वती सहित पुष्पांजलि समर्पित करनी चाहिए। भगवान शिव ने रुद्राक्षमाला धारण की हुई हैं, पाश, खट्वांग, अंकुश, शंख आदि हाथों में धारण किये हुए हैं तथा चार मुख और बारह नेत्र वाले हैं ऐसा ध्यान कर उनके हृदय कमल में सर्वप्रथम प्रणव का उद्धार कर 'हं, ह्रीं हं सः' इस मन्त्र के प्रकाशाधिकारी सूर्यदेव का आवाहन करता हूं कहकर अन्त में नमः लगाकर उनका आवाहन करना चाहिए यथा 'ॐ ह्, ह्रीं, हं सः' सूर्यायनमः आवाहनम् समर्पयामि । इसके पश्चात मुद्रा बना कर दिखानी चाहिये तथा हं ह्रीं आदि छः बीज

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

मन्त्रों से न्यास करना चाहिए।

संकल्प करके पंचोपचार से तीन बार पूजा करके हे महेशानि ! पद्म केसरों और छः अंगों में यजन करना चाहिए। अग्नि, ईश्वर, राक्षस, वायु आदि चारों की क्रम से दूसरे आवरण में पूजा करनी चाहिए। आदित्य, भानु, रवि, भास्कर क्रम से पूर्व से लेकर उत्तर तक के कमल दलों के मूल में पूजा करनी चाहिए। तीसरे आवरण में सूर्य, ब्रह्मा, विष्णु और ईशानादि का क्रम से यजन कर पूर्वादि दल के मध्य से चारों ओर शेष आठ ग्रहों सोम, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनैश्चर, राहु एवं केतु का यजन करना चाहिए। अथवा दूसरे आवरण में बारह आदित्यों का यजन कर तीसरे आवरण में बारह राशियों का पूजन करे।

सप्त सागर, भगीरथ, गंगा तथा बाहर

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

में देवता, ऋषि, गन्धर्व, पन्नग, अप्सरा, यक्ष

यातुधान, सप्तछन्द आदि का पूजन करे। इस प्रकार दिवाकर की तीन आवरणों में पूजा करके सावधानी पूर्वक चतुरस्र मण्डल की रचना करनी चाहिए। एक ताम्र पात्र ले (जिसमें एक किलो पानी आ जाये) उसे मूल मन्त्र से स्थापित कर उसमें गन्ध युक्त जल भर दे तत्पश्चात् जंघाओं के बल बैठकर उस ताम्र पात्र को हाथों में लेकर भुक्ति-मुक्ति प्रदाता सूर्य मन्त्र का उच्चारण करके सूर्य देव को अर्घ्य प्रदान करे। अर्घ्य देकर इस प्रकार प्रार्थना करे—सिन्दूर के तुल्य रक्त वर्ण वाले, सुन्दर मण्डल पर सुशोभित, हीरे-माणिक आदि के आभूषणों से आभूषित आपको मैं नमस्कार करता हूँ। कमल के समान नेत्रों वाले, सकल भू, ब्रह्मा, इन्द्र और नारायण के चरण, आपको मेरा नमस्कार है। रक्त वर्ण का सुगन्धित जल, कुंकुम, कुशा, पुष्प आदि सब ताम्रपात्र में डालकर आपको अर्घ्य समर्पित

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

करता हूं भगवान् ! आप मुझ पर प्रसन्न हों।

इस प्रकार भुवन भास्कर को अर्घ्य दे और आगे लिखे अनुसार बोल कर सावधानी पूर्वक 'समस्त लोकों के आदि कारण भूत भगवान शिव को जगदम्बा तथा गणों के समेत मेरा नमस्कार है' रुद्र, ब्रह्मा, विष्णु एवं सूर्य स्वरूप आपको सादर नमस्कार है, नमस्कार करे। तदनुपरान्त अपने आसन पर स्थिर हो ऋषि आदि का स्मरण कर जल से अपने हाथों को शुद्ध करे। पूर्व में कही गई विधि से भस्म को पुनः धारण कर करन्यास, अंग न्यास करना चाहिए। इसके पश्चात् श्री गुरुदेव के चरणों में दण्डवत कर पंचोपचार पूजन 'ॐ गुरवे नमः' बोल कर करे।

दाहिने कन्धे पर सत्य मुद्रा से गुरु, बाएं कन्धे पर गणपति, दोनों जंघाओं में क्रमशः दुर्गा देवी एवं क्षेत्रपाल तथा हृदय में परमात्मा का न्यास करे। 'ॐअस्त्राय फट्' का उच्चारण

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

कर अंगुलियों से कुहनी पर्यन्त हाथ फिराये। इसके बाद अपनी रक्षा के लिए अपसर्पन्तु इत्यादि मन्त्र को बोलकर अपने चारों ओर काले तिल और यव छिड़क ले तथा भूमि पर तीन बार पग प्रहार कर समस्त दिशाओं के विघ्नों को रोकने के लिए मूल मन्त्र का उच्चारण करते हुए दशों दिशाओं में चुटकी बजायें। प्राण वायु को स्थिर कर हंस मन्त्र का जाप करते हुए हृदय में स्थित चैतन्य जीव को सुषुम्ना नाड़ी से मिला दे, इस प्रकार महापद्म में विराजमान परमेश्वर का ध्यान करना चाहिए।

भूत शुद्धि करने के लिए रेचक आदि क्रम से सावधान होकर प्राणायाम करे तथा ब्रह्मारन्ध्र तक जाने वाली कुण्डली को जगावे, फिर जहां से चन्द्रमण्डल की धारा निकलती है वहां द्वादश कमल और सहस्र कमल में उसे ले जा, शरीर को उसमें स्नान करा कर शुद्ध करे

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

तथा अपने हृदय कमल में 'मैं ही वह हूँ' ऐसी

भावना करे। आत्मा के द्वारा आत्मा का अमृतीकरण करके संसृति धार से मन से अन्त की मात्रा को प्रणव से स्फुटित करके उस कथित मात्रा को वहिर्भाग में स्थित करे। इसके पश्चात प्राण को रोककर चित्त में भगवान शंकर का ध्यान करते हुए मात्सर्य का त्याग करके न्यास करे।

विनियोग बोले, प्रणव के ब्रह्मऋषि, देवी गायत्री छन्द, सदा शिव परमात्मा देवता, अकार बीज, उकार शक्ति, मकार कीलक है तथा मोक्ष प्राप्ति के लिए इसका विनियोग किया जाता है। हे देवी! दाहिने हाथ के अंगुष्ठ से प्रारम्भ करके बायें हाथ की कनिष्ठका अंगुली तक क्रम से न्यास करना चाहिए। ओंकार, उकार और बिन्दु के सहित मकार तथा अन्त में नमः पद जोड़ कर न्यास एवं हृदयादि न्यास करे। सर्वप्रथम अकार का उद्धार कर ब्रह्मात्मा का उच्चारण करे यथा 'अब्रह्मात्मने

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

नमः' इस प्रकार चतुर्थी विभक्ति के एक वचन के अन्त में नमः पद जोड़ ले। उकार विष्णु के सहित शिरोभाग में तथा मकार को रुद्र सहित शिखा पर विनियोग करे।

इस प्रकार क्रम से कह कर कवच का पाठ कर, अंगन्यास करे। प्रणव का ध्यान करके परमात्मा का बोध कराने वाले हंस मंत्र का न्यास करना चाहिए। गुरु, गणेश, स्कन्द नन्दीश्वर आदि को पूजा करे तथा भगवान शिव का ध्यान इस प्रकार करे कि भगवान शिव का स्वरूप पांच मुख वाला, दस भुजाओं वाला, मस्तक पर बाल चन्द्रमा शोभायमान हैं, कमल की पंखड़ियों जैसे तीन नेत्र हैं पूर्व दिशा की ओर वाला मुख परम सौम्य तथा कान्ति सूर्य के तुल्य है, दक्षिण दिशा की ओर वाला मुख नील जैसी कान्ति वाला, उत्तर की ओर वाला मुख मूंगे की कान्ति वाला है तथा नील वर्ण की भवें (पलकें) हैं, पश्चिम दिशा वाला

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

मुख चन्द्रमा की कान्ति शिव के पंचम मुख की कान्ति स्फटिक के समान उज्जवल है, दक्षिण भाग में शूल, परशु, वज्र और खड्ग हैं और बाईं ओर नाराच, घराटा, पाश और परशु हैं। जो जानु तक निवृत्या नाम की कला, नाभि में प्रतिष्ठित नाम की कला, कराठ में विद्या नाम वाली कला, ललाट पर शान्ता नाम वाली कला तथा इससे ऊपर शान्त्यातीत पराकला से युक्त तथा पांच स्थान में व्यापक होने के कारण निवृत्ति आदि पांच कलामय शरीर है। ईशानदेव मुकुट, पुरुष पुरातन मुख, अघोर हृदय, वामदेव गुह्य तथा सद्योजात चरण हैं इस प्रकार अड़तीस कलाओं से युक्त उनकी मूर्ति है। ईशान मातृका पूर्ण है तथा पंच ब्रह्ममय तथा षडाक्षर हैं।

इसके वाम भाग में मनोन्मनी गौरी स्थित है इस प्रकार ध्यान करना चाहिए। आवाहन करके नमस्कार करनी चाहिए। भगवती गौरी

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

विकसित कमल के तुल्य कान्ति वाली हैं, उनका पूर्ण चन्द्रमा की नाईं मुख है, नील वर्ण बाल कुंचित केशों से सुशोभित हैं, नील कमल के वर्ण वाले अर्ध चन्द्र को मस्तक पर धारण किये हैं, उनके निस्तीर्ण, घने, ऊंचे और स्निध-पयोधर हैं, सूक्ष्म कोटि तट वाली परिपुष्ट श्रोणिवाली, बारीक तथा पीतवर्ण के वस्त्र धारण करती है, समस्त आभूषण धारण किए हैं तथा ललाट पर शुभ्र तिलक लगा है। अद्भुत पुष्पों से शोभायमान केश हैं। समस्त गुणों से परिपूर्ण तथा लज्जा के कारण अपना मुख नीचे की ओर करने वाली हैं अपने दाहिने हाथ में स्वर्ण का कलश क्रीड़ा के लिए, लिये हुए हैं तथा दूसरा हाथ सिंहासन पर रखे हैं।

हे पार्वती ! इस प्रकार मेरा तुम्हारे सहित ध्यान करके शंख के जल से स्नान कराके जो ओंकार से प्रेक्षण करता है उसे ही सिद्धि मिलती है 'भवे भवेनाति भवे भवस्व मां भवोद्भ-

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

भवाय नमः' मन्त्र से पाद्य 'वामदेवाय नमः' से आचमन 'ज्येष्ठाय नमः' से शुभ्र वस्त्र 'श्रेष्ठाय नमः' से यज्ञोपवीत, 'रुद्राय नमः' से पुनः आचमन, 'कालाय नमः' से गन्ध, 'कलविकरणाय नमः' से पुष्प, 'बलाय नमः' से धूप, 'बलप्रमथनाय नमः' से दीप दर्शन करावे। ब्रह्मषडंग और मात्रा के सहित प्रणव शिव और शक्ति सहित क्रम से मुझे और तुम्हें मुद्रा दिखाये। सर्व मेरा पूजन करके तत्पश्चात् तुम्हारा पूजन करे।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

ऋषियों ने पूछा—हे वायुदेव। जिस कर्म से अपरोक्ष ज्ञान की प्राप्ति होकर जीव को मोक्ष मिलता है वह कौनसा साधन है ?

वायुदेव ने उत्तर दिया—शिव की उपासना ही श्रेष्ठ साधन है, यही जीव का परम धर्म है, इसी से मोक्ष नायक शिव अपरोक्ष हो जाते हैं। यह कर्म पांच खराडों में होने से पांच प्रकार का (क्रिया, जप, तप, ध्यान और ज्ञान) कहा गया है। इन श्रेष्ठ अनुष्ठानों सहित किया धर्म अपरम कहा गया है। वेद ने धर्म बतलाये हैं एक परम और दूसरा अपरम। वेद धर्म के विषय में एकमात्र प्रमाण है। पाशुपत योग तक के परम धर्म उपनिषद भाग में और योगादि अपरम धर्म श्रुतियों से बताये गए हैं। परम धर्म में मायापाश से मुक्त आत्मा का

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

अधिकार है जबकि योगादि अपरम धर्म में सबका समान अधिकार है।

अपरम धर्म ही परम धर्म का साधन है इसमें भी शिव धर्म श्रेष्ठ है। धर्म शास्त्रों में इसकी पुष्टि की गई है, शैव शास्त्रों में इसका सांगोपांग वर्णन है। शैव शास्त्र दो प्रकार (श्रुति और स्मृति) का है। वेदशास्त्र श्रोत्र तथा स्वतन्त्र दो प्रकार का है। तन्त्र मार्ग पहले दस प्रकार का था फिर अठारह प्रकार का हो गया। श्रुति पाशुपत ज्ञान को सर्वश्रेष्ठ ज्ञान बतलाती है। भगवान शिव हर युग में योगाचार्य का अवतार लेकर शिष्यों को जो-जो उपदेश देते रहे हैं उसको पशुपत व्रतधारी संहिताओं को प्रकट करने वाले रुद्र, दधीच, उपमन्यु, अगस्त आदि ऋषियों एवं उनकी संतति ने उसी को संक्षिप्त रूप में बतलाया है। उन्होंने चार प्रकार का परम धर्म कहा है, उसमें पाशुपत को सर्वश्रेष्ठ बतलाते हुए शिव

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

से साक्षात्कार का एकमात्र साधन कहा है। ब्रह्मा जी को पाशुपत ज्ञान है वह शिव के द्वारा ही उन्हें कहा गया है। उस योग से शैवी बुद्धि उत्पन्न होती है तथा इसके कारण शीघ्र ही शिव की प्रसन्नता प्राप्त हो जाती है। उन्हीं के प्रसाद से परम योग प्राप्त होता है जो कि शिव से साक्षात्कार का हेतु है और शिव के साक्षात्कार होने पर संसार में आवागमन से जीव छुट जाता है।

जीव जब मुक्त होता है तो शिव के समान हो जाता है। ब्रह्मा जी ने इनके शिव, महेश्वर, रुद्र, ब्रह्म, पितामह, सर्वज्ञ, संसारभिषक तथा परमात्मा ये आठ रूप अलग बतलाये गए हैं, ये आठों नाम शिवजी के नित्य प्रतिपादक हैं, शिव, महेश्वर, रुद्र, ब्रह्म, सर्वज्ञ ये पांचों तथा संसार वैद्य, परमात्मा और पितामह तीनों उपाधि ग्रहण करने से शिव के संज्ञक बन जाते हैं। पद नित्य है किन्तु पद ग्रहण करने वाले

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

अनित्य हैं, पदों की परवृत्ति में पद वाले मोक्ष को प्राप्त होते हैं। आदि के पांचों नाम आत्मान्तर वाले तथा अन्त के तीनों नाम माया वाले होते हैं इस प्रकार ये आठों उपाधियों से शिव का ही ग्रहण होता है।

अनादि गुण से प्राग भाव और स्वभाव से सम्बन्ध वाले परम परिशुद्धात्मा शिव ही कहे गए हैं। सम्पूर्ण गुणों की खान कल्याण कर्त्ता ईश्वर को ही शिव तत्त्व वेत्ताओं ने शिव संज्ञा दी है। प्रकृति तेईस तत्त्व से परे है और प्रकृति से भी परे वह पुरुष कहा गया है जो कि पच्चीसवां है। जो वेद, उपनिषदों में अधिष्ठित है, प्रकृति में लीन होकर भोगार्थ प्रतिष्ठित होता है, जिसे वाच्य, वाचक भाव से वेदों में प्रणव कहा गया है। प्रकृति में लीन हुए से परे महेश्वर हैं प्रवृत्ति और प्रकृति तथा मायात्मक महेश्वर हैं। नारायण पुरुष माया को विक्षुब्ध करने वाले हैं वे महेश्वर से सम्बन्धित

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

हैं तथा वह कालात्मा-परमात्मा स्थूल-सूक्ष्म कहे जाते हैं।

रुद्र दुःख और दुःख के कारण को नष्ट करने से रुद्र कहे गये हैं, महापुरुषों का कथन है कि वही शिव हैं। जब शिव अपने तत्व से भूमि पर्यन्त देहादि और घटादि को व्याप्त करके अधिष्ठित होते हैं तो रुद्र कहे जाते हैं। सूर्यात्मा, शिव के पितृ भूत, सबके पिता होने के कारण पितामह कहे गये हैं। जैसे चतुर वैद्य रोगों का निदान करके औषधि की व्यवस्था करता है वैसे ही प्रकृति के कर्म ज्ञान रूप उपायों से अपने जनों को कर्मानुसार लय, मोक्ष या भोग का अधिकारी बनाता है। इस प्रकार संसार के क्लेशों का नाश करने वाला होने से संसार वैद्य तत्व वेत्ताओं द्वारा कहे जाते हैं। शब्दादि विषयों का ज्ञान ज्ञानेन्द्रिय तथा कर्मेन्द्रिय में तीनों कालों में होने वाले स्थूल तथा सूक्ष्म भाव को जीव तत्व के मल

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

के कारण प्राणी नहीं जान पाता और सभी प्रकार का ज्ञान होने से (अमुक वस्तु किस प्रकार की है) बिना यत्न के शिव जान लेते हैं इसलिए उन्हें सर्वज्ञ कहा जाता है।

इस प्रकार आचार्य गुरु की कृपा से इन आठ नामों को अर्थ सहित जाने। पूर्व के पांच नामों से कल्प ग्रन्थियों का क्रमपूर्वक छेदन करे। इससे हृदय, कण्ठ, तालु, भ्रू के मध्य ब्रह्मरन्ध्र से युक्त कला ग्रन्थि रूप भूतेन्द्रिय-वासना मनोबुद्धि-कर्मवायु और अविद्या के आठों आकारों का भेदन कर सुषुम्ना नाड़ी के मध्य से द्वादश दल वाले हृदय कमल में स्थित चन्द्रमा के ऊपर शिव प्रभाव को ले जाये तथा इस कार्य में यथायोग्य लय होकर शक्ति को अमृत धार से सींचे तथा अपने देह में स्थित आत्मा को हृदय में उतार कर भगवान शिव के दर्शन करे।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

ऋषियों ने कहा—हे प्रभो! हमें पाशुपत

व्रत का विधान जानने की इच्छा है जिसे करके ब्रह्मादिक भी पाशुपत पद को प्राप्त हो गये।

वायुदेव ने कहा—ऋषियों! मैं तुम्हें सब पापों को नष्ट करने वाले पाशुपत व्रत को कहता हूँ ध्यान पूर्वक सुनो! इस व्रत का उत्तम समय चैत्र मास तथा उत्तम स्थान उपवन बतलाया है। चैत्र मास की शुक्ल त्रयोदशी को प्रथम स्नान करके हवन करे, तत्पश्चात अपने गुरु का पूजन कर उनसे यह व्रत करने की आज्ञा ले। गुरु आज्ञा प्राप्त होने पर श्वेत वस्त्र, श्वेत यज्ञोपवीत, श्वेत माला तथा श्वेत चन्दन धारण करे तथा उत्तराभिमुख, या पूर्वाभिमुख हो तीन प्राणायाम करे तथा देव का ध्यान करे और संकल्प करे कि मैं दीक्षित होकर यह कर्म करता हूँ। मैं यह व्रत आजीवन, बारह वर्ष, छः वर्ष, तीन वर्ष या एक वर्ष, महीना या दिन करूंगा ऐसा संकल्प ले।

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

शिवाग्नि को विधिपूर्वक ग्रहण कर व्रत

समिधा और चरू से यथा विधि हवन करे, पूर्णाहुति के पश्चात तत्व शुद्धि के लिए पंचाक्षर मन्त्र से हवन करे तथा ध्यान करे कि यह तत्व मेरे देह के लिए शुद्ध हो पंचभूत तन्मात्रा और पाँच कर्मेन्द्रिय, पांचज्ञान्द्रिय त्वचा आदि सात धातु तथा प्राणादि वायु, मन, बुद्धि, अहंकार, गुण, प्रकृति, पुरुष, राग, विद्या, कला, नियत, माया, शुद्ध, विद्या, महेश्वर शिव तत्व में लीन हो गया है।

इस प्रकार मंत्र युक्त हवन करने वाला पापों से छूट जाता है तथा शिव का अनुग्रह प्राप्त कर ज्ञानी हो जाता है। हवन के पश्चात गोवर लाकर उसका पिराड बनावे मंत्र जप कर उसे सूंघे और अग्नि में रख दे, उस दिन हविष्यान्न का ही भोजन करे। चतुर्दशी के दिन प्रातःकाल नित्य कर्म से निवृत होकर सारे दिन बिना आहार के रहे तथा पूर्णिमा

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

को (पर्व के दिन) सब नित्य कर्मों को ...

हवन करे तथा यत्नपूर्वक रुद्राग्नि को शान्त कर भस्म ग्रहण करें, फिर पैरों को धोकर दो आचमन करे तथा अपने देह पर हवन की भस्म को मले—ॐ अग्निरिति भस्म इत्यादि अथर्व वेद के छः मंत्रों से भस्म को अभिमंत्रित करके ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः आदि मंत्रों से लेकर पैरों तक भस्म मले।

प्रणव सहित शिव मंत्र का उच्चारण करे और ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कहकर मस्तक पर त्रिपुण्ड लगाकर शिव भाव को प्राप्त हो शैव योग का आचरण करे। तीनों संध्याओं में इस मोक्ष और भोग प्रदान करने वाले तथा पशु-वृत्ति के नाशक इस परम पावन व्रत का अनुष्ठान करें। पाशुपत व्रत से अपने पशुत्व को समाप्त कर लिंग में भगवान शंकर का पूजन करे, पूजा में विल्व पत्र श्वेत और लाल कमल नील और दूसरे सुगन्धित पुष्पों का प्रयोग करे। श्रेष्ठ विल्व पत्र-दुर्वांकुर और अक्षतों से

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

विधिपूर्वक पूजा करे। धूप, दीप, नैवेद्य आदि अर्पित करके मंत्र जप में प्रवृत हो।

व्रती मनुष्य को चाहिए कि केवल दुग्ध-पान करे या भिक्षान्न का आहार ले किन्तु एक बार ही आहार ग्रहण करे, रात्रि में भूमि शयन करे। इस व्रत की समाप्ति तक ब्रह्मचर्य पूर्वक रहे। आर्द्रा नक्षत्र, रविवार, अमावस्या, पूर्णिमा आदि को उपवास रखे। क्षमा, दया, दान, अहिंसा आदि का पालन करता हुआ सदैव शिव का ध्यान करता रहे। तीनों काल स्नान करे जल स्नान में असमर्थ होने पर भस्म स्नान अवश्य करे। किसी अमंगल कृत्य को न करे यदि प्रमादवश ऐसा हो जाए तो (अमंगल कृत्य छोटा है—या बड़ा इसका विचार किए बिना) पूजन-हवन आदि कर्मों से उसका पूर्णतया प्रायश्चित करे। आचार्य की आज्ञा से पूर्व या उत्तर को मुख करके कुशा के आसन पर बैठे तथा कुशा हाथ में लेकर प्राण-अपान वायु को

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

रोक कर सामर्थ्यानुसार पंचाक्षरी मंत्र का जप करे शिव का ध्यान करे तथा जोड़कर निवेदन करें–

हे भगवान! अब आपकी आज्ञा से इस व्रत को छोड़ता हूँ। यह कहकर लिंग का विसर्जन करे। विधि पूर्वक आचमन कर मूल मंत्र का जप करे। जो इस व्रत को सावधानीपूर्वक मृत्यु पर्यन्त करता है उसे नैष्ठिक व्रती कहते हैं। यही महाव्रती तपस्वियों में श्रेष्ठ है। कामना रहित रहकर जो इह व्रत को करता है उसके समान दूसरा कोई नहीं है।

१. रामायण रसामृत	६५) रु०	५. शिव कथा	५) रु०
२. रामायण कथामृत	३५) रु०	६. राम हनुमान मिलन	३)
३. भक्ति का मार्ग	४) रु०	७. बापूजी का जीवन प०	२)
४. केवट के राम	२) रु०	८. राम स्तुति	२) रु०

पुस्तकें मिलने का पता –

पूजा प्रकाशन

पुल कुतुब रोड (सदर स्टेशन के बराबर में) दिल्ली-६

मुद्रक – ... प्रिंटिंग प्रेस, बाजार सीताराम, दिल्ली-६

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

पूज्य पाद श्री रामचन्द्र केशवजी डोंगरे महाराज की

अमृत वर्षा करने वाली पुस्तकें अब बड़े-बड़े अक्षरों में शुद्ध व सरल हिन्दी भाषा में "पूजा प्रकाशन, पुल कुतब रोड़ सदर बाजार दिल्ली-६" ने बढ़िया कागज व रेग्जीन की जिल्दों में आपकी सेवा में पेश की हैं। डोंगरे महाराज की निम्न पुस्तकें हमारे द्वारा प्रकाशित हैं।

१. श्रीमद्भागवत रहस्य	मूल्य ४०) रु०
२. श्री तत्वार्थ रामायण	मूल्य ४०) रु०
३. संत वाणी	मूल्य १०) रु०
४. रामायण रहस्य	मूल्य ८) रु०
५. हरि का मार्ग	मूल्य ६) रु०
६. भागवत प्रसादी	मूल्य ६) रु०
७. ज्ञान निर्झर	मूल्य ४) रु०
८. आनन्द धारा	मूल्य २) रु०
९. पाप प्रभु प्रायश्चित	मूल्य २) रु०
१०. रामायण कथासार	मूल्य २) रु०
११. रामायण प्रसादी	मूल्य ६) रु०
१२. अमृत बिन्दु	मूल्य १) रु०

पुस्तकें मंगाने का पता—

गर्ग कम्पनी बुकसेलर

(सदर स्टेशन के बराबर में)

पुल कुतब रोड, सदर बाजार दिल्ली-६

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

जरूरी बातें

C-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGango

0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGan

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

C-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangot

हमारे धार्मिक प्रकाशन

घर बैठे वी. पी. पी. द्वारा मंगायें



सचित्र 80/=

रामायण

आठों काण्ड
भाषा टीका सहित



सचित्र 70/

महाभारत



सम्पूर्ण 30/=

सुखसागर



20/=

श्री मद्भगवद्गीता



75/=

श्री शिवमहापुराण



20/=

श्री दुर्गासप्तशती

भाषा टीका सहित



काशक: प्रकाशन

पुल कुतब रोड (सदर बाजार) दिल्ली-6

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri